
कुशवाहा कान्त
पराया

पराया



चिल्लाना चाहो तो चिल्लाओ....लोग आकर देखें कि एक विधवा अपने देवर के साथ इतनी रात को बन्द कमरे में क्या कर रही है ! उनसे सब कुछ बता दूँगा भाभी ! तुमने हमको बुलाया था अपनी हसरत मिटाने के लिए, इसे सुनकर लोग बड़े खुश होंगे। माँ तो तुम्हें देवी ही समझेंगी !



स्व० कुशवाहा कान्त का अत्यन्त रोमांटिक उपन्यास !

मूल्य-एक रुपया

पराया



कुशवाहा कान्त

मामूली-सी खटके की आवाज हुई। पहरेदार ने सर उठाकर देखा, कुछ ही दूर पर एक अस्पष्ट-सी छाया आधी रात के अँधेरे में खड़ी थी।

शहर का वह बाहरी हिस्सा था। बहुत ऊँची, पुख्ता चहारदीवारी के अन्दर खुशनुमा बाग के बीच तीन छोटे-छोटे महल बने थे, जिसमें से एक के दरवाजे पर यह लम्बा-चौड़ा जवान पहरेदार उपस्थित था। चारों ओर सन्नाटा था। अँधेरी रात जुगनुओं की चमक और तारों की टिमटिमाहट भी निगल गई थी। कुत्ते भूंक रहे थे, परन्तु अन्धकार में अपना-पराया पहचानने को फुर्सत नहीं थी। एक कर्त्तव्य निभाने को लगन लेकर ही वे मनमाना शोर मचा रहे थे।

पहरेदार सजग हुआ। बगल में रखी बन्दूक उठाकर उसने हाथ में ले ली, फिर उस स्पष्ट छाया को ओर मुंह करके धीरे से पुकारा—'कौन है ?'

'... ...' कोई आवाज नहीं आई, परन्तु वह छाया धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी।

'वहीं रुको' पहरेदार ने छाया की ओर बन्दूक तानकर रोबीली आवाज में कहा—'कौन हो तुम ?'

'मैं हूँ !....' एक पतली-सो मधुर आवाज हवा पर तैरती हुई पहरेदार के कानों से जा टकराई।

स्वर सुनते ही पहरेदार की बन्दूक नीची हो गई। तना हुआ हट्टा-कट्टा शरीर झुककर नम्र हो गया। आगे बढ़कर उस छाया के समीप जा खड़ा हुआ।

छाया एक कीमती शाल में लिपटी थी परन्तु उसका मुख उस अँधेरी रात में भी चाँद की हलकी आभा की तरह चमक

रहा था। पहरेदार ने छाया के सामने सर झुकाया फिर अदब के साथ ताज्जुबभरी आवाज में बोला—'हुजूर आप ?'

'हाँ वारिस ! कोई नई बात ?....' स्वर किसी युवती का था, जिससे खूबसूरती और रोब टपकता था।

'कत्तई नहीं हजूर ! खैरियत तो है कुँवरानी साहिबा ?'

'नहीं वारिस !...आज फिर कोई शरारत होने वाली है। तुम होशियार रहना..."

'या खुदा ! भले आदमियों के भी कितने दुश्मन होते हैं !.... मैं होशियार हूँ हजूर ! वारिस के चार पुश्तों ने आपका नमक खाया है। उसकी अदायगी के लिए वारिस के खून का एक-एक कतरा हाजिर है कुँवरानी साहिबा ! आजकल दुश्मन भी कितने बेआबरू हो गये हैं कि रात के वक्त चोरी-चोरी वार करते हैं। आमने-सामने की लड़ाई हो तब वारिस का हौसला देखें सरकार !...बत्ती जला दूँ क्या ? .."

'नहीं, दुश्मन होशियार हो जायँगे....' छाया ने कहा—'मैं कुँवर साहब के कमरे में जाती हूँ। उन्हें भी होशियार करना है....'

'खुदा कसम हजूर ! कुँवर साहब भी बेहद लापरवाह हैं। सीधे-भले आदमी बेचारे, समझते हैं कोई उनसे क्यों दुश्मनी करेगा ?...आज का इन्सान तो सरकार, चीटियों का भी दुश्मन बन गया है, फिर कुँवर साहब तो इतनी बड़ी रियासत के मालिक हैं। खुदा उनको जान सलामत रखे...'

'चुप रहो वारिस !' कुँवरानी ने उसे चुप करा दिया—'धीरे से बोलो, वह सामने क्या है ?'

वारिस ने अंधेरे में उस ओर देखा। बाग के पेड़ों की छाया में दूर पर कोई काली आकृति धीरे-धीरे सावधानी के साथ महल की ओर बढ़ रही थी।

वारिस ने बन्दूक सीधी की, मगर कुँवरानी ने रोक

दिया—'बन्दूक रख दो वारिस ! हमें उसे जिन्दा पकड़कर रानी साहिबा के आगे पेश करना है। मैं कुंवर साहब के पास जाती हूँ...तुम उधर चहारदीवारी के पास छिप जाओ। कोई भागने लगे तो पकड़ लेना....'

'जो हुक्म !...मगर आप अकेली हैं हजूर !...' क्या रानी साहिबा के महल में इत्तला कर दूँ ?'

'नहीं, उन्हें आराम करने दो....' कुंवरानी ने कहा—'होशियार रहो, मैं जाती हूँ....'

कुंवरानी घूम पड़ी और तेजी से महल के भीतर की ओर चली। वारिस चौकन्ना होकर चारों ओर देखने लगा।

चहारदीवारी के अन्दर बने हुए दो अन्य महल अँधेरे में मुँह छिपाये खामोश खड़े थे। कहीं से भी किसी के जागने की आहट नहीं आ रही थी। पेड़ों पर पक्षियों के पर फटफटाने की आवाज अवश्य आ जाती थी कभी-कभी, जो उस सुनसान रात्रि में बड़ी भयानक लगती थी।

कुंवरानी महल के आँगन में पहुँच गयी, उसी समय महल के पीछे से एक हलकी खड़खड़ाहट की आवाज आई। कुंवरानी आगे बढ़कर एक बन्द दरवाजे पर आ खड़ी हुई।

धीरे से ढकेलकर दरवाजा खोला। भीतर अन्धकार था। टटोलती हुई वह आगे बढ़ी।

'कौन है ?....' अन्धकार में ही किसी पुरुष का निद्रालु स्वर आया।

'मैं हूँ...' कुंवरानी सोने वाले की चारपाई के पास पहुँच गई थी।

'कुंवरानी तुम ?....क्या है....नींद नहीं आ रही है क्या ?'

'आप जाकर मेरे कमरे में सो रहिये, ललित के पास....'

'क्यों ? तुम्हारा स्वर घबराया हुआ है....क्या बात है कुंवरानी, ललित तो ठीक है न ? तीन साल की उम्र हुई उसकी

मगर बीमार तो वह कभी नहीं हुआ....'

'बेटे की फिक्र छोड़िये कुँवर साहब, अपनी फिक्र कीजिये.... समय कम है। आप चुपचाप मेरे कमरे में जाकर सो रहें। बाद को मैं सब कुछ बता दूँगी....'

तभी पुनः कुछ खड़खड़ाहट की आवाज आई। कुँवरानी ने कुँवर का हाथ पकड़कर कमरे से बाहर कर दिया। बोली—'जाओ जल्दी से....''

जवानी की कच्ची नींद से उठे कुँवर ने अधिक समझने की कोशिश नहीं की। वह चुपचाप चला गया। उसके जाते ही कुँवरानी ने उसका बिस्तर ठीक किया ताकि देखने वाला समझे कि कोई आराम से मीठी नींद सो रहा है। इसके बाद वह पलङ्ग के नीचे छिपकर, साँस रोक बैठ गई।

बाहर किसी का पदचाप सुनाई पड़ा, जैसे कोई दबे पाँव उस कमरे की ओर आ रहा हो। कुँवरानी सजग हो गई।

उसी समय भिड़काया हुआ दरवाजा धीरे से खुल गया। पलङ्ग के नीचे से कुँवरानी ने प्रगाढ़ अन्धकार के बीच खड़ी हुई एक काली परछाईं देखी। धीरे-धीरे वह परछाईं आगे बढ़ी। उसके हाथ का लम्बा छुरा एक क्षण के लिए चमक उठा। परछाईं पलङ्ग के पास आ खड़ी हुई। उसका छुरा ऊपर उठा....मगर नीचे नहीं गिर सका कि उसके पहले ही कुँवरानी ने पलङ्ग के नीचे से अपना हाथ बढ़ा उसका पैर पकड़ लिया।

आक्रमणकारी घबड़ा गया और सँभल न सकने के कारण धड़ाम से गिर पड़ा। मगर दूसरे ही क्षण कुँवरानी की नाक पर पैर की एक गहरी चोट लगी और उनके हाथ ढीले पड़ गये। उसने उठकर भागते हुए आक्रमणकारी के पैरों की आवाज सुनी। वह तेजी से दौड़कर बत्ती जलाई परन्तु दुश्मन तो भाग चुका था।

"क्या हुआ कुँवरानी ? हुआ क्या ?...' धमधमाहट की

आवाज सुनकर कुँवर अचलनारायण आ गया था—'तुम्हारी नाक से खून बह रहा है कविता ! कैसे चोट लग गयी ! यह धमधमाहट की आवाज कैसी थी !....'

'खैरियत हुई कि आप बच गये....' कुँवरानी बोली—'मेरी नाक से खून बहा तो बहा, आपकी छाती से बहता खून मैं न देख सकी...ईश्वर को धन्यवाद दीजिये...'

'क्या कहती हो तुम ! पचीस बरस की मेरी उमर हुई और हमारी-तुम्हारी शादी हुए पाँच साल बीत चुके, मगर एक दिन भी तुमने यह पहेली बुझाने की आदत नहीं छोड़ी....नाक का खून तो पोंछ लो....'

'आपसे कितनी बार कह चुकी कि अपनी हिफाजत का ख्याल कीजिए मगर आप तो कुछ सुनते ही नहीं।'

'अपनी हिफाजत मैं क्या करूँ ! सोने की अशर्फी तो हूँ नहीं कि चोरों का डर हो। चार साल पिताजी को स्वर्गवासी हुए हो गये। उनके बाद रियासत की मालकिन माताजी हैं। उन्हीं के कहने पर सारा काम करता हूँ मैं, मगर उन्होंने तो कभी मुझे अपनी जान की हिफाजत करने को नहीं कहा।'

'रानी साहिबा को कुछ मालूम हो तब तो आपकी हिफाजत का ख्याल उन्हें आये ? राजा साहब जीवित थे तब की बात और थी। रामगढ़ रियासत में कोई सर उठाने वाला नहीं था, मगर उनके मरते ही दुश्मनों ने पैर फैलाना शुरू कर दिया। कई बार आप मौत के मुख से बच चुके हैं, अब तो सँभल जाइये।'

'तो क्या आज रात मेरी जान लेने की कोशिश की गई थी ! ..' कुँवर ने आश्चर्य में भर कर पूछा।

'हाँ !....मुझे पता न लग जाता तो भगवान जाने क्या होता ? बाहरी दुश्मन हों तो उनसे बचाव भी हो सकता है।....'

'दुश्मनों से बचाव के लिए ही तो पिताजी ने शहर के नजदीक यह महल बनवाया था, सो भी एक नहीं तीन-तीन।

एक अपने लिए और एक मेरे लिए, एक छोटे कुँवर के लिए। चहारदीवारी एक और महल तीन—और हर महल पर बीसों पहरेदार....इससे बढ़कर और हिफाजत क्या हो सकती है? पिताजी मर गये तो क्या उनके नाम का दबदबा तो है ही?'

'राजा साहब के नाम का दबदबा बाहरी शत्रुओं को रोक सकता है।' कुँवरानी पलङ्ग पर बैठती हुई बोली—'बैठ जाइये आप भी...मगर घर के दुश्मनों का सामना तो स्वयं अपनी होशियारी ही कर सकती है...'

'घर के दुश्मन?...' कुँवर अपने सुन्दर चेहरे पर आश्चर्य का भाव लाकर बोला—'कौन!...'

'छोटे कुँवर!...' दबी जबान से कहा कुँवरानी ने।

'छोटे कुँवर! क्या कहती हो कुँवरानी तुम? चञ्चल तो अभी बच्चा है, मेरा छोटा भाई...'

'भाई तो है...' कहा कुँवरानी ने—'मगर सगा नहीं....'

'चुप रहो कविता!....हम दोनों के पिता एक ही थे। हम दोनों में एक ही खानदान का रक्त है...फिर चञ्चल क्यों मेरा सगा भाई नहीं है?'

'आप उसे सगा समझिये मगर वह तो आपको सौतेला ही समझता है। मैं जानती हूँ कि रानी साहिबा देवी हैं। वे अपने बेटे चञ्चल से बढ़कर आपको प्यार करती हैं और अपने बाद आपको ही रामगढ़ रियासत का मालिक बनाने का उनका इरादा है...यही बात चञ्चल को खटक रही है। वह आपको रास्ते से दूर हटाकर स्वयं मालिक बनना चाहता है। रानी साहिबा से उसने यह बात कही थी, परन्तु उन्होंने फटकार दिया। अब उधर से निराश होकर वह ऐसी चालें चल रहा है...'

'तुम बहुत बार मुझसे चञ्चल की शिकायत कर चुकी हो कुँवरानी! मगर मैं चञ्चल और माताजी में कोई परिवर्तन नहीं

देखता। माताजी मेरी अपनी माँ नहीं, फिर भी मुझे कितना चाहती हैं। तुम माताजी से ऐसी बातें मत कहना। सुनकर उन्हें बहुत दुःख होगा....'

'मैं रानी साहिबा से कभी कहूँगी भी नहीं....मगर आप सावधान रहें तो अच्छा...माताजी से सलाह करके चञ्चल की अब जल्द शादी कर दीजिये। अब सुनती हूँ, होटल और क्लब में घूमता रहता है। राजा के बेटे की इतनी स्वतन्त्रता अच्छी नहीं, बीस बरस का हो गया है अब...'

'बीस नहीं बयासी बरस का भी हो जाय तो भी हमारी नजरों में बच्चा ही रहेगा....' कुँवर हँसकर बोला—'छोटा है कुँवरानी ! तुम उसे ललित के स्थान पर रखकर देखो, कितना भोला लगता है !'

'आप समझते हैं कि मुझे चञ्चल की शिकायत करने की आदत पड़ गई है...' कुँवरानी के स्वर से पीड़ा टपक रही थी–'ललित जैसा मासूम होता तो उसे छाती का दूध न पिला देती तो कहते मगर साँप को अपनी छाती से लगाने की हिम्मत मुझमें नहीं....आप मेरे दुश्मन को भी भाई मान लें तो मैं उसे प्यार करने लगूँ, मगर आपको क्या कहूं जो अपने भाई की दुश्मनी को भी नहीं पहचान सकते ?'

'मैंने बहुत बार ध्यान दिया मगर चंचल में मैंने अपने प्रति तनिक भी उपेक्षा का भाव नहीं देखा..फिर कैसे मैं तुम्हारी बातें सच मान लूँ !'

'साँप का बदन बहुत मुलायम होता है कुँवर साहब ! काश, उसके दाँतों का जहर आप देख पाते !....लीजिये, ललित रोने लगा....अभी उसे लेकर आई....'

कुँवरानी चली गई और तुरन्त छोटे बच्चे को गोद में उठाये लौट आई।

'चुप हो गया !....' कुँवर बोला—'तुम्हारी गोद भी कैसी

है कि लोगो का रोना तक बन्द कर देती है।'

'चलिए, आप तो मजाक करते हैं....' कुंवरानी ने आँखों से तीर छोड़ते हुए कहा।

तभी बाहर से खटपट की आवाज आई और दौड़ता हुआ वारिस आ पहुंचा।

'क्या हुआ वारिसअली ?" कुंवर ने पूछा।

'आप बाखैरियत तो हैं हजूर! अल्लाह की रहमत...मैं तो रंजोगम से मुर्दा हो गया था गरीबपरवर!... दुश्मन हाथ में आकर निकल गया। महल से निकलते ही मैंने उसे पकड़ा मगर कमबख्त छुरे का वार कर भाग गया....'

'अरे, इसके कन्धे से तो खून निकल रहा है!' कुंवरानी घबराकर बोली।

'मेरा खून नहीं, आपका नमक निकल रहा है...' वारिस बोला—'थोड़ी-सी चोट है हजूर! दुश्मन का छुरा तेज था। खुदा करे मेरे कन्धे में घुसकर ही उसकी प्यास बुझ जाय और हुजूर का सीना सलामत रहे...मैंने उसका पीछा किया था सरकार! मगर हरामी का बच्चा छोटे कुंवर के महल के पास पहुँचकर ऐसा गायब हुआ कि उसकी बू तक नहीं मिली। छोटे कुंवर से दरियाफ्त किया तो वे बिगड़ पड़े....हुजूर मेरी गुस्ताखी माफ करें, दुश्मन जरूर छोटे कुंवर के महल में जा छिपा....'

'छोटे कुंवर के महल में ?...' धीरे से कहा कुंवर ने फिर कुंवरानी की ओर देखा।

'मैं रानी साहिबा की ड्योढ़ी पर भी इत्तला करता आया हूं....' वारिस ने कहा।

'उन्हें क्यों जगाने गया तू ?....'

'जगाता नहीं हुजूर! तो सबेरे रानी साहिबा सारी वारदात सुनकर मुझे ही डाँटने लगतीं, मैं जानता हूं न...खुदा बाखैर रखे रानी माँ को। गरीब-अमीर सब उनकी निगाहे-करम में

एक-सा हैं..."

'क्या है वारिस ?...."

सबकी निगाहें दरवाजे की ओर घूम गयीं।

मुख पर चालीस साल की गम्भीरता लिए सौम्य नारी मूर्ति खड़ी थी। ये थीं रामगढ़ रियासत की रानी और छोटे कुँवर चञ्चल नारायण की सगी माँ।

'मेरा बेटा तो सकुशल है ? कुछ हुआ तो नहीं मेरे अचल को ?....' रानी साहिबा अन्दर आकर बोलीं।

'आपका एकबाल है हुजूर कि मौत भी मात होकर लौट गई....' वारिस ने कहा—'खुदा जिसकी जिन्दगी बख्शे, उसका मौत कुछ बिगाड़ नहीं सकती रानी माँ ! हुजूर कुँवर साहिब बाल-बाल बच गये...शुक्र अल्लाह ताला का....'

रानी साहिबा आकर पलङ्ग पर बैठ गयीं, बोली—'मेरी समझ में नहीं आता कि राजा साहब के मरते ही अचल जैसे लड़के का कौन दुश्मन पैदा हो गया ? यह तीसरी घटना थी शायद !...तू होशियार क्यों नहीं रहता रे अचल ?...'

'मैं तो होशियार ही रहता हूँ माताजी ! आज ही देखिये, किस शान से बच गया !....' बोला कुँवर।

'कुँवरानी बहू ! तू कुछ बता सकती है कि यह किसका काम है ?....' रानी साहिबा ने पूछा।

'नहीं माताजी !...कुँवरानी ने कहा—'मैं क्या जानूँ ?.... आज्ञा हो तो एक बात कहूँ ?'

'मैं जानती हूँ कि तू क्या कहेगी ?....' बोलीं रानी साहिबा—'यही कहेगी न कि अचल बड़ा लापरवाह है, इससे राज-काज सँभलेगा नहीं....और चञ्चल बड़ा होशियार है, उसे ही मैं सारी रियासत सौंप दूँ....मगर कुँवरानी ! तू जानती है कि अचल बड़ा है, रियासत इसकी है, मैं इसकी सगी माँ नहीं....फिर भी यह मुझे अपनी माँ समझता है। यह मुझे रखे तो रहूँ, निकाल दे

तो चली जाऊँ चञ्चल को लेकर....मगर मैं दुनिया को यह कहते नहीं सुनना चाहती कि अचल रानी साहिबा का सौतेला बेटा था, सो उन्होंने उसका अधिकार छीनकर अपने बेटे को दे दिया....'

'ऐसा न कहिये माताजी !....'

'बहू ! मैं स्वप्न में भी यह नहीं सोचती थी कि अचल मेरे पेट का नहीं। इसके जैसा बेटा पाकर कौन स्त्री माँ नहीं बनना चाहेगी ? कुँवरानी, माँ की गोद इतनी छोटी नहीं होती कि उसमें सिर्फ अपने पेट के बच्चे के लिए स्थान हो। नारी की ममता बहुमुखी होती है। उसका कोई सीमित दायरा नहीं... मैं समझती हूँ कि हम लोगों का अब अलग-अलग महलों में रहना ठीक नहीं। न जाने कब कौन-सी खुराफात उठ खड़ी हो ? कल से तुम लोग मेरे महल में चलकर रहो। चञ्चल की इच्छा होगी तो वह भी अपना महल खाली कर वहीं आ जायगा।'

'आप तो बेकार परेशान होती हैं माताजी ?' कुँवर अचल नारायण ने कहा—'हम लोग यहीं ठीक हैं। वहाँ चलने पर आपके पूजा-पाठ में बाधा पड़ेगी ..'

'जहाँ इच्छा हो वहाँ रहो मगर खूब सावधान होकर रहो....जिस दिन कुछ हुआ, सच कहती हूँ, मैं भी अपना गला टीप लूँगी ' रानी साहिबा करुण स्वर में बोलीं।

'रानी माँ जुग-जुग जीयें .' वारिस बोला—'खुदा कसम ! वारिस की जान जायगी तब हजूर कुँवर साहिब पर वार होगा....'

'अरे वारिस, तुझे यह क्या हो गया ! कन्धे से खून बह रहा है तेरे ! सारा शरीर तर हो गया है ! कैसे लग गया घाव ?...' रानी साहिबा ने पूछा।

'जरा-सी खरोंच है रानी माँ ! अभी फूँक मारते अल्लाह-

कसम अच्छी हो जायगी बिलकुल....'

'इस वारिस के बाप ने राजा साहब के पीछे अपनी जान दे दी, अब यह छोकरा अचल के पीछे पागल बना है। अरे बेवकूफ ! खड़ा-खड़ा मुँह क्या देख रहा है ? जाकर घाव धो डाल और पट्टी बांध ले....' रानी साहिबा ने वारिस को डाँटा।

'खुदा कसम हुजूर ! हम गरीबों को आपकी दरियादिली ने बेमोल खरीद लिया है....मैं जाता हूँ....आप नाराज न हों रानी माँ। सोचता था, गुलनार सोई होगी, उठते ही बिल्ली की तरह पूछ उठाकर खाँव-खाँव करने लगेगी, वर्ना अब तक तो मैं चला गया होता....' वारिस चला गया।

'वारिस जैसे वफादार नौकर नहीं मिलते....' रानी साहिबा ने कहा—'उसे खून बहता रहा और तुम लोग बैठे-बैठे देखते ही रहे। छुट्टी भी नहीं देते बना उसे ? जानते थे कि बिना हुक्म पाये वह टलेगा नहीं, चाहे मरकर गिर जाय...ललित सो गया क्या ?...'

'अभी तो उठा था माताजी !....' कुँवरानी ने कहा।

'माँ ! तुम भी आ गयी हो...' अभी-अभी दरवाजे पर आ खड़े हुए युवक ने कहा, जिसके बदन पर एक कीमती स्लीपिङ्ग सूट था।

'लो चञ्चल भी आ गया...' रानी साहिबा बोलीं—'आ चञ्चल ! तेरा भाई तो आज बाल-बाल बच गया बेटा !....'

'माँ वारिस से कह दो मुझे रात में जगाया न करे, मेरी नींद खराब हो जाती है !...' चञ्चल ने कहा।

यही बीस साल की उमर थी। राजा का छोटा लड़का था सो सौन्दर्य के साथ-साथ विलासिता की भी आभा थी मुख पर।

'क्या कहता है रे चञ्चल ! रानी साहिबा बिगड़कर बोलीं—'इधर इतनी बड़ी घटना हो जाय और तुझे कोई जगाये भी नहीं ?....तू छोटा बनकर क्या पैदा हुआ, सारा भार अचल

पर लादकर खुद चैन करना चाहता ?...'

'भैया कहीं चोट तो नहीं आई !' चञ्चल ने कुँवर से पूछा।

'चोट नहीं आई तो तू जागा कैसे ?...' अचल ने हँसकर कहा—'माताजी ! इसे एकाध छटाँक अफीम खिला दिया कीजिए, ताकि आराम से सोये....'

'तुम्हें ही तुम्हारी माताजी अफीम खिलाती रही होंगी सुलाने के लिए....रोते भी तो बहुत थे तुम लड़कपन में, कि सारा महल ही जग जाता था' चञ्चल तुनककर बोला।

'क्यों रे चञ्चल ! तेरी और अचल की माँ कोई दो हैं क्या ? ..' रानी साहिबा ने कहा—'मेरे रहते तेरी ऐसी बात अच्छी नहीं....अरे बड़े कुँवर का पैर नहीं छुये ? कितनी बार तुझे समझाऊँ...तू अपने खानदान का रस्म-रिवाज एकदम ही भूलता जा रहा है...''

'माँ मैं भैया का पैर नहीं छूता....वे जूते से मेरी उँगली दबा देते हैं....भाभी का पैर कहो तो छू लूँ...कितनी अच्छी हैं भाभी !' कहते हुए चञ्चल ने एक नजर कुँवरानी पर डाली।

'मेरा पैर न छुओ छोटे कुँवर !'

'क्यों बहू ? छोटा है न ! बड़ों का आदर तो उसे करना ही चाहिए ...' रानी साहिबा ने कहा।

'मगर पैर छूते-छूते छोटे कुँवर मेरे पैर की उँगली दबा देते हैं....नहीं माताजी ! मैं ऐसे नटखट कुँवर से अपना पैर नहीं छुलाती....' हँसकर बोली कुँवरानी—'अब आप जाकर आराम करें माताजी...'

'नहीं तो सबेरे जुखाम हो जायगा....है न भाभी !....' चञ्चल ने कहा—'माँ, चलो हम लोग चलें, भाभी को नींद आ रही है। बाप रे बाप ! भाभी को जब नींद आती है तो इनकी आँखें कमल की कली बन जाती हैं कि रात भर तक खुलती ही नहीं...'

'तू बड़ा शैतान है चञ्चल !...चल, अब चलें ..' रानी साहिबा जाने के लिए घूम पड़ीं।

चञ्चल और रानी साहिबा के चले जाने पर कुँवरानी भी ललित को गोद में लिए बाहर जाने लगी तो....

'कहाँ चली ?....'

'अपने कमरे में'—बोली कुँवरानी, आम की फाँक जैसी आँखों से रस ढालती हुई—'सोने नहीं देंगे क्या ?'

'सोओ न, रोकता कौन है....मगर इसी कमरे में...'

'क्यों ?....'

'मुझे डर लगेगा न !'—कुँवर हँसकर शरारत के साथ कहा।

'चलिये मैं नहीं सोती...' आँखों से रस ढालने के बदले तीर चलाकर बोली कुँवरानी।

'तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे कमरे में चलता हूँ....सच कहता हूँ कविता ! आज तो तुम्हारे बिना मैं एक पल भी नहीं रह सकूँगा ..यहीं सो रहो न ! नींद उचट गई है। कुछ बात ही कर लेंगे घुल-मिलकर...'

'रहने दीजिए घुलने-मिलने को, अरे हाथ छोड़िये न !.... अच्छा जी मैं सोती हूँ, अब तो खुश !'

कुँवरानी पलङ्ग पर आ बैठी और ललित को बीच में सुला कर स्वयं भी सो गई।

'यह क्या ?'—कुँवर बोला—'बीच में यह दीवार कैसी ? इस ललित को एक किनारे सुलाओ कविता !'

'आखिर क्यों ?....इस दीवार की नींव भी तो तुम्हीं ने रखी थी। यह ललित किसी दूसरे का बेटा तो नहीं ? किनारे सोने पर कहीं गिर पड़ा तो ?'

'बातें मत बनाओ—सीधे से बीच में सोती हो कि नहीं....'

'नहीं !...क्या करोगे ?...'

'तो यह...' कह कुँवर ने कुँवरानी को जबरदस्ती अपने पास खींचकर बीच में सुला लिया।

कुँवरानी ने हाथ बढ़ाकर 'बेडस्विच' दबा दिया। कमरे में अँधेरा घुस आया। दम्पत्ति का शरीर लिहाफ में छिप गया।

'यह क्या करते हो? ..' अँधेरे में जैसे कोई कोयल कूक उठी।

'कुछ नहीं....' कुँवर का स्वर था—'दूर सिकुड़ी पड़ी हो....जरा ठीक से सोओ...शादी के चार साल बिता चुकी हो, क्या अब अँधेरे में भी लाज लगती है?'

'आप तो बड़े वैसे हैं जी....अँ....देखो, ललित जग जायगा....अपने हाथ जरा दूर रखो...'

'मेरे अपने हाथ अपने वश में नहीं....'

'अच्छा, दिल से तो हाथ धो ही चुके थे, अब हाथ से भी बे-हाथ हो गये... अरी माँ? बड़े बेदर्दी हैं आप तो?....अब हो गया न?....छोड़िये....छोड़िये भी, कोई पुकार रहा है क्या....'

दोनों ध्यान से सुनने लगे।

दूर से आवाज आ रही थी—'गुलनार! अब तो दरवाजा खोलो हूर!....खुदा कसम ठण्ड से सिकुड़ा जा रहा हूं, कम्बख्त जाड़े को भी आज ही पड़ना था...सुनती हो मेरी हूर! जरा दिल का फाटक खोलकर झांको तो मेरी मल्का?....तुम्हारे खाविन्द जनाब वारिस अली खां साहिब तशरीफ फरमाये हैं....ओ गुलनार की चची! सुनती है कि नहीं हरामजादी!....खुदा कसम, औरतों की नींद बिना लात खाये भागती ही नहीं....दरवाजा भी कमबख्त ऐसा जकड़बन्द है कि हाथ डालने तक का कहीं छेद नहीं....अरे अब तो आंखें खोलो मेरी बुलबुल!....सुअर ने ऐसा छुरा भोंका है कन्धे में कि सारा का सारा खून पानी बनकर निकला आ रहा है बाहर। पकड़ पाता चचा को

तो गुलनार-कसम, भूनकर चबा जाता... या रब ! ऐसी सुतक्कड़ बीबी की ईजाद ही तूने क्यों किया ?...सुनती है गुलनार !... तेरी कसम, अब मैं लौट जाऊँगा...'

बड़ी देर तक दोनों सुनते रहे। एकाएक कुँवरानी हँस पड़ी, बोली—'बेचारा वारिस पुकार रहा है अपनी बीबी को...'

'और गुलनार आँखें बन्द किये चारपाई पर पड़ी-पड़ी सब कुछ सुन रही होगी'—कुँवर ने कहा—'औरतों का अन्दाज गजब का होता है...'

'अच्छा, औरतों की तारीफ रहने दीजिये और आँखें बन्द करके नींद को बुलाइये...'

'जरा और खिसक आओ न मेरे पास। बीच में जगह खाली रहने से जाड़ा लगता है....'

'लीजिये....अब तो जगह खाली नहीं रही ?....मुँह अपना उधर ही रखिये....'

'क्यों ?'

'आपके दांत बहुत तेज हैं...'

'और तुम्हारे गाल ?....'

'बहुत मुलायम....' कहते-कहते जैसे कुँवरानी उस अँधेरे में भी शर्म से लाल हो उठी।

कुँवर ने उसका नाजुक बदन अपने हाथों में भर लिया।

छोटी-छोटी दूबों के सर पर बैठी हुई शबनम मुस्कुरा पड़ी।

● ●

'अरी गुलनार बीबी ! कान पर जूँ रेंगी या नहीं !' वारिस ने पुकारा।

'रेंग गई है...आती हूँ...' भीतर से एक मीठी आवाज सुनाई पड़ी।

'शुक्र है खुदा का....जागो तो सही....पुकारते-पुकारते परेशान हो गया बुलबुल तुम्हें....'

महल की चहारदीवारी के एक कोने में नौकरों के रहने के लिए क्वार्टर बने थे। अपने क्वार्टर के दरवाजे पर रात के दो बजे जख्मी वारिस अपनी बीबी गुलनार को जगा रहा था। बड़ी देर के बाद छोटा-सा दरवाजा हल्की आवाज के साथ खुला और हाथ में एक छोटी-सी लालटेन लिए सत्रह-अठारह की एक बेहद हसीन सूरत दिखाई दी।

यह थी गुलनार, वारिस की चाँद-सी बीवी। चेहरा तो इतना खुशनुमा था कि हाथ की लालटेन भी शरमा रही थी।

'अरे तुम हो मेरे मालिक!....' अजीब अन्दाज से बोली गुलनार, वारिस को देखकर।

'तुम्हारी नरगिसी आँखों की कसम गुलनार! ऐसी सोती हो कि वल्लाह, मैं तो मर गया जाड़े में खड़े-खड़े....'

'नींद निगोड़ी को क्या कहूँ मेरे राजा! पकड़ लेती है तो छोड़ती ही नहीं. बड़ी जल्दी आ गये आज तो?....अभी तो मुर्गा भी नहीं बोला...'

'कितनी देर से मुर्गे की तरह कुकुडूँ-कूँ कर रहा हूँ मगर तू सुनो तब तो?....तेरी भरी जवानी की कसम बुलबुल! आज जैसी तू कभी न सोई होगी....'

'मुझे माफ कर दो मेरी जान!....सच कहती हूँ, जैसे ही नींद खुली, दौड़ी आई हूँ...चलो....'

गुलनार ने अपने मुलायम हाथों से वारिस का कुर्ता पकड़ लिया मगर तुरन्त ही चौंककर छोड़ दिया और लालटेन की धुँधली रोशनी में अपनी हथेली देखने लगी।

देखकर मदिरालु आँखें भय से फट पड़ीं। गुलनार की नाजुक हथेली पर खून के गाढ़े धब्बे पड़ गये थे।

डरकर वह दो पग पीछे हट गई—'खून!....तुम्हारे कपड़े तर-बतर हो रहे हैं मेरे सरताज! किसकी जान लेकर आ रहे

हो तुम ?... ताजा खून है यह तो... मेरे खुदा ! यह क्या कयामत ले आये हो तुम...'

'मेरा ही खून है यह गुलनार ! कन्धे में छूरा लग गया है...' बोला वारिस।

'ओ मोरी मैया ! छूरा मेरे कलेजे में क्यों न लगा ?...' गुलनार लालटेन उठाकर वारिस का शरीर देखने लगी, आँखें भर आयीं उसकी।

'तेरी कसम गुलनार ! बहुत जरा-सी चोट है....रो मत अब तो....चल अन्दर चल...'

दोनों मकान के अन्दर आ चारपाई पर बैठ गए।

'किससे लड़ पड़े थे तुम ?....'

'किसी से भी नहीं...'

'जरूर उलझ पड़े होगे किसी से....कोई बेकसूर को छूरा नहीं मारता... तुम्हें अपनी जान की फिकर नहीं तो इस मासूम गुलनार पर तो तरस खाया करो...सच कहती हूं, कभी कब्र में सोने चले तो मैं तुमसे पहले ही तैयारी कर लूंगी....कितनी दफा कह चुकी कि मियां जमाना बुरा है—पहलवानी छोड़ दो....'

'तुम तो खामखाह खफा होने लगती हो गुलनार !.... वारिस को तुमने इतना जलील समझ लिया है कि अपनी जान की खातिर मैं अपने आका का खून बहता देखूं ? मरहूम राजा साहिब को खुदा जन्नत बख्शे ! उनका नमक हमारे खानदान की रगों में बह रहा है। वारिस उसी बाप का बेटा है, जिसने आका के लिए अपनी जान तक कुर्बान कर दी थी...एक गुलनार की खुशी वारिस की नमकहलाली में फर्क नहीं डाल सकती....'

कहकर वारिस अपना कुर्ता उतारने लगा।

'क्या हुआ था ?' पूछा गुलनार ने।

'कोई शैतान का बच्चा बड़े कुँवर का खून करना चाहता

था' -वारिस बोला --'यह तो कहो कि कुँवरानी साहिबा वक्त पर होशियार हो गयीं....बीवी हो तो खुदा कसम ऐसी....'

'या मेरे मालिक ! यह तो बहुत बड़ा घाव है....' गुलनार चीख पड़ी।

'थोड़ा पानी दो...खड़ी-खड़ी चीखो मत...हो तो थोड़ी साफ़ रूई भी लेती आओ....'

गुलनार दौड़ पड़ी। थोड़ी ही देर में वारिस के घाव की मरहम-पट्टी हो गई।

'कौन मुआ इतना बड़ा घाव कर गया कन्धे में ?'

'कम्बख्त भैंसे के बराबर था गुलनार !...मगर मैंने ऐसा दांव मारा बच्चू को कि चारों खाने चित्त गिरा....जब देखा कि कुश्ती में नहीं जीत सकता तो छुरा चलाकर भाग निकला हरामी का पिल्ला ! ...'

'पकड़ लाये होते सुअरजादे को तो अपनी जूती से सर चटनी कर देती....'

'रहने दो, तुम्हारी जूती बड़ी कमजोर है हूर ! और उसका सर तो बिसखोपड़े जैसा था....'

'बिसखोपड़े जैसा !....कछुए की पीठ जैसा रहा होगा मजबूत तभी तो तुम्हारा घूँसा असर नहीं कर सका....मेरी मैया ! मुझ पर कभी तुम्हारा घूँसा बैठ जाता है, तब तो तारे दिखने लगते हैं मेरी आँखों को...'

'जवानी कसम ! जब तुम मेरे घूँसे की तारीफ करती हो तो मेरा हाथ खुजलाने लगता है गुलनार ?....'

'किसी पर शक है तुम्हारा–पहचाना नहीं उस मरदूद को ?'

'शैतान मुँह छिपाये हुए था...मुझे तो जमुना जैसा लगता था....'

'कौन जमुना !....छोटे कुँवर का मुँहलगा भतीजा !'

'अरे चुप !...नौकर को भतीजा बनाती है ?...जरूर वही

कलूटा था बुलबुल ! देखा तो है तुमने, काला जिन्न जैसा है। रात में कभी देख लो तो दिन को बुखार चढ़ जाय। पता नहीं क्या खाता है उल्लू का पट्ठा....'

'छोटे कुँवर ने भैंसा पाल रखा है चुनमुन के अब्बा !... जो का आटा खिलाते होंगे....'

'क्या कहती हो गुलनार ! चुनमुन कौन है, कहाँ है ?'

'मेरे पेट में....' कहकर गुलनार लजा गई।

तो वारिस ने उसे अपनी गोद में खींच लिया। बोला—'सच कहती हो मेरी मल्का !...'

'सच कहने का इरादा तो नहीं था, मुआ एक-ब-एक मुँह से फूट पड़ा....अब तो तैयारी कर रखो बेटा खिलाने की....'

'मैं बिल्कुल तैयार हूँ। तुम बेटा दिखाओ तो सही....'

'मैं क्या दिखाऊँ ? खुदा दिखाये जब तो ?...क्यों जी ! छोटे कुँवर, बड़े कुँवर साहिब की जान लेना चाहते हैं ?.... रानी माँ कुछ नहीं बोलतीं ?....आखिर सौतेली माँ ही तो....'

'चुप रह गुलनार !....रानी माँ का कोई कसूर नहीं... उन्हें शायद कुछ मालूम भी नहीं....छोटे कुँवर, बड़े कुँवर की जान लेकर रियासत अपने कब्जे में करना चाहते हैं....और अपने बड़े कुँवर तो पूरे बकरे हैं, चाहे जो उनकी गर्दन तराश ले...ऐसों की गुजर इस दुनिया में नहीं अलबेली !...'

गुलनार उसकी गोद से उठ खड़ी हुई और नीचे जमीन पर दूर जा बैठी।

वारिस ने पुकारा—'ऐ गुलनार ! सुनती हो....अभी से मत रूठो....खुदा कसम, जब बच्चा हो जायगा, तब तो तुम और भी हसीन लगोगी। मैं तो इकटक देखा करूँगा तुम दोनों को... तुम्हारी यह दिल फरेब अदा माँ बन जाने पर तो और भी गजब ढायेगी ...'

'मुझे तुम्हारी यह तारीफ जरा भी नहीं भाती....'

'लो, सच बात में कौन-सी तारीफ रखी है ?....सदके जी सदके !....आओ थोड़ा प्यार दे दो तो मैं चला जाऊँ अपनी ड्यूटी पर....मेरे न रहने पर महल के सब पहरेदार मुर्दों से बाजी लगाते हैं पाजी...'

'ऐसी हालत में तो तुम्हें नहीं जाने दूँगी....' गुलनार पास आकर बोली—'तुम कितने जख्मी हो....'

'अभी तो यह जख्म छोटा ही है गुलनार, मगर मेरे न जाने पर कोई वारदात हो गई तो कितना गहरा जख्म लगेगा कि खुदा कसम, मैं जिन्दा न रह सकूँगा....मुझे जाना ही होगा बुलबुल ! फरमावदार नौकर के लिए अपने जिस्मानी दर्द की कोई कीमत नहीं, फर्ज ही उसका सब कुछ है...देर हो रही है गुलनार !'

वारिस ने गुलनार को अपने पास खींच लिया और उसके गुलाबी गालों पर एक हलकी-सी चपत देकर बोला—'सीधे से बुलाता हूँ तो और दूर भागती हो मेरी जान !....'

● ●

रानी साहिबा ने सर उठाया। साड़ी के छोर से सुनहरे चश्मे को पोंछकर आँखों पर लगाया, फिर चञ्चल की ओर देखा, चञ्चल कुछ हिचकिचाया-सकुचाया-सा खड़ा था, जैसे कोई बात कहना चाहता हो।

'तू गया नहीं अभी चंचल ! कह तो दिया कि जा देख आ सिनेमा....मगर तेरी यह घूमने-फिरने की आदत मुझे जरा भी नहीं भाती...जब देखो तब सिनेमा, क्लब ! भगवान जाने इसे और भी कोई काम सूझता है या नहीं ?....अचल को देखता है कि नहीं ? दिन-रात काम में पिसा रहता है। तू क्या और भी

कभी जवान होगा ? अब तो लड़कपन छोड़ दे...बीस सावन तो देख चुका....'

'माँ ! मैं नहीं जाऊँगा सिनेमा !....' चञ्चल धम्म से कुर्सी पर बैठ गया।

'क्यों ?....माँ की बातों का तीर लग गया ?....ऐसा ही हयादार होता तो तेरी जवानी को पर न निकलते...राजा का बेटा है तू तो कङ्गालों की तरह मारा-मारा क्यों फिरता है...'

'मुझे बिगड़ो मत माँ ! अचल भैया ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है। दिन-रात उन्हीं के गुण गाती रहती हो—जैसे मैं तुम्हारा बेटा न हुआ घूरे का कूड़ा हो गया... मेरी कोई गिनती ही नहीं।'

'कौन तेरी गिनती नहीं करता ?... अचल और कुँवरानी तुझे आँखों में भरे फिरते हैं। मेरा तो बेटा ही है तू...मगर दुनिया में केवल रिश्ता ही प्यारा नहीं होता चञ्चल ! रिश्ते को मजबूत करने के लिए इन्सान में व्यवहारिक उच्चता भी होनी चाहिए....तू अपने को सुधार तो पहले...'

'तुम अपना दिमाग सुधारो माँ ! सारी रियासत तुमने गैरों को सौंप दी है...'

'कौन है गैर ?'

'मैं तुम्हारा बेटा हूँ, कभी मेरी भी राय लेती हो कुछ ? अचल भैया जो मन में आता है करते हैं। देख लेना, तुम्हारे मरने पर चञ्चल भीख न माँगने लगे तो कहना...'

'मगर अन्धे लड़के !'—रानी साहिबा बिगड़कर बोलीं—'मैं पूछती हूँ, अचल क्या कोई गैर है ? मैं उसकी माँ न सही, मगर वह मेरे पति का बेटा तो है ? वह मेरे पेट से पैदा नहीं हुआ मगर तेरे बाप का खून तो है उसके शरीर में ?...तुझसे तो लाख दर्जे अच्छा है वह बड़ा कुँवर !....'

'ऐसे नहीं चलेगा माँ !...तुम अपना हिस्सा अलग कर लो....'

'अपना हिस्सा अलग कर लूँ या तेरा ?... तुझे अलग रहना हो तो रह, मगर मेरे जीते-जी रियासत का एक टुकड़ा भी तुझे नहीं मिलेगा, इसे याद रख !...रोटी बाँटकर खाई जाती है, मगर जायदाद बाँटने से मिट जाती है। अचल जैसा दिमाग जिस दिन हो जाय तो सारी रियासत तुझे ही वह सौंप देगा....'

'मुझे भीख नहीं चाहिए....मुझे अपना हिस्सा चाहिए...मैं नहीं जानता था कि माँ भी बेटे का गला काट सकती है...'

'चुप रह लड़के ? रियासत न तेरी है, न अचल की—मेरी है, मैं उसकी मालकिन हूँ....तू अभी दूर हो जा मेरे सामने से....'

'क्यों माताजी ! क्यों बिगड़ रही हो चञ्चल को ?'

अचल को देखकर रानी साहिबा का क्रोध उड़ गया। हँसने की कोशिश करती हुई बोलीं—'कुछ नहीं बेटा !.. यह चञ्चल इतना बड़ा हो गया मगर तमीज नहीं आई इसे....राजा का बेटा होकर माँ से लड़ता है—जमाना सुने तो क्या कहे ?....' रानी साहिबा ने असली बात छिपा लीं। सुनकर अचल को व्यर्थ का दुख होता।

अचल ने चञ्चल का हाथ पकड़कर कहा—'क्यों रे, माताजी से क्यों लड़ रहा था तू....'

'मैं कहाँ लड़ रहा था भैया !'—अभिनय-पटु चञ्चल ने भी अपनी एक्टिंग बदल दी—'माँ ने ही तो पहले बिगड़ना शुरू किया था...'

'सुन लो कुँवर इस छोटे की बात ! साँप की तरह क्षण-क्षण पर केंचुल बदलता है यह....' रानी साहिबा ने कहा—'इतना बड़ा हुआ मगर सिनेमा और क्लब के सिवा इसे कुछ सूझता ही नहीं...'

'तुम भी तो माताजी, इसे बेकार बिगड़ने लगती हो... सिनेमा ही न देखता है या और कुछ ?....छोटा है तो खेलेगा-कूदेगा नहीं ? इसे फिक्र किस बात की है ?... अब खड़ा क्यों है

रे चञ्चल। जाता क्यों नहीं ? या पूरे पैसे देकर आधा ही खेल देखने का इरादा है ?....यह भी तो एक ही शैतान है....' अचल ने छोटे कुँवर को डाँटा !

चञ्चल मुँह बिचकाकर चला गया। बाहर उसकी कार खड़ी थी। ड्राइवर ने दरवाजा खोल दिया। वह अन्दर जा बैठा।

'होटल चलूँ न हुजूर !....' पूछा ड्राइवर ने।

'हाँ !....जमना कहाँ गया ?'

'वे मिस एनी को लेकर होटल में आने को कह गये हैं ...' बोला ड्राइवर।

और कार तेजी से दौड़ पड़ी। थोड़ी देर में वह शहर के सबसे बड़े होटल के सामने जा खड़ी हुई। चञ्चल उतरकर भीतर की ओर चला। स्वयं मैनेजर ने दौड़कर उसका स्वागत किया, जैसे वह अक्सर वहाँ आता रहा हो !

'कमरा खाली है ?'—चञ्चल ने पूछा।

'आपके लिए तो हमेशा एक कमरा रिजर्व रहता है हजूर !'—मैनेजर ने कहा—'आप नं० १३ में तशरीफ रखें....'

चञ्चल होटल की खूबसूरत चौड़ी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आया। पीछे-पीछे वर्दी पहने एक बेयरा भी था। बेयरा ने लपक कर दरवाजा खोला। चञ्चल भीतर प्रविष्ट हुआ।

कमरा बड़े ही अच्छे ढङ्ग से सजा था। आदमकश शीशे, गद्देदार पलंग, बड़ी-बड़ी दो आलमारियाँ, एक बड़ी डायनिङ्ग टेबुल और अगल-बगल चार कुर्सियाँ, बैरा को बुलाने की घण्टी, टेलीफोन का एक्सटेंशन, कोने में एक छोटा-सा रेफिरजेटर, दो कोच, एक रेडियो, एक बेडसाइड टेबुल—वह कमरा खास तौर से छोटे कुँवर के लिए सजाया गया था।

वह एक कोच पर जाकर बैठ गया। बेयरा रेडियो का स्विच खोल दिया। कमरे में मधुर गायन-स्वर गूँज उठा।

'कुछ लाऊँ हजूर ?....' पूछा बेयरे ने।

'अभी नहीं...' चञ्चल ने कहा—'मिस एनो अभी तक नहीं आई ?'

'नहीं हजूर !....वक्त हो गया है, आती ही होंगी....'

कहकर बेयरा दरवाजे पर रखे स्टूल पर बैठ गया।

दरवाजे पर एक हरा परदा खींच दिया।

चंचल कोच पर पांव फैलाकर पड़ गया ! वह कुछ चिन्तित-सा लग रहा था। जेब से चाँदी का केश निकालकर उसने एक सिगरेट जलाई और पीने लगा। हृदय की चिन्ता धुएँ के गुबार के साथ बाहर निकलकर ऊपर हवा में उड़ चली।

कुछ ही देर बाद दरवाजे का परदा जरा-सा खिसका और एक एंग्लोइरियन लड़की ने प्रवेश किया।

रङ्ग गोरा, चाल मस्तानी, आँखें कुछ भूरी मगर कातिल, पहनावा अंग्रेजी मगर बेहद आकर्षक, बाल आधुनिक ढङ्ग से सँवारे, गालों पर पाउडर, होठों पर लिपिस्टिक के कारण उम्र का अन्दाज मुश्किल, हाथ में चमकता-काला हैण्डबेग, कसी पोशाक के ऊपर उठे हुए छाती के दो उठाईगीरे !

चञ्चल आँखें बन्द किये कुछ सोच रहा था। उसने उस लड़की का आना नहीं देखा।

'Hallo चंचल कुँवर ! How do you do ?—' लड़की ने पैर आगे बढ़ाते हुए कहा।

चंचल ने सर उठाकर देखा तो चेहरे पर हल्की मुस्कराहट आ गई, बोला—'O K, thank you, अभी चली आ रही हो क्या मिस एनी ?'

'just coming तुम तो आज बड़ी अफसोस में नजर आती है चञ्चल कुँवर। क्या बात हो गया ?....' मिस एनी चञ्चल के पास कोच पर बैठती हुईं बोली।

'कुछ नहीं मिस एनी ! जमुना तुमसे मिला था ? तुम्हें बुलाने गया था....'

'Mr. जमुना ?...no no, I did't see him हम एक friend के पास चला गया था...Mr. जमुना अब आती ही होगी Mummy से पूछकर....कल रात में कुछ Success मिला ?....'

'नहीं मिस एनी ! जमुना को आ जाने दो तो सब कुछ बताऊँगा...कुछ पियोगी ?' चंचल ने पूछा।

'Only Beer !....'

'बीयर से क्या होगा ?....कुछ और लो....थोड़ा सुरूर चढ़े तो काम की बात हो...'

'Then one peg dry gin....' एनी बोली।

चंचल ने घण्टी बजाई। बेयरा आया। उसने उसे ड्राई जिन लाने की आज्ञा दी। थोड़ी ही देर बाद तश्तरी में बोतल और गिलास रखे बेयरा आया और 'बेड साइड टेबुल' पर रखकर बाहर चला गया।

'मुझे बहुत थोड़ा दो....Mummy को मालूम हो गई तो नाराज होगा....बस, thats all....'

गिलास में थोड़ी-सी जिन और सोडा डालकर चञ्चल ने अपने हाथों से एनी को पिलाया। फिर एनी ने तीन-चार पेग चंचल को पिलाया।

'तुम एक पेग और लो मिस एनी !....' चंचल ने हठ किया।

'No-no, हम ज्यादा नहीं पीयेगी....'

'तो हम भी नहीं पीयेगी....' उसी लहजे में चंचल ने कहा।

'तुमको पीना पड़ेगी....हम तुमको पिलाता है....तुम जरूर पीयेगी....हम तुमको कितना love करता है चंचल कुँवर !.... तुमको मेरी कसम ! दो Peg और पी लो darling !' कहकर एनी ने दो पेग और पिलाया चंचल को।

'एनी डार्लिङ्ग ! तुम मुझे कितना प्यार करती हो !....' चंचल ने एनी को अपने पास खींचते हुए कहा।

'श्रौर क्या तुम मुझको उतना प्यार नहीं करती ? कैसा बोलती है चंचल कुँवर !....' एनी गोल गेंद की तरह ढुलक श्राई चंचल की गोद में अपने श्राप !

'मैं भी तुमको बहुत प्यार करता हूँ डार्लिङ्ग ! तुमने मुझ पर जादू कर दिया है...' चंचल ने उसे अपने हाथों के बीच भर जोर दबाते हुए कहा।

एनी ने एतराज नहीं किया। बोली—'जादू क्या बोलती ? Oh, you mean magic ?'

'यस !....' कहकर चंचल ने एनी के होंठ चूम लिए।

'Oh, you sweet beast तुम्हारी होंठ, lipstick से लाल हो गया....हमारी Make up खराब कर दी....Rascal है तुम Nice litle rascal ?'

कहकर एनी चंचल की गोद में सर रख लेट गई। बोली—'तुम हमको अपनी रानी बनायेगा चंचल कुँवर !'

'Sure darling ! मुझे अपनी रियासत पर अधिकार कर लेने दो, फिर तो तुमसे शादी करके तुम्हें अपनी रानी जरूर बनाऊँगा...मुझ पर विश्वास करो मेरी प्यारी एनी !'

'बात देकर बदल तो नहीं जायेगी तुम ?....'

'कभी नहीं....कितनी दफा तुम्हें अपना दिल खोलकर दिखा चुका हूँ....क्या तुम्हें मुझपर यकीन नहीं श्राता ?....दुनिया में मैं केवल दो ही चीजें पाना चाहता हूँ....एनी श्रौर रियासत को....'

'कल बड़ी कुँवर पर जो हमला किया उसमें Success मिला कि नहीं ? मिस्टर जमुना तो बड़ा बहादुर श्रादमी है। उसने बड़ी कुँवर को जरूर मार डाली होगी....'

'नहीं मिस एनी ! हम असफल रहे... कुँवरानी भाभी श्रौर वारिस के रहते हम कामयाब नहीं हो सकते....'

'वारिस कौन ? That giant ? My God, he is like an elephant...तो कल बड़ी कुँवर बच गई ?....

ऐसे कब तक काम चलेगी छोटे कुँवर !...तुम जल्दी Success हासिल करो...'

'हम तो बहुत कोशिश कर रहे हैं मिस एनी !....अचल भैया को रास्ते से हटाने के बाद, भाभी और ललित को भी तो हटाना पड़ेगा, बड़ी मुसीबत है डार्लिङ्ग !....'

'लो मिस्टर जमुना भी आ गई....' एनी ने दरवाजे की ओर देखते हुए कहा।

उसी समय एक लम्बे-चौड़े आदमी ने वहाँ प्रवेश किया, जिसका काला रङ्ग रोशनी में अजीब ढङ्ग से चमक रहा था। उसकी भयानक आकृति प्रकट कर रही थी कि वह प्रथम श्रेणी का विश्वासघाती एवं खूनी है।

'मिस एनी ! आप यहाँ हैं ?'—उसने आगे बढ़ते हुए कहा—'बातैसी है कि मैं आपके घर गया था। आपकी ममी से मुलाकात हुई, उन्होंने कहा कि आप एक घण्टा पहले ही जा चुकी हैं...'

'क्यों मिस्टर जमुना ! कल तो तुम्हें Suceess नहीं मिला....अब क्या इरादा है तुम्हारी ?....'

'जमुना पास आकर कुर्सी पर बैठ गया। बोला -'बातैसी है कि पता नहीं कैसे कुँवरानी साहिबा होशियार गयीं... मैं भी पकड़ लिया जाता मगर नसीब अच्छे थे, बचकर निकल आया....खैर ! कब तक हमारा वार खाली जाएगा !....हमने दूसरा रास्ता सोच लिया है मिस एनी ! क्या बड़े कुँवर को बातैसी है कि जहर दे देना ठीक नहीं होगा ?'

'You mean poison !....बहुत ठीक होगी....' एनी ने कहा— Poison दोगी तो बहुत जल्द काम हो जायगी....बड़ी कुँवर के बाद कुँवरानी और ललित को भी एक साथ Poison दे दिया जायगी...'

'मगर जहर मिलेगा कहाँ ?' चञ्चल ने कुछ सोचते हुए पूछा।

'कोई डाक्टर दे देगी—' बोली एनी।

'मैं सोच चुका हूँ...' जमुना ने कहा—'अपने फेमिली डाक्टर दासबाबू हैं न! बातैसी है कि उन्हीं को मिलाया जाय....'

'तुम भूलते हो जमुना!.... डाक्टर दास हमारे खानदान का पुराना डाक्टर है। वह कभी इस बात के लिए तैयार न होगा....'

'रुपया सब कुछ कर सकता है छोटे कुँवर!'—कहते-कहते जमुना के मुख पर एक पैशाचिक मुस्कराहट खेल गई—'रुपये से इन्सान का ईमान खरीदा जा सकता है कानून बदला जा सकता है, बातैसी है कि खून को पानी साबित किया जा सकता है....'

'ठीक है, मगर डाक्टर दास रुपयों पर फिसलने वाला नहीं....मुझसे बढ़कर वह अचल भैया का ताबेदार है....'

'Silly doctor! put him on the point of your pistol' एनी ने तेजी से कहा।

मिस एनी ने ठीक कहा—' जमुना बोला—'रुपये से नहीं तो पिस्तौल से डाक्टर दास ठीक हो जायँगे....बातैसी है कि हमें यह काम जल्द से जल्द कर डालना चाहिए। वे लोग दिन पर दिन होशियार होते जा रहे हैं....'

'तो चलो, अभी डाक्टर दास से मिल लें।' कहकर चञ्चल उठ खड़ा हुआ।

एनी और जमुना भी उठ पड़े। तीनों होटल से बाहर आकर कार में बैठ गये। कार ने दस मिनट में ही उन्हें डाक्टर दास के दरवाजे पर पहुँचा दिया।

डाक्टर दास रोगियों से छुट्टी पाकर खाना खाने अन्दर चले गए थे। उनका नौकर चञ्चल को पहचानता था। उसने इज्जत के साथ सबको बिठाया और अन्दर जाकर डाक्टर दास को उनके आने की सूचना दी।

दो ही मिनट बाद डाक्टर लपके आए।

अधेड़ अवस्था, फिर भी चाल में फुर्ती, चेहरे पर गम्भीरता, आँखों में अनुभव की चमक। डाक्टर दास रामगढ़ रियासत के खानदानी चिकित्सक थे। राजा साहब उनकी बहुत इज्जत करते थे।

'ओहो, छोटे कुँवर की तबीयत आज फिर खराब हो गई ?....' कहते हुए डाक्टर दास कुर्सी पर आ बैठे।

'मैं बिलकुल ठीक हूँ डाक्टर साहब !' बोला चञ्चल—'एक जरूरी काम से आपके पास आया हूँ।'

'कहिये !' कहते-कहते डाक्टर की दृष्टि एनी पर पड़ी तो वे चौंक पड़े—'आप ?'

'ये मेरी दोस्त हैं...' चञ्चल ने कहा—'आपने इन्हें पहले मेरे साथ नहीं देखा होगा...अभी हाल में दोस्ती हुई है।'

'यही तो मैं भी समझता था....' डाक्टर ने कहा—'हाँ, कहिए, क्या सेवा करूँ ?...बड़े कुँवर मजे में हैं ?...'

'सब लोग ठीक हैं.. मैं एक गुप्त बात कहना चाहता हूँ.... खुला दरवाजा बन्द कर देने में आपको कोई आपत्ति तो नहीं.... हवा के साथ यदि दो-एक शब्द बाहर चले गए और उन्हें किसी ने सुन लिया तो हम दोनों के लिए बुरा होगा....'

'ठीक है....दरवाजा बन्द कर दीजिए....मगर बात क्या है छोटे कुँवर ?...कोई गुप्त रोग....'

जमुना ने उठकर दरवाजा बन्द कर दिया और भीतर से सिटकिनी लगा दी। तब चञ्चल बोला—'गुप्त रोग की बात नहीं है डाक्टर साहब !....आप हमारे पुराने डाक्टर हैं, सो कुछ मदद माँगने आया हूँ....काम हो गया तो समझिये हमारे साथ आपका भी काफी लाभ होगा....'

'आपकी रियासत से मेरी परवरिश होती है कुँवर साहब ! आप जो कहें करने को तैयार हूँ। लाभ की चिन्ता नहीं। आप

की कृपा से खाने को काफी है। कोई बाल-बच्चे नहीं कि मरने के बाद की फिक्र करूँ....'

'आप डाक्टर हैं....लोगों को दवा देकर जिलाते हैं....'

'जरूर, आप अपना मतलब बयान कीजिये...' डाक्टर ने कहा। उनके मुख पर उद्विग्नता थी !

'क्या आप दवा से लोगों को मार भी सकते हैं ?....' चंचल ने एकटक डाक्टर के मुख की ओर देखते हुए पूछा।

डाक्टर चौंक पड़े मगर अपना भाव छिपाकर बोले—'दवा का काम जीवन देना है कुँवर साहब ! जान लेने का काम तो जहर ही कर सकता है। मगर जहर भी इतना घृणित नहीं.... उचित मात्रा में सेवन करने से वह भी जीवन देता है...'

'मुझे जीवन देने वाली दवा नहीं, जान लेने वाला जहर चाहिए डाक्टर साहब !....एक खुराक अभी और दो खुराक बाद को... और तीन खुराक के बदले तीन हजार कैश.... बोलिए, तैयार हैं आप ?...' चञ्चल ने पूछा।

'रुपयों की लालच डाक्टर को अपने फर्ज से नहीं गिरा सकती चञ्चल कुँवर !' डाक्टर ने दृढ़ स्वर में कहा—'मारने वाला वह ईश्वर है....डाक्टर से ऐसा कभी नहीं हो सकेगा। लोगों को जीवन दान देकर इतना पुण्य कमाया है, वह एक ही पाप से धुल जायगा छोटे कुँवर !'

'अच्छा तो पाँच हजार !'

'मुझे क्षमा करें आप....'

'सात, आठ, नौ हजार !'

'........'

डाक्टर चुप हो रहे। रुपयों की चमक आँखों में समा रही थी। सोच रहे थे डाक्टर दास।

'दस हजार...ग्यारह, बाहर हजार !...' तीर पर तीर छोड़ रहा था चञ्चल।

और अन्त में डाक्टर दास घायल हो उठे।

एक लम्बी सांस लेकर बोले—'किसकी जान लेनी है ?'

'आप तैयार तो हैं !.. बारह हजार आपको कल सबेरे ही मिल जायँगे....'

'मैं तैयार हूँ....नाम बताइए...'

'नाम से आपको क्या वास्ता ?...तीन खुराक जहर की कीमत में बारह हजार दे रहा हूँ, यह क्या कम है ?....' बोला चञ्चल।

'कम तो नहीं, मगर देने के पहले मैं यह जान लेना चाहता हूँ कि उसे आप अपने ही खानदान पर तो नहीं प्रयोग करेंगे...'

'अगर ऐसा ही करूँ तो ?'

'तो मैं बारह लाख पर भी तैयार नहीं...' डाक्टर की आवाज दृढ़ थी।

'सोच लीजिये खूब...'

'सोच लिया है.. मैं राजघराने के साथ दगाबाजी नहीं कर सकता....'

चञ्चल ने आँखों-आँखों में जमुना से कुछ इशारा किया फिर डाक्टर से बोला—'क्या यह आपका आखिरी फैसला है ?'

'बिल्कुल आखिरी....' डाक्टर उठने लगे तो—

'बैठे रहो डाक्टर !....' चञ्चल तड़प कर बोला—'रुपया ही नहीं दूँगा, एक और चीज दूँगा...'

'वह क्या ?....'

'मौत !....उधर देखो....'

डाक्टर ने भयभीत दृष्टि से जमुना की ओर देखा, जिसके हाथों में एक वजनी पिस्तौल चमक रही थी।

'चञ्चल हार कर जाने नहीं आया है डाक्टर ! रुपयों की तुम्हें जरूरत नहीं मगर मौत की जरूरत है तुम्हें....देख रहे हो वह काली-सी मौत जमुना के हाथ में !....मेरी जरा-सा इशारा पाते ही वह गोली उगल देगी... बोलो क्या कहते हो तुम ?....'

'मुझे छोड़ दीजिये....' डाक्टर ने प्रार्थना की।

'तुम चाहो तो छूट सकते हो....' चञ्चल ने क्रूर हँसी हँस कर कहा—'सिर्फ तीन खुराक, ज्यादा नहीं। और बारह हजार रुपये कम नहीं...और यह तनी हुई पिस्तौल मामूली नहीं। जरा-सा धड़ाका और तुम्हारी जान बेजान....बोलो डाक्टर! जमुना के हाथ काँप रहे हैं। अब पिस्तौल अधिक इन्तजार नहीं कर सकती....जमुना! तुम डाक्टर के ठीक पीछे खड़े हो जाओ, ताकि जरूरत पड़ने पर निशाना खाली न जाय....'

डाक्टर का चेहरा पीला पड़ गया था। आँखों में भय नाच रहा था।

चञ्चल ने क्रूर आँखों से डाक्टर को एकटक देख रहा था। जमुना डाक्टर के पीछे आ खड़ा हुआ था। एनी खामोश थी।

'मैं तीन तक गिनता हूँ...तीसरी आवाज पर तुम्हारी मौत आ जायगी!....रेडी....एक!....'

'.........'

डाक्टर का बदन काँप उठा।

उसने अपनी आँखें बन्द कर ली।

'दो!'

चञ्चल इतने जोर से कहा कि डाक्टर चौंक उठा।

'ठहरिये....' बोला वह हाँफता हुआ—'मैं एक खुराक दे दूँगा....'

'बारह हजार पर तीन खुराक! समझे डाक्टर?...'

'मैं रुपया नहीं चाहता....'

'मगर मैं तीन खुराक चाहता हूँ! एक अभी, दो बाद में...जल्दी बोलो, नहीं तो मेरे मुँह से तीन निकल जायगा...'

'दूँगा...' डाक्टर हताश वाणी में बोला—'अभी तो एक खुराक चाहिए न?'

'हाँ जल्दी करो....' बोला चञ्चल।

डाक्टर ने पास की आलमारी खोली और सफेद पाउडर की पुड़िया बाँधकर चञ्चल की ओर बढ़ा दिया।

चञ्चल पुड़िया लेकर उठ गया।

बोला—'देखो डाक्टर, तुम्हारी जबान काबू में न रही तो हमारी पिस्तौल भी बेकाबू हो जायगी ...भलाई इसी में है कि अपना मुँह बन्द ही रखना! जबान हिलाते ही मौत! समझे!'

डाक्टर कुछ बोला नहीं। सर पकड़कर कुर्सी पर बैठ गया।

चञ्चल, एनी और जमुना बाहर आकर कार पर जा बैठे। कार चल पड़ी। रात के दस बज गये थे। छोटे से शहर की भीड़-भाड़ सन्नाटे में परिवर्तित हो गयी थी।

'जहर तो मिल गया....' बोला चञ्चल -'अब इसे देने का उपाय ?'

'मिस एनी कर लेंगी....' जमुना ने कहा—'बड़े कुँवर मिस एनी को पहिचानते नहीं। यह किसी बहाने से उनसे मिलेंगी और चाय पीने की इच्छा प्रकट करेंगी....मौका देखकर बड़े कुँवर के प्याले में....ठीक है न मिस ?'

'O. K. I will do it....' एनी ने कहा—'Poison मुझको दे दो....'

'घबड़ाना मत मिस एनी !....लो, पुड़िया सँभाल कर रखो....भैया से खूब दिल खोलकर मिलना, मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे थोड़ी देर बाद आ जाऊँगा....मगर देखना, भैया बड़े सुन्दर हैं। कहीं उन पर लट्टू न हो जाना कि जहर का वह प्याला उन्हें न देकर खुद ही पी लो....'

'तुम क्या बोलती है छोटो कुँवर! हम जरूर Success करेगा...'

'Success तो करेगा तुम मिस एनी !' जमुना एनी की ही

स्टाइल में बोला—'कहीं तुम Fail कर गया तो छोटी कुँवर बहुत नाराज होगी....'

'नाराज कैसे होगी ?...' एनो ने कहा—'हमारा Would be husband है छोटी कुँवर !'

कार भागी जा रही थी। हत्या के बांधनू बँध रहे थे।

• •

जब से उस रात कुँवर अचलनारायण पर हमला हुआ, कुँवरानी ललित के साथ कमरे में सोती है। वह जानती है कि अचल बेहद लापरवाह है और उसकी लापरवाही किसी दिन उसकी जान ले सकती है। सारी खुराफात की जड़ चञ्चल है और चञ्चल की जरा भी शिकायत अचल सुनना नहीं चाहता।

अचल के कमरे में पलङ्ग पर कुँवरानी बैठी है। छोटा ललित हँसता हुआ खेल रहा है। कुँवर मुग्ध दृष्टि से कभी कुँवरानी को देखता है, कभी ललित को। दाम्पत्य जीवन में कितना सुख है, इसका अनुभव कुँवर को विस्मृत कर देता है।

'ए ललित ! तू सोयेगा नहीं ?' कुँवरानी ने खेलते हुए ललित का हाथ पकड़ कर कहा—'सो जा बेटा ! दस बज रहे हैं...दिन को सो जाता है तो रात को तेरी खुराफात चल निकलती हैं....इधर आकर सो रह अब....'

'पहले बाबूजी को छुलाओ माँ ! बले आदमी को पहले छोना चाहिए....' ललित ने तोतली वाणी में कहा।

'तेरे बाबूजी अभी नहीं सोयेंगे...'

'क्यों माँ !....जग कल क्या कलेंगे बाबूजी ?....तुमछे बातें कलेंगे न ?'

'नहीं रे मुझे फुसलायेंगे ..' कहकर हँसती हुई कुंवरानी ने

तिरछे-तिरछे कुँवर की ओर देखा।

कुँवर भी हँस पड़ा।

ललित बोला—'माँ! तुम्हें बाबूजी फुछलावें तो फुछलना मत, बले खलाब हैं बाबूजी! मुझे लकलो का घोला भी नहीं लाते...माँ, तुम एक घोला मुझे ला दो तो मैं तुम्हें एक पैछा दूँगा मिठाई खाना...'

'बड़ा मिठाई वाला बना है....' कुँवर ने कहा—'कभी अपने बाप को भी मिठाई खाने का न्योता दिया है बेईमान?...'

'तुम तो लोज मिठाई खाया कलते हो....माँ को पूछते भी नहीं....माँ, बाबूजी को मिठाई मत देना, नहीं तो अपने घोले पर तुम्हें नहीं चल्हाऊँगा....वालिस मुझे घोला ला देगा, छोता छा, लकली का...'

कमरे की बत्ती जल रही थी, परन्तु बाहर आँगन में अन्धकार था। कुँवरानी की दृष्टि एकाएक बाहर जा पड़ी....साथ ही वह चौंक पड़ी।

बाहर आँगन में कोई छाया चल फिर रही थी परन्तु अन्धकार के कारण उसकी सूरत दिखाई नहीं पड़ती थी।

इधर जो घटनाएँ राजमहल में घट रही थीं, उनसे कुँवरानी अत्यधिक सावधान रहा करती थी। धीरे से वह उठी और दबे पाँव बाहर की ओर आगे बढ़ी।

कुँवर ने रोका—'कहाँ चली दी कविता?'

'अभी आती हूँ....' कहकर कुँवरानी बाहर निकल आई और धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया।

दरवाजे की राह थोड़ा-बहुत प्रकाश आँगन में आ रहा था, वह भी गायब हो गया...परन्तु अन्धकार में भी छाया को कुँवरानी ने देख ही लिया। उस छाया ने भी शायद उसे देख लिया था और रुककर खड़ी हो गई थी।

छाया हिली और कुँवरानी की ओर बढ़ने लगी। कुँवरानी

सजग हो गई।

तब तक छाया पास आ गई थी और स्पष्ट स्वर कुँवरानी को सुनाई पड़ा—'मैं हूँ हुजूर! खुदा कसम, आप को जोर से पुकार भी नहीं सकता था....कुँवर साहिब जान जाते....'

'वारिस तुम?...क्या....'

'धीरे से बोलिये हजूर!....बड़े कुँवर साहिब तक आवाज न पहुँचे, वे आये हैं।'

'कौन?' धीरे से पूछा कुँवरानी ने।

तो झुककर वारिस ने कोई नाम बताया। बोला—'बहुत छिपकर आये हैं हजूर! कहते हैं बड़ा जरूरी काम है....आपसे तखलिए में कुछ बातें करना चाहते हैं ..बेहद डरे हुए हैं शायद! ठीक से बोल भी नहीं पाते....'

'तुम चलो मैं अभी आई...'

वारिस चला गया। कुँवरानी दबे पाँव कमरे के पास आई और आहिस्ता से दरवाजा बाहर से बन्द की।

भीतर ललित से बातें करते हुए कुँवर को यह नहीं मालूम हुआ कि दरवाजा बन्द हो गया है।

कुँवरानी धीरे-धीरे उस ओर बढ़ी जिधर बैठकखाना था।

दरवाजे पर उसने वारिस के पास एक आदमी को खड़े देखा, जिसने अपने मुँह और बदन का ज्यादातर हिस्सा एक काली चादर से छिपा रखा था।

कुँवरानी को देखकर धीरे से बोला—'बहुत छिपकर मिलने आया हूँ...उम्मीद न थी कि इतनी रात को तुमसे भेंट हो सकेगी, फिर भी चला आया...मैं जानता था कि वारिस तुम्हारा वफादार नौकर है, इसीलिए इसी से बुला भेजा...कुँवर साहब को तो नहीं मालूम हुआ?....'

'नहीं!' कुँवरानी ने गम्भीर होकर कहा।

'तो ठीक है...' वह बोला—'बैठक में चलो....'

कुँवरानी ने बैठक का दरवाजा खोला। वह आदमी चटपट भीतर घुस गया।

कुँवरानी भी भीतर जाते-जाते वारिस से बोली—'तुम दरवाजे पर खड़े रहो। कोई इधर आने न पावे....समझे?...'

'समझ गया हजूर!...' वारिस बोला—'ईमान कसम,हवा को भी पास नहीं आने दूँगा....आप इतमीनान से बातें कर लें....'

कुँवरानी ने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। वारिस चौकन्ना होकर दरवाजे पर खड़ा रहा।

भीतर से आवाज सुनाई पड़ी—'रोशनी कर दूँ?...' कुँवरानी थी।

'नहीं...कत्तई नहीं...' वह था—'मेरी बातें ध्यान से सुन लो...मुझे जल्दी है...'

इसके बाद धीरे-धीरे बातें होने लगीं...वारिस कुछ सुन न सका। वह दरवाजे पर इधर-उधर टहलने लगा। उस विचित्र आदमी का आना उसे भी हैरत में डाल दिया था। फिर भी वह एकदम तैयार था कि आफत पड़ने पर कुँवरानी उसे ज्योंही पुकारे, वह दरवाजा तोड़ अन्दर जा घुसे।

थोड़ी ही देर बाद कमरे के अन्दर से कुँवरानी की हिचकियाँ लेने की आवाज आई।

तड़पकर वारिस दरवाजे के पास आया और धक्का देकर पुकारा—'हजूर क्या बात है? अन्दर आऊँ?....'

अन्दर से दरवाजा बन्द था।

आवाज आई—'बोलो मत वारिस! वहीं खड़े रहो...घबड़ाने की कोई बात नहीं....' स्वर कुँवरानी का ही था।

वारिस दरवाजे से हटकर पुनः टहलने लगा। कभी-कभी उसके कानों में कुँवरानी की हिचकी की आवाज आ जाती थी तो वह बेचैन हो उठता था। कमरे में क्या हो रहा है, इसे जानने का उसके पास कोई तरीका न था।

बड़ी देर बाद दरवाजा खुला और दोनों बाहर निकले। अँधेरे में भी वारिस की तेज आँखों ने कुँवरानी का अश्रुपूर्ण चेहरा देख लिया।

'इन्हें बाहर सड़क पर पहुँचा कर जल्द आओ...मैं यहीं खड़ी हूँ' कुँवरानी ने वारिस से कहा।

वह आदमी वारिस के साथ चला गया। कुँवरानी हृदय में अगम चिन्ता का भार लिए वहीं खड़ी रही।

वारिस थोड़ी ही देर में लौट आया। उतावली के साथ बोला—'बात क्या थी हजूर ?....आप रो रही थीं...'

कुँवरानी धीरे-धीरे वारिस से कुछ कहने लगी। वह बड़ी देर तक उसे कुछ समझाती रही।

सुनकर वारिस बोला—'आप खातिरजमा रखें कुँवरानी साहिबा ! वारिस की वफादारी में खुदा कसम कभी धब्बा नहीं लगेगा ..आपने जैसा कहा है, वैसा ही होगा....कोई जान भी नहीं सकेगा कि यह आदमी इतनी रात को आपसे मिलने आया था...'

कुँवरानी ने साड़ी की छोर से अपनी आँखें पोंछी, फिर कुँवर के कमरे की ओर चल पड़ी।

धीरे से दरवाजा खोलकर अन्दर आ गई। अब तक उसने अपने को सँभाल लिया था।

'कहाँ चली गई थी तुम ! देखो ललित सो गया ..' कुँवर बोला।

'आपने उसे डांट-डपट कर सुला दिया होगा ...'

कहकर कुँवरानी ने कमरे की बत्ती बुझा दी और आकर कुँवरानी के पास पलङ्ग पर लेट गई।

'क्या बात है कुँवरानी ? बाहर से आते ही बहुत गम्भीर हो गई हो ...' पूछा कुँवर ने।

'कोई बात नहीं....अब सो जाइये....'

'कोई बात जरूर है—तुम्हारी आवाज काँप रही है।'

'घबड़ाइये मत....जरा-सी कै हुई है..' कुँवरानी ने बहाना कर दिया।

'कै ?....' कुँवर बोला—'डाक्टर दास को बुलाऊँ ?....मेरी चिन्ता करते-करते तुमने तो अपना स्वास्थ्य खराब कर लिया कुँवरानी !....मैं अभी वारिस को भेजकर दास बाबू को बुलाता हूँ....'

कुँवर उठने लगा तो कुँवरानी ने रोक दिया। बोली—'अब तबीयत ठीक है। सोने से आराम मिल जायगा....'

'अच्छा !'

कुँवर तो आराम की नींद सो रहा, परन्तु कुँवरानी की वह रात जागते ही कटी। उस विचित्र आदमी के मिलते ही उसे जाने कौन-सी चिन्ता हो आई थी। सारी रात उसकी आँखों से आँसू बहते रहे, मगर उदासीन अचल को इसका क्या पता ?

• •

बैठकखाना खूब सजा है। दरवाजों और खिड़कियों पर सुन्दर परदे पड़े हुए हैं। एक कोच, चार कुर्सियाँ और एक बड़ी-सी मेज है।

मेज पर बैठा हुआ अचल कुछ लिख रहा है। यही उसका आफिस रूम है। आराम की सभी वस्तुएँ यहाँ हैं। परन्तु विलासिता की एक भी चीज मौजूद नहीं।

अचल अपने कार्य में पूर्णतया निमग्न है। अभी प्रातःकाल के आठ बजे हैं, परन्तु अचल को सबेरे ही स्नान-ध्यान करके अपने कार्य में लग जाने की आदत है।

कमरे की दो खिड़कियाँ खुली हैं, जिनसे प्रातःकाल की खुशनुमा धूप कमरे में आ रही है, हलके रङ्ग के परदों से छन-

छोड़कर। लम्बे चौड़े पहलवान वारिस ने वहाँ प्रवेश किया परन्तु अचल उसका आना न जान सका। वह सर झुकाये लिखता रहा।

'हजूर !....' वारिस धीरे से पुकारा।

तो कुँवर सजग हो गया। सर उठाकर बोला—'क्या है वारिस अली ?...'

'एक मेम साहिबा तशरीफ लाई हैं गरीबपरवर !...हजूर से मिलना चाहती हैं, इसी वक्त...' बोला वारिस।

'मेम साहिबा !' कुँवर आश्चर्य से बोला—'कौन हैं ?.... कुछ पूछा नहीं तुमने ?....मुझसे क्यों मिलना चाहती हैं ?'

'खुदा कसम ! उन्हें आज के पहले इस गरीब ने देखा तक नहीं था....कहती हैं हजूर से यह पहली मुलाकात है। दूर से आई हैं...बेहद हसीन, मुँह से मर्द को औरत बना देती हैं.... बोलती हैं—तुम्हारी बड़ी कुंवर अन्दर है ?'

कुँवर कुछ सोचने लगा फिर वारिस से बोला—'तुम उन्हें इज्जत के साथ अन्दर पहुँचाओ....'

'जो हुक्म !'

वारिस चला गया और कुछ ही देर के बाद एक एंग्लो-इण्डियन युवती के साथ वापस आया।

'यही हैं हजूर ?' कहकर वारिस चला गया।

कुँवर ने सर उठाकर उस युवती को देखा तो चौंक पड़ा। वह उसे पहचानता तो न था परन्तु उसकी सुन्दरता ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया था। उसने पहले कभी ऐसा नशीला सौन्दर्य नहीं देखा था।

'तशरीफ रखिए....' उसने युवती से नम्र भाव में कहा।

युवती मेज के सामने कुर्सी पर बैठती हुई बोली—'बड़ी कुँवर आपको ही बोलती ?....'

उसकी टूटी-फूटी भाषा कुँवर की समझ में जरा देर से आई।

बोला वह—'जी हाँ ! मैं ही बड़ा कुँवर हूँ...आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?....'

'I am orphan Sir !....' युवती बोली—'हमारी नाम मिस एनी रदरफोर्ड है but you may call me only Anne आपका तारीफ सुनकर हम बहुत दूर से आया है....हमको Service देगी आप ?'

'कैसी नौकरी चाहती हैं आप ?' कुँवर ने पूछा।

'हम आपका Private secretry होना चाहता है....'

'मुझे अफसोस है मिस एनी ! आपके लायक हमारे पास कोई काम नहीं...' कुँवर बोला।

'But please try....' एनी ने अपने सुन्दर चेहरे पर दुःख का भाव लाकर कहा और नशीली आँखों से कुँवर की ओर देखकर एक घातक कटाक्ष किया।

परन्तु सभी प्रकार के नशे से दूर रहने वाले कुँवर पर एनी की नशीली आँखों का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वह हिला तक नहीं।

बोला—'I am very sorry miss !'

'Never mind—' एनी ने कहा—'हमको एक कप चा पिलायेगी आप ? Really too tired I am...'

'कोई बात नहीं, मैं अभी चाय मँगाता हूँ....वारिस !....' पुकारा कुँवर ने वारिस को।

'हजूर...' कहता हुआ वारिस अन्दर आया।

एनी गौर से हट्टे-कट्टे वफादार नौकर की ओर देखने लगी, जिसकी बहादुरी की तारीफ वह अक्सर चंचल और जमुना से सुनती आई थी।

'चाय लाओ....' कुँवर ने आज्ञा दी।

वारिस चला गया। कुँवर फिर अपना काम करने लगा।

एनी गौर से देख रही थी।

तभी कमरे में चंचल ने प्रवेश किया। उसे देखकर एनी ने इस तरह मुँह फेर लिया जैसे वह उसे पहचानती ही नहीं।

'भैया, मुझे पांच सौ रुपया चाहिये....' चञ्चल बोला—'एक नया सूट सिलाया है...अरे, आप कौन हैं?....' एनी की ओर अनजानी दृष्टि से देखकर अपना वाक्य समाप्त किया चंचल ने—'इन्हें तो पहले नहीं देखा था...'

'आ चञ्चल! आप हैं मिस एनी रदरफोर्ड! नौकरी की तलाश में आई हैं...और मिस एनी! यह है मेरा छोटा भाई, कुँवर चञ्चल नारायण!' कुँवर ने कहा।

'ओह छोटी कुंवर! आपसे मिलकर बहुत खुश हुआ....' एनी ने भी पहले पहल मिलने का भाव प्रदर्शित किया।

'भैया!....' चञ्चल ने कहा—'मुझे पाँच सौ दोगे तो?.... नहीं तो कल दे देना....बहुत जरूरत है।'

'देखो चञ्चल! रुपयों के लिए तुम माताजी से कहो।'

'वे बिगड़ पड़ती हैं भैया! मैं उनसे नहीं कहता, तुमको अपने पास से देना पड़ेगा, नहीं तो मैं भाभी से माँग लूं...बोलो दोगे न?'—चञ्चल ने बनावटी हठ किया।

'दे दूंगा भाई, मेरा सर मत खा सबेरे-सबेरे....' कुँवर ने कुछ लिखते-लिखते कहा।

तभी चाय की ट्रे लिए हुए वारिस आ गया। एक गहरी नजर उसने एनी और चञ्चल पर डाली, फिर ट्रे मेज पर रख-कर बाहर चला गया चुपचाप।

'भैया! चाय तो तुम अधिक नहीं पीते...'

'मिस एनी के लिए मँगवाया है—'

'Oh, no-no, आपको भी चा पीनी पड़ेगी बड़ी कुँवर!.... मैं अकेला चा नहीं पीता....' एनी ने कहा।

'मैं भी पी लूंगा'—कुँवर बोला—'चञ्चल! चाय तैयार करो....'

चंचल ने चाय तीन प्यालों में ढाली ! कुँवर कुछ लिख रहा था। एनी के हाथ में कोई पुड़िया थी। चञ्चल ने कुछ इशारा किया। एनी के हाथ की पुड़िया झटपट खुल गई और उसमें का सफेद पाउडर एक प्याले में जा पड़ा।

अचल कुछ देख न सका। मगर बाहरी दरवाजे के परदे की ओट से झांकती हुई दो तेज आंखों ने सारा मामला देख लिया और तब परदे के पीछे गायब हो गयीं !

'लो बड़ी कुँवर ! चा पियो...' जहरीली चाय का प्याला कुँवर की ओर खिसकाती हुई बोली एनी।

कुँवर ने कलम रख दी और प्याला लेकर अपने आगे रख लिया। धीरे से प्याला उठाकर उसने अपने होठों की ओर बढ़ाया।

एनी और चञ्चल की आँखों में एक अजीब चमक दिखाई दी। दोनों का कलेजा धड़कने लगा, जोर-जोर से।

'हजूर !...' तभी तेजी से वारिस अन्दर घुसा। उसके हाथ में शीशे की एक गिलास थी, जिसमें दूध भरा हुआ था। वारिस को देखकर एनी और चञ्चल चौंक पड़े। शैतान कैसे बेवक्त आ पहुँचा !

कुँवर के होठों तक पहुँचा हुआ प्याला रुक गया।

बोला कुँवर—'क्या है वारिस !'

'हजूर, कुँवरानी साहिबा ने फरमाया है कि कड़ी चाय पीने से हजूर की सेहत पर खराब असर पड़ता है, इसलिए उसमें दूध ज्यादा मिलाकर पीयें। मैं दूध लेता आया हूँ सरकार ! प्याला इधर कर दें, थोड़ा डाल दूँ....'

'तुम लोग बराबर मेरे पीछे परेशान रहते हो....' कुँवर ने हँसकर कहा—'लो, डाल दो थोड़ा दूध....'

वारिस ने प्याला ले लिया और उसमें गिलास का दूध डालने लगा। एनी और चञ्चल एकटक वारिस की ओर देख

रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर इस शैतान नौकर का इरादा क्या है ?

'बस करूँ हजूर ! प्याला खुदा कसम, भर गया। तश्तरी में थोड़ा दूध डाल दिया है...बिल्कुल गरम है सरकार !'

'ठीक है, लाओ...' कुँवर ने प्याला लेने के लिये हाथ बढ़ाया।

वारिस ने लबालब भरा प्याला आगे किया।

तभी एकाएक उसका हाथ काँप गया और गर्म चाय का प्याला फर्श पर गिर कर कई टुकड़े हो गया। चाय इधर उधर बह चली। कुछ बूंदें छोटे कुँवर के कपड़ों पर भी जा पड़ीं।

वारिस ने लपक कर कुँवर का पैर पकड़ लिया। बोला—'माफ फरमायें गरीबपरवर ! बड़ी गुस्ताखी हो गई...'

'बड़ा लापरवाह है तू वारिस ! जा दूसरी चाय ला....' कुँवर ने कहा।

मगर चञ्चल को तो बेहद क्रोध चढ़ आया था, क्योंकि इस मनहूस नौकर ने उसकी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया था। वह गरज कर बोला –'बेहूदा कहीं का....एडीकेट जरा भी नहीं जानता बेवकूफ !'

'मैं क्या जानूँ पेटीकोट हजूर छोटे कुँवर साहब !....' वारिस बोला—'हाथ बेतरह हिल गया सरकार !....मैं माफी चाहता हूँ....अभी दूसरी चाय लाया....गलती तो सभी से होती है हजूर ! मैंने जान-बूझकर कोई गुस्ताखी नहीं की है....'

कहकर वारिस चला गया। एनी और चञ्चल आंखों में निराशा का भाव लिए बैठे रहे। तब तक वारिस दूसरी ट्रे लिए आ पहुँचा। इस बार वारिस ने खुद चाय बनाई और कुँवर को प्याला अपने हाथों से दिया। सब लोग चाय पीने लगे। वारिस वहीं खड़ा रहा।

चाय पीकर एनी उठ खड़ी हुई और बोली—'अब हम जाता है बड़ा कुँवर ! Thank you....'

साहब-सलामत के बाद एनी चली गई।

चञ्चल भी थोड़ी देर तक चुप रहा, फिर उठकर बोला—'भैया शाम तक पांच सौ दोगे न ?...नहीं-नहीं से काम नहीं चलेगा....मैं कल लेकर ही छोड़ूँगा....'

चञ्चल चला गया। कुँवर फिर लिखने लगा।

उसे क्या पता कि आज उसके वफादार नौकर की बदौलत ही उसकी जान बच पाई वर्ना चाय के प्याले में घुले हुए जहर को पीकर अब तक तो वह सदा के लिए सो गया होता। तीन घण्टे बाद वारिस ने पुनः प्रवेश किया। बोला—'गाँव का एक आदमी हजूर की खिदमत में हाजिर है...'

'किस गाँव का ?' कलम मेज पर रखते हुए कुँवर ने पूछा।

'रमजानपुर का....' वारिस ने कहा।

'भेज दो...'

मटमैले कपड़े पहने हुए एक ग्रामीण ने कुँवर के सामने पहुँचकर अदब के साथ अभिवादन किया !'

'क्या है भाई ! रमजानपुर में सब कुशल तो है ?' पूछा कुँवर ने।

'सब आपकी दया है अन्नदाता !...गरीब प्रजा उजड़ी जा रही है। दिन-दहाड़े लोगों को जाने जा रही हैं...' बोला ग्रामीण।

'बात क्या है ?....'

'रमजानपुर के पास का जङ्गल बहुत घना है मालिक !... आजकल एक चीते ने बड़ा उत्पात मचा रखा है। बारह आदमियों को वह अब तक फाड़ चुका अन्नदाता। हम ता हजूर की प्रजा हैं। फरियाद कर दिया, मालिक का जो हुक्म हा सो करें। दिन को भी खेत-क्यारी करना मुहाल हो रहा है सर-

कार ?....हम लोग कैसे जीयेंगे ? आप राजा हैं, आप ही का भरोसा हम गरीबों को है। आप ख्याल नहीं करेंगे तो कौन करेगा ?'

'ऐसा उत्पात उधर कभी नहीं होता था....' बोला कुँवर–'उस जङ्गल में भेड़िये और अजगर तो बहुत हैं मगर दरिन्दों की बात तो आज ही सुनी....'

'पहले ही पहल वह चीता कहीं से भटक कर आ गया है अन्नदाता ! अब तक तो आपकी किरपा से हम लोग बड़े मजे में थे, किसी बात का गम न था....अब तो जान के लाले पड़ गये हैं माई-बाप !'

'तुम जाओ....मैं कल तुम्हारे गांव आऊँगा....हांका करने के लिए कुछ आदमी तैयार रखना....'

'जुग-जुग जीओ माई-बाप ! बड़े सरकार से भी दयालु हो छोटे राजा !....' आशीर्वाद देता हुआ ग्रामीण चला गया।

'वारिस !...' कुँवर ने पुकारा।

'आया हजूर !....' वारिस आ खड़ा हुआ।

'इसे साफ करा दो....फर्श पर चाय गिर गई है, चीटियां लग जायँगी...' कुँवर ने कहा।

'खुदा कसम ! इन चीटियों के मारे तो जान परेशान हो जाती है हुजूर ! अल्लाह ने इन्हें पैदा किया तो इतना छोटा कि आँख से दीखती भी नहीं...मैं अभी फर्श साफ करा देता हूं सरकार !...तू-तू !....आ-आ, तू-तू...'

'तू-तू क्या कर रहा है ?'

'कुत्ता बुला रहा हूँ सरकार !...अल्लाह कसम, ये कुत्ते अपनी जीभ से जैसी सफाई कर देते हैं, वैसी गुलशन की झाड़ू भी क्या करेगी ?...तू-तू आ-आ...लीजिए आ गया एक...

'तू तो बेकार का काम किया करता है वारिस !...एक कपड़ा लेकर पोंछ दिया होता फर्श !' कुँवर ने कहा।

'इसे ही चाट लेने दीजिए हुजूर ! गरीब की जबान को

थोड़ा स्वाद ही मिल जायगा। इन कुत्तों को भी हम लोगों का ही तो सहारा है ..आ बेटा ? ले चाट चपाचप ..खुदा कसम, बड़ी मीठी चाय गिरी है फर्श पर....'

कुत्ता आगे बढ़कर फर्श पर गिरी हुई चाय चाटने लगा। पूरी सफ़ाई कर दी उसने। फिर वारिस उसका कान पकड़ कर बाहर घसीट ले गया।

कुँवर सोफे पर बैठकर एक पुस्तक पढ़ने लगा।

आधे घण्टे के बाद वारिस पुनः आया—'हजूर !....'

'क्या है वारिस ?' कुँवर ने पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ही पूछा।

'यह मर गया हजूर।'

'कौन ?....' कुँवर ने सर उठाकर देखा।

वारिस के हाथों पर वही कुत्ता था, जिसने थोड़ी देर पहले जमीन पर गिरी हुई चाय चाटी थी।

'कैसे मरा यह ?...' कुँवर ने पूछा आश्चर्य से।

'वही चाय चाटकर हजूर ! खुदा कसम ! आजकल लिपटन की चाय जहरीली होने लगी है ...हुजूर भी खाने-पीने में जरा होशियार रहा करें...'

'क्या बकता है वारिस ! जा कुत्ते को फेंककर अपना काम देख....'

कहकर कुँवर पुनः अपनी पुस्तक पढ़ने लगा।

वारिस थोड़ी देर तक मरे हुए कुत्ते को अपने हाथों पर लिए खड़ा रहा चुपचाप, इस आशा में कि कुँवर साहब सर उठायें तो वह अर्ज करे मगर कुँवर तो पुस्तक पढ़ने में इतना तल्लीन हो गया था कि उसने यह भी नहीं देखा कि वारिस गया या नहीं।

बेचारा वफादार वारिस अपने मालिक को शिष्टतापूर्वक एवं सप्रमाण यह बताने आया था कि उसकी चाय के प्याले में जहर था मगर लाचार होकर उसे वापस लौट जाना पड़ा।

• •

होटल के अपने कमरे में कोच पर चञ्चल और एनी बैठे हैं। सामने की कुर्सी पर जमुना भी उपस्थित है। छोटी-सी मेज पर सोडा और जिन की खाली बोतलें और गिलासें पड़ी हैं जिससे प्रकट होता है कि कुछ ही देर पहले तीनों ने मदिरा से अपनी प्यास बुझाई है। एनी आवश्यकता से अधिक गम्भीर हैं। चञ्चल और जमुना में बातें हो रही हैं।

जलती सिगरेट का धुआ खींचकर बोला चञ्चल—'काम बड़ी सफाई से हुआ था मगर कामयाबी न मिल सकी...एनी ने भैया के सामने ही जिस चालाकी से उनके प्याले में जहर मिलाया कि मैं तो आश्चर्यचकित हो उठा...मगर बेहूदे वारिस ने पहुँचकर सारी आशाओं पर पानी फेर दिया....शैतान ने दूध डालते-डालते हाथ से प्याला गिरा दिया।'

'वह बड़ा ही चालाक है कुँवर साहब !....उसने छिप कर सब कुछ देख लिया होगा ...बातैसी है कि....' जमुना बोला।

'नहीं जी, उसने देखा नहीं था....जिस समय एनी प्याले में जहर डाल रही थी, मैं चौकन्ना होकर चारो ओर देख रहा था....इत्तफाक से प्याला उसके हाथों से छूट गिरा....कुछ देख लिया होता तो भैया से जरूर बता देता वह...'

'अब क्या होगा ?....क्या इरादा ही छोड़ दिया जाय ?....'

'इतनी दूर आगे बढ़ कर अब यह नहीं हो सकता....हम कोशिश करते चलेंगे। देखें कब तक सफलता नहीं मिलती ?'

'अब क्या करने का इरादा है ? —जमुना ने पूछा !

'इरादे को मैंने कार्यरूप में परिणत भी कर लिया है.... जहर का मामला नाकामयाब होते ही मैंने दूसरा रास्ता सोच लिया....'

'तो मेरी मदद की जरूरत पड़ेगी शायद....'

'जरूर !....मैंने एक गरीब आदमी को अपनी तरफ मिला, सिखा-पढ़ाकर दोपहर को भैया के पास भेज दिया था ...उसने जाकर कहा कि रमजानपुर में एक चीते ने उपद्रव मचा रखा है .. सो अचल भैया कल रमजानपुर जायेंगे....समझे कुछ मेरी चाल ?....'

'बातैसी है कि मैं सब कुछ समझ गया छोटे कुँवर ! ... रमजानपुर के पास का जङ्गल बहुत घना है....बड़े कुँवर को शिकार के बहाने जङ्गल में ले जाकर अकेला छोड़ देंगे आप.... फिर एक ही गोली सारा काम कर देगी....है न !

'बिल्कुल ! .. मैं भी भैया के साथ जाने का हठ करूँगा.... तुम मेरी पिस्तौल लेकर छिपे-छिपे हमारा पीछा करोगे ...जङ्गल में मौका देखते ही तुम अपना निशाना साधना...मगर जरा होशियार रहना...दूर से कहीं मेरी ही खोपड़ी मत उड़ा देना....'

'मुझसे ऐसी गलती नहीं हो सकती छोटे कुँवर !...यद्यपि बड़े कुँवर का कद भी आप ही जैसा है और दूर से देखकर भ्रम का होना सम्भव है मगर जमुना की आँखें मीलों दूर की चीज देख लेती हैं....'

'फिर भी खूब होशियारी से काम करना....बाहर जाते समय हम दोनों भाई एक-सी ही पोशाक पहनते हैं, इसे न भूलना—पहले निश्चय करके तब गोली चलाना....'

'ऐसा ही होगा कुँवर साहब ! . जमुना की गोली छोटे कुँवर को कभी नहीं लग सकती, इसका आप विश्वास रखें...'

'तो अब चलना चाहिए....आठ बजे रात भैया माँ से मिलने आते हैं रोज ! आज वे उनसे रमजानपुर जाने की आज्ञा लेंगे... मेरा भी उपस्थित रहना जरूरी है....पौने आठ बज रहे हैं, अरे मिस एनी ! सो रही हो क्या तुम ?....'

'बातैसी है छोटे कुँवर कि मिस एनी को नशा कुछ तेज हो आया है...मुझे इन्हें इनके घर तक छोड़ने जाना पड़ेगा

शायद—एनी !....ओ मिस एनी ?'

'Don't disturb me rascal !....' एनी आँखें बन्द किये हुए ही बोली।

चंचल उठता हुआ बोला—'तुम इन्हें किसी तांगे पर पहुँचा देना....मैं कार ले जाता हूँ....'

होटल के बाहर आकर चंचल अपनी कार पर राजमहल को रवाना हो गया। रास्ते भर वह अनेक बन्दिशें बांधता रहा। रानी साहिबा चंचल को जितना डांटती थीं, उससे बढ़-कर उसे प्यार करती थीं, इसे चंचल जानता था ! तभी उस दिन बिगड़ा जाकर भी वह अपनी माँ से नाखुश नहीं हुआ था !

वह यह भी जानता था कि रानी साहिबा अचल को भी अपना ही बेटा समझती हैं तभी तो वह चंचल का कुछ ख्याल न करके अचल को रियासत सौंपना चाहती हैं।

अपनी माँ से मतैक्य न होने पर भी चंचल को रानी साहिबा पर क्रोध न था। उसका सारा क्रोध अचल पर था, जो उसका बडा भाई बनकर पैदा हुआ था और सौतेला होने पर भी जिसके अधिकार में सारी रियासत चली जाने वाली थी। चंचल दृढ़ प्रतिज्ञ था। वह राजा बनना चाहता था। उसके रास्ते में जितनी बाधायें थीं, उन्हें वह शीघ्र से शीघ्र दूर कर देना चाहता था। अचल, कुँवरानी, ललित और अवसर आने पर यदि रानी साहिबा की सख्ती भी बाधा बनी तो उन्हें भी निर्दयतापूर्वक दूर करने में चंचल को संकोच न था, चाहे जिस तरह हो, वह सम्पूर्ण राज्य पर अधिकार करना चाहता था।

राजमहल आ गया।

रानी साहिबा के महल के सामने कार रुकी। चंचल उतर कर अपनी माँ के कमरे की ओर चला। हाथ की घड़ी पर नज़र डाली तो आठ बजकर पांच मिनट बीत चुके थे।

वक्त का पाबन्द अचल ठीक आठ बजे रानी साहिबा से मिलने आ गया था। इस समय वह उनके सामने कुर्सी पर बैठा बातें कर रहा था। रानी साहिबा पलङ्ग पर तकिये के सहारे बैठी थीं। चञ्चल दरवाजे के बाहर रुककर अन्दर की बातें सुनने लगा।

'माताजी आपका कहना ठीक है ...' अचल कह रहा था—'मगर हमें अपनी जान बचाकर प्रजा का रोना नहीं सुनना चाहिए... गांव का जो आदमी यह समाचार लेकर आया था, उसकी बातें आप सुनतीं तो रो पड़तीं। चीते के डर से लोगों का आना-जाना बन्द हो गया है। पता नहीं कब किस पल वह भयानक पशु हमला कर दे....'

'ऐसा तो होता ही रहता है बेटा! जङ्गली गांव है.... जानवरों का डर बना ही रहेगा...इस बात की फिक्र हम लोग कब तक करते रहेंगे ?...राजा साहब शिकारी थे। वे होते तो मुझे जरा भी डर न लगता मगर तू तो अभी नादान है अचल, चीते का मुँह भी कभी देखा नहीं होगा....मैं कैसे तुझे जाने की आज्ञा दे दूँ ?....'

'आज्ञा तो देनी ही पड़ेगी माताजी !....' बोला अचल—'मैं उस आदमी से कल आने का वादा कर चुका हूँ।'

'तू अपने मन का वादा क्यों करता है रे अचल ? मैं क्या मर गई थी ?... उसे हमारे पास क्यों नहीं भेजा ?...' रानी साहिबा ने मीठी झिड़की दी।

'आपके पास भेजता तो आप मेरी जान के खौफ से उसे टका-सा जवाब दे देतीं....गाँव वाले बहुत कष्ट में हैं माताजी ! विश्वास कीजिए...गांव हमारी रियासत में है। हम वहाँ की मालगुजारी वसूल करते हैं तो वहां के लोगों का दुख-दर्द कौन सुनेगा ? आप सोचिये तो—पिताजी होते तो क्या चुपचाप उनका कष्ट देखते ?...'

'उनकी बात क्या कहता है रे अचल?' रानी साहिबा बोलीं—'उनकी आँखों में वरदान भरा था....जिसकी ओर देख लेते थे, उनका सारा दुःख दूर हो जाता था... तू तो अभी अबोध है... एक वह चञ्चल का बच्चा है, कही सिनेमा में बैठा हुआ नाच-गाना सुन रहा होगा...उसे तो जैसे किसी की कोई फिक्र ही नहीं... राजा का बेटा बनते हैं।

'राजा का बेटा आ गया माँ !....चञ्चल का बच्चा ! भीतर प्रवेश करते हुए कहा चञ्चल ने।

'देखा अचल ? इसे छिपकर बातें सुनने की आदत पड़ गई है। न जाने कब से बिल्ली की तरह दुबका हुआ दरवाजे के बाहर खड़ा था !'

'बिल्ली की तरह नहीं माँ, मैं तो छिपकली की तरह दीवार से चिपका हुआ था...' कहता हुआ चञ्चल रानी साहिबा के पास आ बैठा—'मैंने सब सुन लिया है....मैं भी अचल भैया के साथ जाऊँगा... अकेले अचल भैया को मत जाने दो माँ...'

'तुम दोनों मेरा दिमाग खराब कर दोगे...जाओ जो मन में आये करो....'

'लो अचल भैया ! माँ ने आज्ञा दे दी....अब जाकर चटपट तैयारी कर डालो...सबेरे-सबेरे ही चल देंगे हम लोग....' चंचल बोला।

'आप क्या कहती हैं माताजी ! तो कल जाऊँ मैं ?.... चञ्चल की बातों का ख्याल मत करें...आप जो कहेंगी, वही मैं करूँगा... हमारे न जाने से प्रजा दिन पर दिन दुखी होती जायगी। आपकी आज्ञा पर ही रमजानपुर की जनता का सुख-दुख निर्भर है....'

'प्रजा के सुख-दुख का ख्याल मुझे है अचल !....रानी बन कर सोचती हूँ तो प्रजा का दुख आँखों के सामने नाच उठता है...परन्तु माँ का हृदय बेटे को चीते के आगे जा पड़ने की

आज्ञा नहीं देना चाहता...तुम लोग जाना चाहो तो जा सकते हो—परन्तु अपने को सुरक्षित लौटा लाने का वचन दो मुझे.... मैं प्रजा के लिए अपने बेटों को खोना नहीं चाहती...' रानी साहिबा ने कहा।

'मैं तो अपने को लौटा लाऊँगा माँ....एकदम सुरक्षित....' चंचल बोला—'मगर अचल भैया को समझा दो तुम ...कहीं जंगल की शोभा देखते-देखते ये वहीं न रह जायँ....प्रकृति की छटा इन्हें बहुत प्यारी लगती है माँ, जानती तो हो...'

'तो हम लोग कल सबेरे प्रस्थान करेंगे...ठीक है न माँ...'

'तू बार-बार मुझसे क्या कबूल करवाता है रे अचल !.... चले जाना कल और परसों ही लौट आना....'

इसके बाद अचल उठ खड़ा हुआ और रानी साहिबा का पैर छूकर कमरे से बाहर हो गया।

चंचल भी अपने महल को चला गया।

• •

'तुमको शक हो गया है कुँवरानी !...' अचल ने पलंग पर लेटे-लेटे ही कहा।

'शक नहीं हुआ है मुझे....बात बिलकुल सत्य है....' अचल के पास बैठी हुई कुँवरानी बोली।

'कैसे मान लूँ मैं तुम्हारी बात कविता !....चंचल लाख बुरा है मगर अपने भाई की जान का भूखा वह नहीं हो सकता...इन्सान अपने भाई को जहर देने की कोशिश करे, यह बात मैं सोच भी नहीं पाता कभी...और तुम कहती हो कि सुबह जो चाय पी रहा था, उसमें जहर था...'

'मैं ठीक कह रही हूँ, मगर आप मानते नहीं...वारिस ने

प्याला तोड़ा न होता तो गजब हो गया होता....'

'मगर चाय का प्याला तो वारिस से अनजान में ही टूट गया था और उसके लिए उसने माफी भी बहुत माँगी थी...'

'माफी तो सिर्फ दिखाने के लिए माँगी थी उसने....वास्तव में जान-बूझकर ही उसने प्याला नीचे गिराया था... उसने उस लड़की को आपके प्याले में कुछ डालते हुए अपनी आँखों से देखा था।

'और मैंने क्यों नहीं देखा ?'

'आप सर झुकाये लिख रहे थे...दोस्त-दुश्मन को पहचानने की कोशिश किया कीजिये कुँवर साहब !'

'तुम कहती हो, उस लड़की ने जहर मिलाया....मगर वह तो पहले-पहल आई थी मेरे पास... उसको मुझसे क्या दुश्मनी हो सकती है ?'

'आपके पास पहली बार आई रही होगी मगर चंचल की वह गहरी दोस्त है....होटल में रोज दोनों मिलते हैं...' कुंवरानी ने कहा।

'तुम्हें कैसे मालूम ?'

'वारिस ने पता लगाया है...'

'तुम और वारिस, दोनों का दिमाग खराब होता जा रहा है'—अचल बोला—'कभी कोई मुझ पर हमला करता है, कभी कोई मुझे जहर देता है, यही तुम दोनों सोचा करते हो....मगर तुम्हारी इन शिकायतों का कोई सबूत मिल नहीं पाता....बिना किसी पक्के सबूत के मैं तुम लोगों की बात पर विश्वास कर लूँ कविता ?'

'आप सबूत को देखकर भी तो समझ नहीं पाते।'

'मुझे सबूत किसने दिया ?'

'आज सबेरे वारिस ने कुत्ता नहीं दिखाया था आपको ?'

'कैसा कुत्ता ?'

'जो फर्श पर गिरी चाय को चाटने के बाद ही मर गया था...'

'ओह ! दिखाया तो था....'

'और आपने देखकर भी कुछ नहीं समझा....उल्टे बेचारे वारिस को डांट दिया...'

'मगर कविता ! मैं कैसे मान लूं कि वह कुत्ता चाय के जहर से ही मरा ?....पहले से ही उसे बीमारी रही होगी....'

'मैं कैसे समझाऊं आपको ?' कुँवरानी परेशान होकर बोली—'दुनिया में सीधे आदमियों की गुजर नहीं और आप तो बहुत ही असावधान हैं....कभी आप पर कोई आफत आ गई तो मैं कहां जाऊंगी ?...'

'बार-बार आफत का नाम ले रही हो तुम....' बोला कुँवर—'मगर वारिस के अतिरिक्त और भी कोई गवाह है तुम्हारे पास ?'

'वारिस जैसे स्वामिभक्त नौकर की हर बात विश्वासनीय है। कोई कारण नहीं कि आप उसकी गवाही की उपेक्षा करें... बेचारा वारिस जो अपने मालिक के पीछे पागल है....जो उसके दर्द से परेशान है, उस पर अविश्वास करना मनुष्यता को धोखा देना है, उसकी नमकहलाली का उपहास करना है....'

'वारिस की तारीफ रहने दो कुँवरानी !...मैं जानता हूं कि वारिस तुम्हारे खिलाफ कभी नहीं जा सकता....' कहते-कहते अचल का स्वर गम्भीर हो गया।

उसकी गम्भीरता कुँवरानी से छिपी न रही। उसके आखिरी वाक्य में जो अप्रकट व्यङ्ग छिपा था, वह भी कुछ-कुछ समझ गई वह। बोली—'वारिस केवल मेरा ही नौकर नहीं....मैं तो कुछ ही सालों से यहां आई हूं...वह तो आपके यहां बचपन से है। उसे जितना आपने पढ़ा होगा उतना मैंने नहीं....'

'मगर तुमने जो उसे अपने वश में कर लिया है....'

कुँवरानी चौंक पड़ी—'क्या कहते हैं आप ?'

कुँवर गम्भीर स्वर में बोला—'ठीक ही तो कह रहा हूँ, तभी जब रात में तुमसे कोई मिलने आता है तो वारिस चुपके चुपके तुम्हें बुला ले जाता है... और तुम भी बाहर जाने लगती हो तो मेरे कमरे का दरवाजा बाहर से बन्द करती जाती हो... मगर वह खिड़की बन्द करना शायद तुम भूल ही जाती हो....'

कुँवरानी का चेहरा थोड़ी देर के लिए पीला पड़ गया। मगर अपने को सँभाल कर बोली—'तो आप सब कुछ जान चुके हैं ?'

'सब कुछ तो नहीं...' कुँवर ने कहा—'उस खिड़की से निकलकर मैंने केवल यही देखा कि तुम किसी आदमी के साथ बैठकखाने में कुछ देर तक अन्धकार में रही और वारिस बाहर खड़ा पहरा देता रहा...सुन नहीं सका मैं कुछ। मगर इतना देखना क्या काफी नहीं था कुँवरानी ? कब की दोस्ती थी उससे तुम्हारी ?....'

'आप कैसी बातें कर रहे हैं आज ?'

'केवल अपनी शङ्का का समाधान करना चाहता हूँ मैं.... तुम्हारा पति हूँ न, इतना अधिकार तो मुझे है ही...बताना न चाहो तो मेरी ओर से कोई जबरदस्ती नहीं... तुम घबरा उठी हो बहुत...'

'आपने यह बात ऐसे ढङ्ग से उपस्थित की है कि मैं परेशान हो उठी हूँ, मैं तो स्वयं ही इसे आपको बताना चाहती थी...'

'अच्छा। इतना साहस है तुममें !....' बनावटी आश्चर्य के साथ अचल ने कहा—'अपने गुप्त प्रेम की बात अपने पति के सामने साहसपूर्वक प्रकट करने की यह घटना शायद नारी-जाति के इतिहास में पहली ही है...तुम कहो, मैं सुनूँगा....'

'आपको शक हो गया है...'

'आँखों से देखने पर विश्वास होता है कविता ! शक नहीं....'

'आपको कोई सन्देह था तो रात में ही आपने मुझसे क्यों नहीं पूछा ?....आपको इस खामोशी का मुझे बहुत दुख है....'

'दुख तो मुझे भीबहुत हुआ, अपनी पत्नी को अँधेरे कमरे में एक अनजाने पुरुष के साथ काफी देर तक रहते देखकर, मगर मैं खामोश रहकर इस बात का पता लगाना चाहता था....इस समय अनायास ही मेरे मुँह से यह बात निकल आई....क्षमा करना....'

'वह आदमी अनजान नहीं था...' कुँवरानी ने कहा।

'हाँ तुम तो उसे बहुत पहले से जानती रही होगी, तभी तो वह तुमसे मिलने आया था, सो भी रात को छिपकर...'

'मैं जानती ही हूँ, और उसे आप भी कम नहीं जानते...' उम्र भी उसकी कुछ कम नहीं, मेरे पिता के बराबर है...'

'कौन था वह ?...' शान्त स्वर में पूछा कुँवर ने।

'डाक्टर !'

'कौन डाक्टर ?'

'दास बाबू....'

कुँवर और भी गम्भीर बन गया—'वे इतनी रात को छिपकर क्यों आये थे ? और तुमसे ही मिलकर क्यों चले गये ?'

'उन्हें अपनी जान का खौफ था....और मुझसे ही केवल इसलिए मिले कि आप उनकी बातों का विश्वास न करते....'

'किन बातों का ?'

'शाम को चञ्चल, जमुना और वह लड़की उनके यहाँ गये थे और उन्हें डरा-धमका कर एक पुड़िया जहर ले आये....दास बाबू मुझे सावधान करने आये थे, उसी के फल स्वरूप आज सुबह वारिस ने आपकी जान बचाई....'

'उलझन बढ़ती जा रही है....' हैरान स्वर में कहा अचल ने—'खैर, वापस आकर डाक्टर से मिलूँगा....'

'कहाँ से वापस आकर ?....क्या आप कहीं जा रहे हैं।'

'हाँ !....मुझे कल सबेरे रमजानपुर जाना है। वहाँ एक चीते ने उपद्रव मचा रखा है....माताजी की आज्ञा ले चुका हूँ....'

'मैं भी साथ चलूँ ?'

'नारी का साथ सेज पर ही अच्छा लगता है कुँवरानी !' इस बार अचल जरा हँसकर बोला —'लड़ाई के मैदान में तो मर्दों का कलेजा काम करता है....'

'तो वारिस को अपने साथ ले जाइए....वह तो मर्द है न !....'

'चञ्चल तो मेरे साथ रहेगा ही....'

'चंचल !....' कुँवरानी पुनः चौंक पड़ी—'वह किस काम से जा रहा है ?....'

'मेरा साथ देने....'

'साथ देने के लिए क्या कोई दूसरा आदमी नहीं मिल सकता ?....'

'मिल तो सकता है मगर भाई का साथ अधिक विश्वसनीय होता है....'

'आपको अब भी मेरी बातों पर विश्वास नहीं हुआ ?....' कुँवरानी दुखित स्वर में बोली।

'कल मुझे जाना जरूरी है, नहीं तो रुककर तुम्हारी बातों की सत्यता का प्रमाण खोजता....अब लौटकर ही छान-बीन करूँगा....चंचल का जाना सुनकर अगर तुम्हें मेरी जान का डर हो आया हो तो मैं तुमको वचन देता हूँ कि पूर्ण सावधान रहूँगा....'

इसके बाद कुँवरानी कुछ नहीं बोली। ललित को एक ओर खिसकाकर वह चुपचाप पलङ्ग पर लेट गई।

वह बहुत दुखी थी इस समय। विवाह के पश्चात् आज पहले-पहल ही अचल को उस पर शंका हुई थी। शंका भी तो गुप्त-प्रेम की। बेचारी कुँवरानी अचल को कैसे विश्वास दिलाये ?

रात में जब डाक्टर दास उससे छिपकर मिलने आये और उसने उनसे अचल को जहर देकर मार डालने के षड्यन्त्र की बात सुनी तो वह अपने पति की विपत्ति का ख्याल कर रोने लगी थी। वृद्ध डाक्टर ने जब बहुत समझाया, तब जाकर कहीं रोना बन्द हुआ!

मगर अचल को तो इन बातों पर विश्वास ही नहीं है। उसे कुंवरानी पर शङ्का है और पति की शङ्का पत्नी के लिए कितनी घातक हो सकती है, इसे कुंवरानी जानती है!

● ●

रमजानपुर रामगढ़ रियासत के अन्तर्गत एक छोटा-सा गाँव था जो एक भयानक जङ्गल के किनारे बसा हुआ था। वहाँ के निवासी कृषक थे, जो आस-पास की जमीन जोत-बो कर अपनी जीविका चलाते थे। रमजानपुर के आस-पास भी कई गाँव थे। रामगढ़ के स्वर्गीय राजा साहब अच्छे शिकारी थे। वे अक्सर रमजानपुर शिकार खेलने के लिए आया करते थे।

रमजानपुर में उन्होंने एक छोटा-सा बङ्गला भी बनवा लिया था, जहाँ वे शिकार के लिए आकर ठहरा करते थे।

राजा साहब के मरने के पश्चात् अब तक वह बँगला उजाड़ पड़ा हुआ था। परन्तु आज उसकी सफाई हो गई है। बड़ी चहल-पहल दिखाई पड़ रही है वहाँ।

अचल और चंचल कुर्सियों पर शिकारी पोशाक पहने बैठे हैं। दोनों के बदन पर एक ही रङ्ग की पोशाकें हैं। बगल में दो बन्दूकें भी रखी हैं। सामने ही दस बारह किसान खड़े हैं, हाथ जोड़े हुए अदब के साथ।

'तो तुम लोगों में से कोई भी हमें इत्तला करने नहीं गया?....' अचल ने पूछा!

'नहीं सरकार !....' एक किसान बोला—'हमें कोई तक-लीफ होती, तब तो हजूर को खबर देते ?....यहाँ तो सब राजी-खुशी है अन्नदाता !....'

'और वह चीते के उत्पात को खबर....' चंचल ने पूछा।

'एकदम झूठ है माई-बाप !....यहाँ से तो कोई खबर लेकर नहीं गया....किसी बदमाश ने बेकार हजूर लोगों को परेशान किया....' बोला किसान।

'अजीब बात है !'—अचल आश्चर्य से बोला—'उस आदमी को हमें यहाँ व्यर्थ बुलाने से क्या मिला ?...तुम लोग गाँव के सभी आदमियों को यहाँ बुलाओ। मैं पहचानूंगा कि कौन यह झूठी खबर लेकर मेरे पास गया था....'

'जो हुक्म अन्नदाता...'

थोड़ी ही देर बाद गाँव के सभी आदमी बारी-बारी से अचल के सामने आने लगे।

सैकड़ों आदमियों को देखकर भी अचल ने उस आदमी को नहीं देखा, जिसने यह झूठी खबर दी थी।

'अब कोई नहीं बचा है सरकार !'—एक किसान ने कहा।

'सब आ गये मेरे सामने ?'

'हाँ, हजूर !'

अचल परेशान होकर कुछ सोचने लगा। चंचल बोला—'जाने दो भैया ! किसी मसखरे का काम था यह....'

'मगर अजीब था वह आदमी चंचल ! इस तरह से गिड़-गिड़ा कर बोल रहा था, जैसे सचमुच ही गाँव पर बहुत बड़ी आफत आ गई हो ! उसके चेहरे से जरा भी बनावटीपन नहीं टपक रहा था...खैर, आज रात तो मैं यहीं रहूँगा ! शाम को एक बार फिर सब आदमियों को देखूंगा....उस आदमी का चेहरा अब भी मुझे याद है....'

'अब आराम करें भैया !....' बोला चंचल।

'आराम तो नहीं करना चाहता चञ्चल ! सोचता हूँ जङ्गल में चलकर कुछ हिरन या सुअर आदि का शिकार ही करूँ.... चलोगे तुम ! बेकार यहाँ बैठकर क्या किया जायगा ?....'

'चलिए, शिकार के लिए ही तो मैं साथ आया हूँ....' चञ्चल अपने दिल की खुशी छिपाकर बोला।

वह तो स्वयं ही प्रस्ताव रखने वाला था परन्तु अचल पहले ही प्रस्तुत हो गया। चञ्चल का रास्ता अपने आप साफ होने लगा—'तो कब चलोगे भैया ?'

'बस बन्दूक उठाओ और पैदल ही चल दो....बेचारे गाँव वालों को छुट्टी दे दो और शोफर से कहो कि कार उधर लाकर धो डाले और सफाई कर ले....रास्ते की धूल से एकदम भर गई है....'

चञ्चल बाहर चला गया और थोड़ी ही देर बाद लौट कर बोला—'चलो भैया, सब ठीक कर दिया है....'

'कारिन्दा से कह दो चञ्चल कि हम लोग शाम को लौट खुद शिकार पकायेंगे....सामान सब तैयार रखे....'

'मैंने कह दिया है भैया ! अब चलो। दोपहर होने को आई....अब देर करना ठीक नहीं....'

अचल उठ खड़ा हुआ। बन्दूक उठाकर बाहर निकला और धूल भरी पगडण्डी से पैदल ही जङ्गल की ओर रवाना हुआ। चञ्चल अपनी बन्दूक लिए उसके पीछे-पीछे चला।

इस समय उसके हृदय में अनेक प्रकार की भावनाएँ उदित हो रही थीं। आज अचल को समाप्त करने का दृढ़ सकल्प कर लिया था उसने। सुनसान जङ्गल के बीच जो अमानुषिक कार्य होगा, उसकी गवाही कोई भी नहीं दे सकेगा। चञ्चल का काम भी बन जायगा और वह बेदाग निर्दोष भी प्रमाणित होगा।

'मैं ठीक पीछे हूँ भैया ! बढ़े चलो....सूरज सर पर आ गया है....'

अचल तेज चलने लगा। कुँवरानी को अपने सावधान रहने का वह जो वचन दे आया था, उसे भूल गया। चञ्चल पर उसे तनिक भी शङ्का नहीं थी। भोला-भाला अचल तेज पैरों से जङ्गल में चला जा रहा था।

काफी देर तक चलते रहे दोनों। गांव चार मील पीछे छूट चुका था। इधर का जङ्गल बहुत घना था! जानवरों के पैरों द्वारा बनी हुई लीक पर दोनों चले जा रहे थे। आस-पास दीर्घाकार वृक्ष और घनी झाड़ियाँ थीं।

अब तक उनकी दृष्टि में कोई जानवर न पड़ा था, जिसका वे शिकार करते। चलते-चलते चञ्चल की दृष्टि कुछ दूर की झाड़ी के पीछे जा पड़ी।

'तुम चलो मैं उस झाड़ी से थोड़ी-सी बेर चुन लूँ....देखकर तबीयत ललच गई है....ज्यादा नहीं, दस-बीस तोड़ूँगा सिर्फ....'

'तोड़ लो....' कहकर अचल ने पैरों की गति धीमी कर दी और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

चञ्चल उस झाड़ी की ओर आगे बढ़ा, जिसमें पकी हुई लाल-लाल बेरें दिखाई पड़ रही थीं। वह बेर तोड़ने लगा। थोड़ी ही देर बाद धीरे से बोला—'जमुना!....'

झाड़ी के पीछे से एक हलकी-सी आवाज आई—मैं तैयार हूँ छोटे कुंवर!....बातैसी है कि पिस्तौल मेरे हाथों में मुस्तैद पड़ी है....गोली चलाऊँ क्या? बड़े कुँवर यहाँ से साफ दीख रहे हैं....'

'अभी नहीं....और घने जङ्गल में पहुँच कर तब पिस्तौल उठाना....'

'मगर छोटे कुँवर! आप दोनों साथ रहेंगे तो मैं दूर से पहचान न सकूँगा....एक-सा कपड़ा पहन रखा है....मैं बहुत दूर से आपके पीछे पड़ा हूँ, मगर जब-जब आप दोनों को देखा है, तब-तब बातैसी है कि मैं संशय में पड़ गया हूँ....'

'मैंने तो पहले ही कह दिया था....' चञ्चल बोला।

'मगर मुझे विश्वास नहीं था कि मेरी आँखें इतनी बेकाम हो जायेंगी....'

'नजदीक से निशाना लगाने पर भैया तुम्हें देख सकते हैं... खैर, मैं आगे चलकर किसी चट्टान पर सुस्ताने के लिए भैया के साथ बैठ जाऊँगा....थोड़ी देर बाद किसी बहाने से उठकर मैं कुछ दूर चला जाऊँगा, तब तुम चट्टान पर बैठे हुए आदमी को अपना लक्ष्य बनाना.. समझ गये ?....'

'ठीक है....' झाड़ी के पीछे वही धीमी आवाज सुनाई दी।

पास की ही दूसरी घनी झाड़ी के आँचल से बाहर झाँकती हुई दो प्रज्वलित आँखें उधर देख रही थीं, मगर चंचल या झाड़ी के पीछे छिपे हुए जमुना, दो में किसी की दृष्टि उधर नहीं पड़ी।

जब चंचल बेर तोड़कर उधर चला, जिधर अचल जा रहा था तो वे आँखें उस झाड़ी में घुसकर गायब हो गईं।

जमुना भी हाथ में पिस्तौल लिए तीन सौ गज के फासले पर दोनों कुँवर का पीछा करने लगा।

चंचल तेज चलकर अचल के पास पहुँच गया।

'बड़ी देर कर दी चंचल ?'

'झाड़ी में काँटे बहुत थे भैया !....अकेले डर लगता था क्या ?....' कहकर चंचल हँसा।

'नहीं तो....मगर ऐसे भयानक जङ्गल में दोनों का साथ रहना आवश्यक है....अभी तक कोई जानवर भी दिखाई नहीं पड़ा...'

फिर दोनों चुपचाप आधे घण्टे तक तेजी के साथ चलते रहे। अब जङ्गल काफी घना हो चला था। झाड़ियाँ तो इतनी अधिक थीं कि दो-चार हाथ आगे देख सकना भी मुश्किल था।

एक चट्टान की ओर इशारा करता हुआ बोला चंचल— 'थकावट आ गई अब तो भैया, इस चट्टान पर आओ थोड़ी देर बैठ लें...'

अचल कुछ बोला नहीं। चुपचाप चंचल के साथ चट्टान पर जा बैठा।

'बड़ा घना जंगल है !...' चंचल बोला।

'और भयानक भी....मगर कितना खुशनुमा लगता है यह जंगल ! कितना शान्त ! कितना नीरव ! यहाँ तक कि चिड़ियों को भी जबान नहीं कि बोल सकें....'

कहकर अचल चारों ओर आँखें घुमाकर जङ्गल की शोभा देखने लगा। चट्टान से दस गज दूर की एक झाड़ी पर अचल की आँखें रुकीं, फिर आगे बढ़ गईं। मगर थोड़ी ही देर बाद फिर वहीं लौट आयीं। झाड़ी के पीछे कोई था।

अचल सावधान हो गया। उसने गौर से झाड़ी की ओर देखा। छिपकर कोई खड़ा था और अचल को अपने पास आने का इशारा कर रहा था।

अचल ने कुछ कहना चाहा तो उसने चुपचाप अपने पास आने का इशारा किया। अचल बहुत परेशान हो उठा। इधर कैसी घटनाएं हो रही हैं कि उनका तारतम्य अचल कहीं से जोड़ नहीं पाता।

वह धीरे से उठने लगा।

'कहाँ भैया !...'

'अभी आया चंचल ! लघुशंका करके....'

कहकर अचल झाड़ी की ओर बढ़ा।

उसे आते देखकर वह आकृति झाड़ी में जा छिपी।

चंचल को कुछ शङ्का नहीं हुई। अचल इतना चतुर होगा, इस पर उसे कभी विश्वास नहीं था। वह चुपचाप चट्टान पर बैठा रहा। यह भी उसे याद नहीं रहा कि उसने जमुना से क्या कहा है ? उसने कहा था कि अचल के साथ एक चट्टान पर जा बैठेगा, फिर स्वयं किसी बहाने उठ जायगा, तब जमुना अचल पर गोली दागेगा।

मगर यहाँ तो अचल ही उठकर चला गया था और चंचल चट्टान पर सोचता हुआ बैठा था।

वहाँ से लगभग ३०० गज दूर की झाड़ी में छिपकर बैठे हुए जमुना ने अचल को उठकर जाते देखा तो उसने समझा कि अपने कथनानुसार चंचल ही उठकर चला गया है और चट्टान पर बैठा हुआ व्यक्ति अचल है। उसने पिस्तौल उठाई।

इधर चंचल के पास से उठकर अचल उस झाड़ी के पीछे पहुँचा तो वह चौंककर बोल उठा—'वारिस तुम...'

वारिस ही था वह। बोला—'हाँ, हुजूर मैं ही हूँ....'

'यहाँ क्यों आये ?....'

'कुँवरानी साहिबा ने मुझे आपके पीछे-पीछे भेजा है हुजूर!....खुदा कसम इस वक्त आपकी जान बेहद खतरे में है...'

'क्या बकते हो तुम।'

'आहिस्ता बोलिए हुजूर!....इधर आइये ...' कहकर वारिस ने अचल का हाथ पकड़ लिया और खींचता हुआ कुछ दूर ले गया।

पीपल का सघन पेड़ था, जिसके चारों ओर आदमकद ऊँची झाड़ियाँ थीं। वहाँ पहुँच कर वारिस बोला—'यहीं रुककर अब देखिये क्या होता है? ..इस दरार में रहिए हुजूर! वह सामने छोटे कुँवर बैठे हैं ..देखते चलिए, अभी आप को समझ में सब कुछ आ जायगा ...अपने को छिपाये खड़े रहिए ... मैं जरा उधर जाकर जमुना को देख लूँ ...खुदा कसम? वह शैतान हाथ में पिस्तौल लेकर छिपे-छिपे आया है ..'

बन्दूक कन्धे पर रखे वारिस चल पड़ा! आश्चर्यचकित अचल उसी पीपल के पेड़ के नीचे खड़ा रहा। छिपते-छिपते सौ कदम की दूरी पर जाकर वारिस की निगाह जमुना पर पड़ी। वह वहीं छिपकर उसकी गतिविधि देखने लगा! जमुना ने चट्टान पर बैठे हुए व्यक्ति को अचल समझा था और उसकी ओर

निशाना साधकर उसकी पिस्तौल तन चुकी थी। दूसरे ही क्षण धायँ की आवाज हुई! जमुना के हाथ से पिस्तौल की गोली मौत बनकर छूटी—और तुरन्त ही सारा जंगल चंचल की चीख से गूँज उठा।

वारिस के मुख से खुशी की हल्की आवाज निकली। उसने अपने मालिक की जान बचा ली थी और दुश्मन की गोली खुद दुश्मन को ही जा लगी थी।

चंचल की चीख सुनकर जमुना को अपनी गलती मालूम हो गई। वह उठकर चंचल के पास जाने लगा। तभी एक और जोरदार चीख सुनाई पड़ी, जो अचल के गले की थी।

वारिस चौंक पड़ा। अचल की चीख ने उसका सारा शरीर कँपा दिया। वह दौड़ पड़ा उस पीपल की ओर, जहाँ अचल को खड़ा छोड़ आया था। अचल के मुख से लगातार तीन चीखें सुनाई दीं और तब सन्नाटा छा गया।

वारिस सरपट भाग रहा था उस पीपल की ओर। तभी जमुना की दृष्टि वारिस पर जा पड़ी। वह समझ गया कि इन सारी खुराफातों की जड़ वारिस ही है। वह भी दौड़ा वारिस के पीछे।

वारिस दौड़ता हुआ जब उस पीपल के पास पहुँचा तो वहाँ का दृश्य देखकर उसका शरीर भय से काँप उठा।

उसके मुख से निकला—'या खुदा! तेरी मेहरबानी!... जिसे तू मारना चाहे, उसे जिलाने की ताकत वारिस में नहीं ... रहम कर अल्लाह!...'

एक अजगर था, भयानक तने जैसा मोटा!

पीपल के पीछे से निकलकर उसने अचल का सर अपने मुँह में रख लिया था और धीरे-धीरे निगलता जा रहा था। जल्दी-जल्दी में उस भयानक अजगर को अचल के शरीर को लपेटने का मौका तक नहीं मिला था।

थोड़ी देर तक वारिस उस दर्दनाक नजारे को देखकर

अपनी छाती पीटता और खुदा का नाम रटता रहा मगर तुरन्त ही उसे होश आ गया। अचल के कमर तक का हिस्सा अजगर के मुंह के भीतर था। वारिस ने अपनी बन्दूक उठाई और अजगर की ओर करके निशाना साधा।

तभी उसके सर पर पीछे की ओर तेजी के साथ कोई वजनी चीज गिरी। उसका सर चकरा गया, बन्दूक हाथों से छूट पड़ी और वारिस बेहोश होकर गिर गया जमीन पर!

वारिस के पीछे-पीछे दौड़ता हुआ जमुना ठीक उसी समय वहाँ पहुँचा, जब वह अजगर को मारने के लिए अपनी बन्दूक तान चुका था। एक ही नजर में जमुना सारा मामला समझ गया। उसने बन्दूक का वजनी कुन्दा वारिस के सर पर जोरों से पटक दिया!

सर से खून का फौव्वारा छूट पड़ा। कटे पेड़-सा वारिस जमीन पर गिर कर निश्चल हो गया।

अब इधर की चिन्ता छोड़कर जमुना उस ओर बढ़ा जिधर से चट्टान पर बैठे हुए चंचल की चीख उसने पहले सुनी थी। मगर चट्टान सूनी थी। चंचल गायब था।

जमुना ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, मगर वह कहीं दिखाई न पड़ा। वह सोचने लगा, क्या चंचल को भी कोई जङ्गली जन्तु उठा ले गया। अपने से तो वह कहीं जा नहीं सकता था, क्योंकि जमुना की गोली उसे लग चुकी थी।

'छोटे कुँवर!....' जमुना ने जोर से पुकारा।

तभी चट्टान के पीछे से चंचल का सर उठता हुआ दिखाई पड़ा। जमुना लपक कर वहाँ पहुँचा। बोला—'छोटे कुंवर! आप सकुशल तो हैं? ...बातेसी है कि मैंने जलदबाजी कर दी... कहीं चोट तो नहीं आई आपको?....'

'गलती मेरी ही थी जमुना!' चंचल चट्टान की ओट से निकल कर बैठता हुआ बोला—'मुझे अपनी गलती का ख्याल तब

हुआ जब तुम्हारी गोली सनसनाती हुई मेरे सर के ऊपर से निकल गई और रोकते-रोकते भी मैं जोरों से चीख उठा...फिर मैंने सोचा शायद तुम दूसरी गोली भी चलाओ...इसलिए दौड़कर नीचे जा छिपा...उधर अचल भैया की भी कई चीखें सुनाई पड़ी थीं और किसी जन्तु की फुफकार भी ...पता लगाओ तो....'

'मैं सब पता लगा चुका हूँ'—जमुना क्रूर अट्टहास करता हुआ बोला—'ईश्वर इस समय आपकी मदद पर हैं छोटे कुंवर, उन्होंने कालदेव को अजगर बनाकर भेजा है जो बड़े कुंवर को निगल रहा है, धीरे-धीरे...बातैसी है कि वारिस शैतान न जाने किधर से मिट्टी सूँघता पहुँच गया था और अजगर को मारकर बड़े कुँवर की जान बचाना चाहता था...मगर मैंने उसे भी ठीक कर दिया ...चलिए आप भी देख लीजिए....'

चंचल जमुना के साथ उस पीपल के नीचे आया। दूर खड़े होकर उसने देखा, एक विकराल अजगर और उसके मुँह से बाहर निकले हुए दो पैर और कुछ ही दूर पर बेहोश पड़ा हुआ वारिस ! देखते ही देखते दोनों पैर भी अजगर के मुख में समा गये और तब चंचल के मुख से एक ठण्ढ़ी साँस निकली।

जमुना बोला—'अब तो सब खतम हो गया छोटे कुँबर !.... आनन्द की बंशी बजाइये....'

'अभी तो महल में एक बार तूफान खड़ा होगा...इस वारिस को भी यहीं खत्म कर दो....'

'वारिस खत्म हो गया होगा छोटे कुँवर ! ऐसी गहरी चोट मारी थी कि मुँह से आवाज भी नहीं निकली गिरते-गिरते... खैर, कुछ चोटें और कर दूँ....बातैसी है कि इसका बचना खतरनाक होगा....'

जमुना बेहोश वारिस के पास आ खड़ा हुआ। बन्दूक का कुन्दा ऊपर उठा और प्रबल वेग से नीचे गिरा। रूई की तरह धुनने लगा जमुना, बेहोश वारिस का सर कई स्थानों पर फट

गया। शरीर के हर हिस्से से खून की धारा बह चली।

'बस करो जमुना!.. इसे यहाँ से घसीटकर जानवरों के रास्ते पर रख दो...मुर्दे की मांस के बेचारे दावत ही कर लेंगे...'

वारिस की एक टांग पकड़कर जमुना, मरे कुत्ते-सा उसे घसीट ले चला। पीपल से दो फर्लाङ्ग की दूरी पर उसने उसे बीच रास्ते पर छोड़ दिया। वह रास्ता मनुष्यों का नहीं, जानवरों का था। इसके बाद दोनों हँसते हुए रमजानपुर की ओर तेजी से चल पड़े।

• •

ऊँची चहारदीवारी के अन्दर बने हुए तीनों महल इस समय हाहाकार कर रहे हैं।

शाम हो गई है। अँधेरा धीरे-धीरे गाढ़ा हो चला है। बत्तियाँ जल रही हैं। आसमान पर चाँद भी चमक रहा है! परन्तु लगता है, जैसे सभी जगह अन्धकार हो। तीनों महलों में चीख-चिल्लाहट, करुण पुकार गूँज रही है। नौकर-चाकर सब घबड़ाये हुए इधर से उधर दौड़ रहे हैं। कोई भयानक घटना घट गई है शायद।

रानी साहिबा अपने महल में पलंग पर पड़ी हुई मछली की तरह छटपटा रही हैं। उन्हें होश रहते भी होश नहीं है। सर के बाल बिखर गये हैं। मस्तक पटक-पटक कर रोने के कारण कई जगह गुमटियाँ निकल आई हैं। चंचल सामने सर झुकाये खड़ा है! कपड़े उसके फट गये हैं। बालों पर धूल जमी हुई है।

'अरे चंचल! तू तो पूरा दगाबाज निकला....' रानी साहिबा सर पीटती हुई बोलीं—'तूने मेरे अचल को चबा

डाला...तूने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी...तूने मुझे डुबो दिया बीच नदी में....'

'मैं क्या करता माँ?....' चंचल बनावटी शोक के साथ बोला।

'क्या करता?....पूछता है मुझसे?...अरे कुलांगार! भाई को आफत में देखकर भी तू खड़ा-खड़ा छाती पीटता रहा?... कुछ करते न बना तुझसे? अचल के बदले तूने ही अपने को अजगर के पेट में क्यों नहीं डाल दिया....पूछता है, मैं क्या करता? मर जाता तू वहीं, मगर अपना काला मुँह दिखाने न आता मुझे...लोग कहेंगे सौतेली माँ ने बच्चे को खा लिया.... मेरी छाती पर तूने कोड़े मार दिया रे चंचल!'

'माँ, तुम यह समझती हो कि सारा कसूर मेरा ही है...' चंचल रुआँसा-सा होकर बोला—'ईश्वर ने मेरे ही लिए काल भेजा होता तो तुम्हारा कलेजा ठण्ढा हो जाता...मुझे कसूरवार समझती हो तो गला काट लो मेरा...तुम्हारी छाती पर से कोड़ों के दाग मिट जायँ। दुनियावाले भी तुम्हें निर्दोष समझें.. भैया के मरने पर मुझे भी जीने की चाह नहीं रही....मैं स्वयं ही अपनी जान दे दूँगा...'

'चुप रह रे चंचल! तेरे मुँह में कोड़े पड़ गये हैं क्या, जो जीने-मरने की बात करता है तू?....अचल तो चला ही गया, अब तू भी इस बुढ़िया की दुनिया उजाड़ जायगा?....वह अजगर नहीं, मेरे भोले बच्चे का काल आया था और उसे निगल भागा....तूने उसे पकड़ा भी नहीं...उसका बदन बन्दूक से छेद भी नहीं दिया...उसका पता भी नहीं लगाया कि वह काल मेरे बड़े कुँवर को निगल कर कहाँ जा छिपा...तूने कुछ नहीं किया चंचल! तू दगाबाज है...'

'मैंने बहुत-कुछ किया माँ....वह शैतान बरगद के तने जैसा मोटा था, कैसे पकड़ता उसे....भैया को निगल कर वह न जाने कहाँ खिसक गया! बहुत खोजा, मगर पता न लगा....'

'हाय मेरा लाल ! तू कहाँ गया ?...मेरा अचल कहाँ चल दिया मुझे छोड़कर...' रानी साहिबा पलंग पर अपना सर पकटने लगीं।

चंचल भी रोने लगा। तभी किसी ने रानी साहिबा का सर पकड़ लिया और उनके मस्तक को अपनी गोद में रखकर कोमल हाथों से बूढ़े बालों को सहलाना शुरू किया।

रानी साहिबा कुछ आश्वस्त हुईं। बोलीं चंचल से—'कल उस जङ्गल में सैकड़ों आदमियों को भेजकर पता लगाओ और उस काल को पकड़कर मेरे पास, मेरे सामने लाओ....जरा मैं भी देखूँ कि वह कैसा है, जिसने मेरे लाल को अपने पेट में भर लिया है ..अरे चंचल ! मेरी वह भोली-भाली बहू सुनेगी इसे, तो कैसे जिन्दा रह सकेगी ?....तड़प-तड़प कर अपनी जान दे देगी....चाँद से पति को खोकर कौन स्त्री धीरज रख सकती है ...तू उसे खबर कर दे बेटा !....हाय मेरी बहू, तेरा भाग्य आज फूट गया बेटी ! ...चंचल ! बुला तो बहू को समझा-बुझा दूँ उसे...'

'भाभी आ गई हैं माँ....तुम्हारे सर को गोद में लिए बैठी हैं...तुम्हारा माथा सहला रही हैं वही तो....'

'बहू !....' चौंककर रानी साहिबा उठ बैठीं।

कुँवरानी पर उन्होंने दृष्टि डाली तो उसने अपना सर नीचा कर लिया। मगर रानी साहिबा को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सागर का वक्ष, अन्तर में ज्वालामुखी छिपाये एकदम शान्त था इस समय।

आँखें लाल तो थीं, मगर भींगी नहीं। मुख उजड़ा हुआ था, मगर उस पर असीम गम्भीरता थी।

'बहू ?....' रानी ने कुँवरानी को पुकारा !

'माताजी !' कुँवरानी के मुख से निकला हुआ स्वर सुनकर रानी साहिबा आसमान से गिरीं !

यह स्वर वे जीती-जागती कुँवरानी का सुन रही हैं या किसी मुरदे का ? दुख के आवेग ने कुँवरानी को पागल कर दिया था परन्तु हृदय पर पत्थर रखकर उसने अपनी आँखों का पानी पी डाला था। नारी की सहनशक्ति की वह पराकाष्ठा थी—आँखों में एक बूँद आँसू नहीं, कलेजे में धड़कन की एक आवाज नहीं, मुख में दुख की आह तक नहीं।

हाथों की चूड़ियाँ फूट गई थीं, माँग का सिन्दूर धुल गया था, बदन की चमकती साड़ी का रङ्ग सफेद हो गया था, कल की हँसती-बोलती प्रतिमा आज विधवा बन गई थी, उसका संसार उजड़ गया था।

नारी की यह कितनी बड़ी मजबूरी है कि पुरुष के मरते ही उसकी सारी तमन्नायें मर जाती हैं। उसकी हँसी, उसका सुहाग, उसका सुख—सब कुछ पुरुष की चिता पर स्वाहा हो जाता है और नारी बेचारी मर कर भी जिन्दा रहती है।

'हाय ! आज मेरी फूल-सी बहू विधवा हो गई....' रानी साहिबा पुनः रोने लगीं !

तो कुँवरानी ने उनका सर खींच कर अपनी गोद में रख लिया। गम्भीर होकर बोली—'माताजी ! आप धीरज रखें.... छोटी-छोटी नदियां हिमालय का बांध नहीं तोड़ सकतीं। दुख-सुख तो आते ही रहते हैं और आँखों के आंसू कभी सूखते भी नहीं....जो होना था वह तो हो चुका....'

कहते-कहते कुँवरानी का गला रुँध गया था। इसके आगे वह कुछ बोल न सकी। बूढ़ी रानी साहिबा अपनी इस छोटी-सी बहू के आगे एकदम बच्ची हो गई हैं। वे रो रही हैं और.... और वह उन्हें समझा रही है !

सर पर किसी के पहाड़ गिर पड़े और अडिग रह जाय, ऐसी है यह कुँवरानी कविता ! रानी साहिबा को बड़ी ग्लानि हुई। कहाँ तो उन्हें कुँवरानी को समझाना चाहिए था, कहाँ वहीं उनको समझा रही है !

वे उठ कर बैठ गयीं और लपक कर कविता को उन्होंने अपने कलेजे से दाब लिया। दो जलते दिलों की आग मिल कर लपटें फेंकने लगी, मगर दोनों नारियों ने उन लपटों को अपनी आँखों के भीतर कैद रखा।

'वह दगाबाज चला गया बेटी। मगर तू धीरज रख.... धोखेबाजों के लिए आँसू गिराना ठीक नहीं....' रानी साहिबा कविता का सर सहलाती हुई बोलीं।

'इन्सान रोना चाहे तो जिन्दगी के पग-पग पर आँखों से आँसू निकल चलते हैं माताजी !....धोखेबाज लोग अच्छे तो नहीं होते, मगर दिल जिससे एक बार प्यार पा जाता है, उसे भूल नहीं पाता कभी....भगवान ने मेरे सुखों को आँसुओं के सागर में डुबो दिया है माँ ! मगर कविता इससे विचलित नहीं होगी...नारी कमजोर होती है जरूर, मगर आँसू की बूंदें उसका क्या बिगाड़ लेंगी !' कुँवरानी कविता ने कहा।

'चंचल ! जाकर कपड़े बदल डाल'—रानी साहिबा ने कहा।

चंचल एकटक अपनी भाभी का वह गम्भीर सौन्दर्य देख रहा था। अन्तर की आग की लपटों से बदन का गोरा रङ्ग सुनहला हो गया था। विधवा भाभी का वह देदीप्यमान रूप देखकर चंचल चलायमान हो उठा।

माँ का स्वर सुनकर धीरे से उठा और शोक सन्तप्त होने का नाट्य करता हुआ कमरे से बाहर हो गया।

'ललित अकेला होगा बेटी ! चल तुझे पहुँचा दूं....' रानी साहिबा ने कविता से कहा।

'मैं चली जाऊँगी माताजी !....' बोली कुँवरानी—'वे तो चले गये, लेकिन मेरी चलने-फिरने की ताकत नहीं गई। पति के न रहने पर नारी के लिए और सभी चीजें बेकार हैं। पुरुष के गम में तड़पते-तड़पते जान निकल जाय, इसी में नारी के जीवन की सार्थकता है...'

'क्या कह रही है कविता तू ?...रो ले बेटी ! तबीयत हल्की हो जायगी। आँसू किसी जहर से कम नहीं होते। इन्हें पीते ही इन्सान की मौत आ जाती है...ताकत बची हो देखने की, तो बेटे में पति की छाया देखकर सब्र कर...चल पहुँचा दूँ तुझे....'

रानी साहिबा कविता के साथ उसके महल तक आईं। पलङ्ग पर घण्टों बैठकर उसे समझाती रहीं। कुँवरानी कविता कुर्सी पर बैठी-बैठी चुपचाप सब सुनती रही।

रानी साहिबा जब चली गईं तो वह टूटे कगार की तरह शोक सागर में गिर कर छटपटाने लगी।

आज उसकी पलंग सूनी थी। सोये ललित को उसने कसकर अपने सीने में छुपा लिया, परन्तु शोख पति की याद को भोले बच्चे की मासूमियत दूर नहीं कर सकी।

सुनसान देखकर आँखों का सागर भी उमड़ पड़ा। रोने लगी कविता...धैर्य का बाँध तोड़कर।

कल जिस मुख पर बसन्ती बहार थी, आज उससे सावन भादों की धार बरस रही थी। काली-काली अलकों के बीच की माँग पतझड़ बन गई थी। रात बीतने लगी। ऊपर चढ़ता चाँद धीरे-धीरे नीचे उतर कर जा छिपा।

कविता के आँसू नहीं रुके। जवान पति की अचानक मृत्यु के बाद की पहली रात नारी किस प्रकार तड़प-तड़प कर काटती है, इसकी कहानी कोई कविता के आँसुओं से पूछ ले।

रात की जवानी ढल चली। जागरण का सन्देश लेकर दूर से मुर्गे की आवाज आई। अभी अँधेरा ही था। कविता जाग कर रो रही थी। तभी बाहर दरवाजे पर कुछ खटपट की आवाज हुई।

किसी ने पुकारा—'दरवाजा खोलिये हुजूर !...'

स्वर किसी स्त्री का था। रुँआसा, दर्द भरा।

कविता ने चटपट उठकर दरवाजा खोल दिया। देखा धुँधले अँधेरे में कोई स्त्री-मूर्ति खड़ी है।

कविता ने बाहर की बत्ती जला दी। उजाले में गुलनार को वहाँ खड़ी देखा उसने, उसके कन्धे से लगकर और भी कोई खड़ा था, बदहवास, लहूलुहान सर आगे की ओर लटका हुआ।

यह तो वारिस है! कपड़े खून और धूल से सनकर लथपथ हो रहे हैं, जगह-जगह से फट गये हैं। सर में लम्बे-लम्बे घाव दिखाई पड़ रहे हैं, जिनमें मांस के लोथड़े उतरा आये हैं...नीचे जमीन पर अब भी ताजा रक्त चू रहा है।

बरगद जैसे वारिस की जड़ कट गई है, मामूली जटायें उसे अब अधिक देर तक खड़ा नहीं रख सकतीं।

गुलनार चुप है। अपने पति को वह पहचानती है। अपनी जान पर खेल कर वह अपने मालिक की जान बचाने वाला है।

मगर आज आधी साँस लिए, एक पैर कब्र में लटकाये वह अपनी मालकिन से मिलने आया है। जान बाहर निकलने को तड़प रही है, परन्तु उसकी स्वामिभक्ति से मौत को भी परास्त होना पड़ा है।

'देर हो रही है....गुलनार!....' वारिस के मुख से अस्फुट शब्द निकले—'जरा जल्दी....बुला दे...'

'क्या है वारिस?...' कुंवरानी आश्चर्यचकित-सी आगे बढ़ आई।

'मुझे जमीन पर बिठा दे गुलनार!....'

जमीन पर धीरे से बिठाया गया उसे।

बोला वारिस—'जान... हलक में आकर....अटकी हुई है... हजूर!...खुदा कसम! बदन की एक-एक हड्डी टूट...गई है.... किसी कदर घिसटते-घिसटते एक फर्ज की याद लिए....यहां तक....आ पहुँचा हूं...वक्त ज्यादा नहीं, कुछ सुन लें तो मेरी जान को निजात....मिल जाय, तड़फड़ा रही है हजूर...निकल जाने के लिए....'

'गुलनार!....मैं इसे देखती हूं....तू बाहर जाकर नौकरों

को डाक्टरों के पास भेज....शहर में जितने डाक्टर हों, सबको बुला...वारिस की जान जाने के पहले मेरी दौलत जायगी....'

गुलनार दौड़ती चली गई।

कविता ने वारिस को सहारा दिया।

वारिस की आँखें बन्द थीं। जबान लटपटा कर चल रही थी- 'बेकार है हजूर ! .. डाक्टरों के आने के...पहले ही मौत आ जायगी....आपसे मुझे....माँ कि मुहब्बत मिली है कुंवरानी साहिबा !....आपकी....गोद...में मेरी जान निकल रही है... दुनिया में किस नौकर....की ऐसी किस्मत होगी हजूर ! कुँवर साहब को साँपों से बचाया तो अजगर ने निगल लिया ...मैं कुछ नहीं कर सका सरकार !....वारिस...की इस...गलती को माफ कर दें....'

और वारिस का सर एक ओर को लटक गया !

कुँवरानी ने एक दीर्घ निःश्वास ली और वारिस के शरीर को धीरे से जमीन पर लिटा दिया। उस समय पिछली रात का अँधेरा धीरे-धरे दूर हो रहा था।

× × ×

'ओह चंचल कुँवर !...' होटल के कमरे में घुसते हुए एनी ने कहा—'By God, हम तुमको देखने के लिए बहुत anxious था....आज बीस दिनों के बाद तुम यहाँ आई...is it not ?'

'आओ मिस एनी !' कोच पर उसे बैठने की जगह देता हुआ बोला चंचल—'मैं बहुत व्यस्त था....'

'How are you Mr, जमुना ?' बैठती हुई एनी ने जमुना से पूछा।

'सब आपकी मिहरबानी है मिस साहिबा ?...' जमुना ने कहा—'बातैसी है कि छोटे कुँवर अपने भाई के क्रिया-कर्म में फँसे हुए थे....'

'Congratulations छोटी कुँवर !...आखिर बड़ी कुँवर को खुदा ने बुला ली...'

'बात बड़े ताज्जुब की है छोटे कुँवर ?....' एकाएक जमुना बोला।

'कौन-सी बात ?...'

'उस शैतान वारिस की'—जमुना ने कहा –'उसकी हड्डी-पसली तोड़कर जङ्गल में रख आया था मैं...मगर शैतान घिसटता-घिसटता उसी रात महल में आ पहुँचा...'

'मर तो गया ही होता वह, मगर भाभी ने पानी की तरह रुपये बहाकर बचा लिया उसे....' चंचल कुँवर ने कहा।

'रानी साहिबा भी तो कम परेशान नहीं हुईं उसके लिए... दिन में तीन बार उसे देखने जाती थीं...नौकर क्या हुआ ? बिलायती कुत्ता हो गया...अब तो चलने-फिरने भी लगा है। कल देखा था उसे एक नजर। ललित को छोटी गाड़ी पर घुमाने निकला था....बदन की अकड़ वैसी की वैसी ही है... बेईमान ने हमारी खूब शिकायत की होगी कुँवरानी से....शायद रानी साहिबा से भी कहा हो....'

'माँ से उसने कुछ कहा होता तो वे मुझसे जरूर पूछतीं.... और भाभी का भी व्यवहार पहले जैसा ही नम्र है...वारिस ने किसी से कुछ कहा नहीं शायद। कह दिया होता तो अब तक आफत आ जाती....उसने चोट करते हुए तुम्हें देखा नहीं था, वरना उसकी जबान चुप न रहती अब तक....' बोला चंचल।

'महल का क्या हाल-चाल है ?....'

'धीरे-धीरे सब ठीक होता जा रहा है....' चंचल ने कहा— 'भैया की याद लोग भूलते जा रहे हैं। पहले तो भाभी ने कई दिनों तक खाना नहीं खाया, मगर अब खाती हैं, सोती भी हैं और हँसती-बोलती भी....माँ का शोक भी अब बहुत-कुछ दूर हो गया है !...'

'तो फिर अब धीरे-धीरे दूसरी कार्यवाई शुरू की जाय... ललित और कुँवरानी को भी दूर करना है ?' जमुना बोला।

'केवल ललित को....पति और बेटे को खोकर नारी का प्यार सूना हो जायगा और वह आँखें पसार कर किसी दूसरे का प्यार खोजेगी, तब मैं उसके सामने जा पड़ूँगा। अगर भाभी ने मुझे चुना, तब तो ठीक, नहीं तो बाद में उसे भी....'

'चंचल कुँवर !'—एनी तेज स्वर में बोली—'तुमने मुझसे शादी की वादा की थी, फिर अपने भाभी का Love क्यों पाना चाहती है ?'

'तुम चुप रहो एनी !....' चंचल ने कुछ कठोरता के साथ कहा—'एक आदमी क्या दो औरतें नहीं रख सकता ?....'

'But the love is divided then'—एनी ने कहा—'हम इसे पसन्द नहीं करता....तुमने हमसे शादी करने का वादा की थी... हमको धोखा देगी तो अच्छा नहीं होगी....'

'नहीं होगी, न सही...इस समय चुप रहो तुम...' चंचल ने उसे डाँट दिया।

एनी लाल-लाल आँखों से उसे देखती रही।

'तो पहले ललित को दूर किया जाय ?...'

'हाँ !...'

'कैसे !...'

'सुबह उसे वारिस गाड़ी पर हवा खिलाने ले जाता है न !...'

'बस समझ गया...तो कब ?'

'कल ही ...दो तीन आदमी रहना—वारिस अभी कमजोर है तो क्या, ललित को बचाने के लिए वह अपनी जान देगा !...' बोला चंचल।

'मैं खुद सावधान रहूँगा छोटे कुँवर !...मगर बातेसी है कि बच्चे की हत्या करते....'

'बच्चा कहते हो उसे जमुना ?....वह तो साँप है, साँप... कल को जवान होकर आधी रियासत का हकदार बन जायगा....नहीं-नहीं, उसे अपने रास्ते से हटाना ही होगा...'

'ठीक है....मैं तो ताबेदार हूँ आपका...कल सुबह ही वारिस से उसे छीनकर गला टीप दूँगा उसका....फिर रात में उसकी लाश कहीं जमीन की गोद में दफन कर दी जायगी।'

'जगह जरा सुनसान देखकर छापा मारना...अब चलो....'

कहकर चंचल उठ खड़ा हुआ और दरवाजे कि ओर बढ़ा। जमुना उसके पीछे-पीछे चला।

एनी से बगैर कुछ कहे दोनों कमरे से बाहर निकल गये।

अपनी यह उपेक्षा देखकर एनी की आँखें क्रोध से जल उठीं। वह इतनी मासूम नहीं थी कि चुपचाप पुरुष का दुर्व्यवहार सहन कर लेती।

वह थी आधुनिक नारी।

● ●

दिन के दौरान में भले ही कुँवरानी अपने पति को याद भूली रहती हो, परन्तु रात की नीरवता में उसके आंसू बहने लगते हैं। इधर बीस दिनों में मुश्किल से वह बीस घण्टे सोई होगी और वह निद्रा भी कैसी...

कभी विकराल अजगर दिखता है सपनों में, कभी अचल की करुण चीख सुनाई पड़ती है।

बेचारी कविता आँखें बन्द कर भी सो नहीं पाती।

वारिस उसके पति की जान बचाने गया था तो वह भी अपनी जान आधी लेकर लौटा। कविता पति को खोकर ऐसे वफादार नौकर को खोना नहीं चाहती। उसने उसके पीछे

हायों की दीवार खड़ी कर दो। धन-लोलुप डाक्टरों ने मौत से भयानक युद्ध किया।

और आज वारिस भला-चङ्गा है।

कविता का अहसान वह भूल नहीं सकता। दोनों मियाँ-बीवी कुँवरानी का गुण-गान करते रहते हैं।

मगर कविता की आँखों में लहराते हुए सागर को सुखाने की ताकत वारिस में नहीं। उसके अन्तर की आग को बुझाने की शक्ति वह कहाँ से लाये?

अपनी जान देकर भी यदि वह उसके चेहरे पर मुस्कुराहट देख ले तो इस कुर्बानी के लिए वारिस हर मिनट तैयार है। मगर छटपटा कर भी वारिस कविता का दुख दूर नहीं कर पाता।

छोटे ललित की परवाह भी कविता ने बहुत कम कर दी है, सो बेचारा वारिस उसको माँ बनकर दिन भर उसे गोद में लिए रहता है। कभी कुँवर की याद उसे सताती है तो वह पहाड़-सा पहलवान मासूम बच्चे को कलेजे से लगा किसी कोने में जाकर दो-चार धार रो लेता है।

गुलनार भी कम दुखी नहीं है। वफादार नौकर की बीबी दिन-दिन और रात-रात भर कविता के सामने हाजिर रहती है। कोई दुख न हो कविता को, कुँवर की कोई चीज उसकी आँखों के सामने पड़कर उसके आँसुओं को न उसकाये, इन बातों का बेहद ख्याल रखती है गुलनार।

कभी-कभी कविता इन मियाँ-बीवी पर बेतरह झल्ला उठती है। वह जानती है कि वे दोनों रानी साहिबा के हुक्म से उसकी निगरानी कर रहे हैं, ताकि अपने जीवन से ऊब कर वह अपना गला न दबा सके।

कभी-कभी वह सोचती है कि रानी साहिबा से सारी बातें कह दे! उन्हें बता दे कि उनके पेट से आदमी का बच्चा नहीं

सांप का पोग्रा पैदा हुग्रा था। सारी खुराफातों की जड़ उसका चंचल है।

मगर रानी साहिबा का प्यार उसकी जबान पकड़ लेता है। किस मुख से वह सारी बात उनसे कहेगी? सुनकर उन्हें क्या कम दुख होगा? इतना गहरा धक्का शायद उनका बूढ़ा शरीर न बर्दाश्त कर सके ग्रौर मौत की गोद में ग्राराम करने चल दे।

ग्रचल भी तो कहा करता था कि माताजी से चंचल की कोई शिकायत मत करना।

पति के बाद ग्रब कौन रह गया है कविता के पास जिसकी रक्षा के लिए वह चंचल की शिकायत करे? बेटे की शैतानी सुनकर बूढ़ी रानी साहिबा का दिल टूट जायगा।

कविता ने ग्रब तक ग्रपनी जबान बन्द ही रखी है ग्रौर हमेशा बन्द रखेगी।

ग्रासमान पर उषा खेल रही थी। ऊपर उठते हुए सूर्य की लालिमा फैल चुकी थी, गोला ग्रभी क्षितिज के ग्राँचल में छिपा था। कविता ग्रभी-ग्रभी पूजा करके उठी थी ग्रौर ग्रचल की फोटो के सामने सर झुका रही थी।

तभी गुलनार तेजी से ग्राकर बोली—'हजूर! एक लड़की ग्रापसे मिलने ग्राई है....ग्रँगरेज है...बड़ी जल्दी में है...रोका तो रुकती ही नहीं थी.. लीजिये, वह ग्रा ही पहुँची...'

कविता ने देखा—दरवाजे पर ग्रँग्रेजी पोशाक पहने एक गोरी युवती खड़ी थी।

चौंक पड़ी वह—'ग्राप....'

'Excuse me Sister !....' युवती बोली—'मेरा नाम एनी है...जल्दी था, इसलिए बिना पूछे चला ग्राया हम....'

'एनी ?....' नाम तो कभी सुना है कविता ने।

याद ग्राया, वारिस कह रहा था कि यही लड़की चंचल

की प्रेमिका है और उस दिन अचल को जहर देने आई थी।

सोचकर कविता का मस्तक भन्ना उठा, परन्तु बाहर से वह शान्त रहकर बोली—'आइये, बैठिये...'

एनी पलङ्ग पर आकर बैठ गई।

कुँवरानी ने सर से पांव तक उसे एक बार देखा, फिर बोली—'कैसे कष्ट किया आपने ?'

'आप हमको नहीं जानता कुँवरानी साहिबा !... हम छोटी कुँवर की Beloved है, I mean माशूका... हम आपसे कुछ पोशीदा बात कहने आया है, आप सुनेगा तो आपका फायदा होगी....'

'आप कहिए...' कविता ने कहा।

'आप हमारी मदद करेगा न...I am dispointed .. हमको धोखा दिया गया है....छोटी कुँवर शैतान है....वह बड़ी कुँवर की जान लेना चाहती थी....अब आपको अपना Wife बनाना चाहती...'

'मुझे मालूम है'—कविता ने शान्त स्वर में कहा।

'You know everything ? My godness yet you are Sient ?

'आप हिन्दी में बात कीजिये.. मुझे यह जबान नहीं आती...' कविता बोली।

'Oh, sorry, हम बोला, आप सब कुछ जानता हुआ भी अब तक खामोश है...अपना खाबिन्द खोकर भी आपने रानी साहिबा से शिकायत नहीं बोला ?....Too Strange ! हम खुद रानी साहिबा के पास जायगा....'

'अभी आप कुछ दिनों तक खामोश रहिए... वक्त आने पर रानी माँ सब कुछ जान लेंगी...'

'No, no हम वक्त का इन्तजार नहीं कर सकता...हम छोटी कुँवर को बरबाद कर देगी....'

'मिस एनी !' कविता गम्भीर स्वर में बोली—'मुझे देखो, मैं लुट कर भी चुप हूँ, केवल खानदान की भलाई के लिए। तुम भी कुछ दिनों तक चुप रहो। तुम्हारे साथ पूरा-पूरा न्याय होगा....'

'Do you Promise !... I mean, क्या आप वादा करता है ?....'

'हाँ, समय पड़ने पर मैं स्वयं रानी माँ के सामने सारी बातें रख दूँगी ! उस समय क्या तुम सच्ची गवाही दोगी ? सब कुछ बता दोगी, जो तुम जानती हो ?....'

'By God, हम सब कुछ बता देगा....रात में जमुना ने बड़ी कुँवर पर knife लेकर हमला बोली, छोटी कुँवर डाक्टर दास के पास जहर माँगने गई, चा की प्याली में हमने जहर डाली, बड़ी कुँवर को जङ्गल में ले जाने के लिए झूठा आदमी भेजा, Mr. जमुना पीछे-पीछे पिस्तौल लेकर गई...बाद को कुँवरानी को अपना wife बनाना बोला, ललित का जान मारने को mr. जमुना को कहा—I will tell every thing Madam !'

'ललित की जान ?...' कविता चौंक पड़ी।

'ओह हम भूल गया था...' एनी जल्दी-जल्दी बोली—'यही बात कहने हम इतना morning में आया....'

'कौन-सी बात ?....'

'आज ललित का जान मारा जायगा...छोटी कुँवर ने जमुना को सब कुछ समझा दी है....'

'भगवान ! अबोध ललित ने किसी का क्या बिगाड़ा है ?.... कैसे उसकी जान ली जायगी मिस एनी ? क्या जहर से ?...' कुँवरानी भयभीत हो उठी थी।

'No-no, आज सुबह को Mr. वारिस जब ललित को टहलाने ले जायगी, उसी वक्त Mr. जमुना हमला बोलेगी...

आप आज ललित को walking के लिए मत जाने देना....'

कविता के मस्तक से पसीना छूट पड़ा। वह चिल्लाई—'गुलनार !'

'आई मालकिन !....' दौड़ी आई गुलनार।

'वारिस कहाँ है ?....' बदहवास स्वर में पूछा कविता ने।

'वे तो हजूर ललित कुँवर को गाड़ी पर हवा खिलाने ले गये हैं...'

'कितनी देर हुई ?...'

'घण्टे भर से ऊपर....'

'उफ् !...' क्या होना चाहता है...' कविता ने अपना सर पीट लिया—'वारिस अभी कमजोर है.. ललित को कैसे बचा सकेगा वह ?...' कविता की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। सूरज निकल आने पर सितारे छिटकने लगे। सर पकड़कर बैठ गई वह पलंग पर।

परन्तु, तुरन्त ही कुछ निश्चय कर लेने के बाद उसने सर उठाया, बोली—'मिस एनी ! तुम जाओ... गुलनार ! तुम यहीं रहना...'

कहती हुई कविता तेजी से उठी और आलमारी के पल्ले खोलकर कुछ खोजने लगी। दूसरे ही क्षण उसके हाथ में एक भयानक पिस्तौल थी।

हाथ में पिस्तौल दबाये वह बढ़ चली दरवाजे की ओर। तभी दौड़े आते हुए वारिस पर उसकी नजर पड़ी। उसके पीछे-पीछे ललित की छोटी गाड़ी भी बेतहासा भागी आ रही थी।

'आ गया मेरा ललित !....वारिस उसे लौटा लाया....' कविता के मुख पर सन्तोष की आभा झलकी।

वारिस पास आ गया। कविता आगे बढ़कर गाड़ी के पास खड़ी हुई। गाड़ी में दृष्टि डालते ही उसके पैरों के नीचे की जमीन काँप उठी। चिल्लाई वह 'वारिस !...मेरा ललित ? कहाँ है मेरा बच्चा ?'

वारिस बदहवास-सा गिड़गिड़ा कर कविता के पैरों पर गिर पड़ा—'मेरी माँ ! माफ करो—ललित खो गया मुझसे.... खुदा कसम मेरा कोई कसूर नहीं हजूर !...'

'क्या हुआ ? जल्दी बताओ'—

'सड़क के किनारे वाले बगीचे में कनेर के फूल लगे थे'—वारिस बोला—'ललित मचल गया लेने को....मैं तोड़ने अन्दर गया, लौट कर देखा तो गाड़ी खाली थी...बहुत खोजा मगर पता न लगा... मुझे आपने जिन्दगी दी है और मैंने आपका बच्चा खो दिया....मेरी जान ले लो सरकार। मेरी बोटी-बोटी काट दो.. वारिस की जबान उफ् करे तो कहना....'

'मैं समझ गई...' कोमल नारी का स्वर गम्भीर था और आँखें प्रतिहिंसा की भावना से जल रही थीं।

वारिस वह प्रचण्ड रूप देखकर डर गया। बोला—'हजूर !'

'मैं अब सहन नहीं कर सकती...' चिल्लाकर बोली कविता—'मैं रानी माँ से सब कुछ कह दूँगी। मेरे ललित को कोई नहीं छू सकता....आज मैं चंचल का खून करूँगी....'

हाथ में पिस्तौल ताने कविता दौड़ पड़ी, रानी साहिबा के महल की ओर। वारिस, गुलनार और एनी आश्चर्यचकित से खड़े रह गये। आज कविता सिंहनी बन गई थी। पति की मृत्यु पर मूक रह जाने वाली जबान, बेटे के शोक में खुलने जा रही थी। हाथ की पिस्तौल गोली उगलने के लिए तैयार थी। दृढ़ उँगलियाँ घोड़े पर थीं।

रानी साहिबा के कमरे के पास आकर कविता रुक गई।

रानी साहिबा पलङ्ग पर बैठी थीं। परेशान चंचल सामने खड़ा था। कविता दरवाजे की आड़ में छिप गई। पिस्तौल नीची करके भीतर की बातें सुनने लगी।

'मैं पूछती हूँ कि तुम लोग लम्बी तानकर क्यों सोये रहते

हो ?' रानी साहिबा तड़पकर बोलीं—'इतनी बड़ी घटना हो गई और तुम्हें पता तक नहीं.. कहे देती हूँ, ऐसे नहीं चलेगा चंचल !...या तो अपनी आँखें खोल और इन घटनाओं का पता लगा नहीं तो तुझे जेल में डाल दूँगी.. तू मुझे केवल माँ मत समझ... मैं रानी भी हूँ.. जुर्म को दबाना मेरा काम है...'

'तो क्या मैंने यह सब किया है माँ...' चंचल बोला।

'किया हो या नहीं मगर अचल नहीं रहा तो तू ही उसका काम सँभाल.. मुझे पता लगाकर बता कि वे लोग कौन थे जो उसे उठाये लिए जा रहे थे ?....'

'सारी दगाबाजी भाभी की है माँ ! मुझे बदनाम करना चाहती हैं.. लोगों से कहती फिरती हैं कि अचल भैया को मैं ही निगल गया ... खुद रात में पराये पुरुषों से मिलती हैं....'

'क्या बकता है तू लड़के ?....'

'भैया थे तब की बात है... मुझे पता लगा था कि कोई आदमी उनसे रात के वक्त मिलने आया था, जिसके साथ वे बैठक में काफी देर तक रहीं और वारिस का बच्चा पहरा देता रहा....झूठ नहीं कहता माँ ! ऐसी आदत है भाभी की तो कभी तुम भी जान लोगी....'

सुनते-सुनते कविता का क्रोध उमड़ पड़ा। यह आस्तीन का सांप सबको डँस चुकने पर भी सीना ताने खड़ा है !

उसका हाथ उठा, पिस्तौल सीधी हुई, उंगली घोड़े पर जम कर बैठ गई।

तभी पलङ्ग के उस पार, नीचे से किसी बालक का स्वर सुनाई पड़ा—'लानी माँ ! मैं घोला लूंगा लकली का....'

सुनकर कविता चौंक पड़ी। पिस्तौल छूटकर जमीन पर जा गिरी—'मेरा ललित !...' पागल की तरह दौड़ पड़ी कविता कमरे के अन्दर।

पलङ्ग के उस पार बैठकर खेलते हुए ललित को उठाकर

उसने अपने सीने में छुपा लिया। आँखों से बेतरह पानी बहने लगा।

'ललित !....मेरा बच्चा !....' हिचकियाँ ले-लेकर वह ललित का मुख चूमने लगी।

'अरी ओ ललित की बच्ची !.. छोड़ उसे, पहले इधर मुझे जवाब दे....' रानी साहिबा ने कहा।

कविता ललित को छोड़कर उठ खड़ी हुई। बच्चे को पाकर उसका सारा क्रोध पानी बन गया। मुख की वेदना अजीब ढङ्ग से मुस्कुरा रही थी।

'मैं पूछती हूँ कि उस बड़े कुँवर के मरते ही तू क्या पागल हो गई है ?.. अपने को तो भूलती ही जा रही है, मगर इस खिलौने का भी क्या तुझे कुछ गम नहीं ?...देख बहू ! तुम सब ऐसे रहोगे तो एक-एक को निकाल बाहर करूँगी....'

'वारिस इसे टहलाने ले गया था माताजी !...'

'मगर चहारदीवारी के बाहर जाने की क्या जरूरत थी ?.... आने दो उस वारिस के बच्चे को। छड़ी से मार-मार कर उसकी जान न ले लूँ तो कहना... टहलाने ले गया था !....फूल-सा बच्चा कहीं इतनी दूर टहलाया जाता है, कि हवा लगते ही मुरझा जाय ?...'

'मैं इसे ही खोजने दौड़ी आई थी माताजी !...'

'चुप रह बहू ! मेरा महल कोई भूलभुलैया नहीं है कि यहाँ खोजने दौड़ी आई... यह तो कह कि मेरी नजर उन बदमाशों पर पड़ गई... हवा खाकर लौट रही थी कार पर, तो उस बाहर वाले बगीचे के पीछे से किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। कार रोककर दौड़ी गई। मुझे देखते ही वे शैतान भाग गये ! देखा तो वह ललित था....तुम लोग इतने लापरवाह हो गये हो कि कोई तुम्हारा गला काटकर चल दे और तुम्हें खबर भी न हो जरा-सी... इसे पैदा करते वक्त तुझे पीड़ा नहीं हुई

थी क्या कविता ?... हुई थी तो इसकी परवाह क्यों नहीं करती तू ? मिट्टी के खिलौने की तरह क्यों इसे इधर-उधर फेंकती चलती है ?.. तुम सब लोग बागी हो गये हो। अचल चला गया, मगर मैं मरी नहीं.. अब ललित को मार कर तुम सब लोग मेरी जान लेना चाहते हो, ताकि इतनी बड़ी रियासत तुम्हारी हो रहे...मैं अन्धी नहीं.. एक दिन सबको जेल में कर दूँगी....'

चंचल सन्नाटे में आकर खड़ा हुआ सब सुन रहा था। यद्यपि रानी साहिबा वे सब बातें सबको लक्ष्य कर कह रही थीं परन्तु चंचल को लगा, जैसे उसी के लिए यह सब कहा जा रहा है। जैसे रानी साहिबा के अन्तर में उसके प्रति कोई शङ्का घर कर गई है, जिसे वे अव्यक्त रूप से व्यक्त कर रही हैं।

रानी साहिबा कहे जा रही थीं—'बहू ! अब तू चल दे यहाँ से....इस ललित को तू नहीं सँभाल सकती, यह तुझे अब मिलेगा भी नहीं....मैं जानती हूँ हमारे बहुत से दुश्मन पैदा हो गये हैं... अब तक जितनी खुराफातें हो रही हैं, सबका कारण मैं समझती हूँ, फिर भी खामोश हूँ....वक्त आने पर जो कसूरवार साबित होगा उसे फाँसी दे दूँगी....

सुनते-सुनते चंचल का सर चकरा गया। यह तो सीधा उसी के ऊपर कटाक्ष है।

'माताजी ! ललित को ले जाऊँ ?....' कविता ने प्रार्थना की।

तो रानी साहिबा तड़पकर बोलीं—'नहीं...कभी नहीं.... ललित मेरे साथ रहेगा....तू उसे खो देगी बहू ! हठ करेगी तो निकाल बाहर करूँगी...जा यहाँ से...चंचल ! तू भी चल दे अब....ओ रे ललित ! इधर आ बेटा !...लकली का घोला लेगा...'

'लूँगा लानी माँ ?...'

'यहाँ रहेगा तू ?....'

'जलूल !...हमको मिथाई दोगी लानी माँ ?...'

'जलूल !...' रानी साहिबा ने भी उसी टोन में जवाब दिया।

कविता हँसने लगी। चंचल चला गया था।

ललित को पाकर कुँवरानी सब कुछ भूल गई थी। ललित चाहे उसके पास रहे, चाहे रानी साहिबा के पास। रानी साहिबा के महल में वह एकदम सुरक्षित रहेगा।

 

सूरज उगता और गर्मी उगल कर चला जाता। चाँद आता और चाँदनी बिखेर डूब जाता। दिन आते तो चहल-पहल मच जाती। रातें आतीं तो सपने जग पड़ते।

समय तूफानी गति से निकल जाता है और इन्सान की आँखें देखकर भी नहीं देखतीं।

कई महीने बीत चुके। याद की पीड़ा ढल चली है। गुजरे लोगों की सूरत लोग भूलते जा रहे हैं। वेदना के आँसू अब पलकों की कोरों पर नहीं उतराते।

कविता का गम बहुत कुछ दूर हो चुका है। ललित तभी से रानी साहिबा के पास रहता है। उससे निश्चिन्त होकर कविता और भी असावधान हो गई है।

चंचल ने अब ललित की जान लेने का विचार त्याग दिया है। रानी साहिबा के महल में उसकी एक भी चाल नहीं चल सकती। रानी साहिबा इधर चंचल से कुछ होशियार भी रहने लगी हैं, जिसका आभास चंचल को उनकी बातों से अक्सर मिलता है। वह भी जल्दीबाजी करके कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहता, जिससे रानी साहिबा के सन्देह का अंकुर पनप कर वृक्ष का रूप धारण करे।

एनी चंचल से दूर हो गई है। कई बार वह उससे मिलने उसके घर भी गया, परन्तु उसकी माँ ने उससे मिलने न दिया। चंचल उससे अब मिलना भी नहीं चाहता। उसकी आँखों की सारी प्यास अब कविता की ओर केन्द्रित हो गई है। कविता यदि उस पर सदय हो जाती है तो उसकी वासना को एक आकर्षक आधार मिल जाता है और रियासत भी उसकी होकर रह जाती है।

आजकल वह कविता का बहुत ख्याल रखता है। दिन में कई बार वह उससे मिल आता है। कभी-कभी रात के दस बजे तक वह अपनी भाभी के पास बैठा-बैठा मीठी-मीठी बातें किया करता है।

वह उसे हँसाने की कोशिश करता है। ऐसा भाव प्रदर्शित करता है, जैसे उसके एक-एक सुख के पीछे वह बेकरार है, उसकी जरा-सी फीकी हँसी के लिए वह पागल है।

कविता सब कुछ समझती है। चंचल की सारी खुशामद उसे भाती नहीं, फिर भी वह अपने पति के छोटे भाई के साथ उपेक्षा का व्यवहार नहीं कर पाती कभी।

और इसीलिए चचल की आशा उत्तरोत्तर बलवती होती जा रही है। वह समझ रहा है कि धीरे-धीरे बुलबुल उसके जाल में आ फँसेगी।

रात सयानी होती जा रही थी। काली चादर चारों ओर खूब तनी थी। कविता सोने की तैयारी कर रही थी। पलङ्ग पर लेटी-लेटी नींद लाने के लिए कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ रही थी।

तभी—

'भाभी !...सो गई क्या तुम ?....'

कविता ने सर उठाया तो चंचल को भीतर आते देखा,

चौंक पड़ी वह। इतनी रात को उसके कमरे में चंचल को देखकर कोई क्या समझेगा।

चंचल ने धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया, फिर आकर कविता के साथ पलङ्ग पर बैठ गया।

कविता उठ खड़ी हुई, बोली—'इतनी रात को कैसे आये कुँवर ?....कोई देख ले तो क्या कहे ?...'

'कहेगा क्या भाभी ?' चंचल हँसा—'तुमसे मेरा अटूट सम्बन्ध है। भाभी के पास आने के लिए मुझे दिन और रात की पाबन्दी नहीं....तुम उठकर खड़ी क्यों हो गई ? दरवाजे की सिटकिनी लगा दूँ क्या भीतर से ? ...' और कहता हुआ चंचल उठकर दरवाजे की सिटकिनी भी बन्द कर आया।

कविता का माथा ठनका, फिर भी वह संयत स्वर में बोली—'दरवाजा क्यों बन्द कर दिया तुमने ?...'

'ताकि किसी के आने का डर न रहे...' बोला चंचल एकटक कविता का सौन्दर्य पीता हुआ।

कोई काम है क्या छोटे कुँवर ?....' कविता ने पूछा।

'नहीं तो ! शाम को आज तुम्हारे पास नहीं आ सका था, सो तबीयत बेचैन थी भाभी ! इस समय अवकाश मिलते ही दौड़ा आया हूँ....न कहोगी चंचल के दिल को....बेचैन रहता है तुम्हें देखे बिना....ऐसे कब तक चलेगा भाभी...'

'कैसे ?'

'तड़पते-तड़पते...'

'कौन तड़प रहा है ?...'

'तुम भाभी, और कौन ?....तुम्हारा यह जोगन का रूप मुझसे देखा नहीं जाता....'

'तो आँखें बन्द कर लो अपनी....'

धीरे-धीरे कविता आलमारी के पास पहुँच गई थी, पीछे हटते-हटते।

'तुम मजाक करती हो भाभी !...इसीलिए तो मैं तड़प रहा हूं तुम्हारे लिए... इधर आकर बैठो न ! भैया के गम में कब तक घुलती रहोगी ?...यह चंचल भी तुम्हें कम प्यार नहीं करता।'

'मैं जानती हूँ कुँवर ! तुम मुझे बहुत चाहते हो...अगर तुम्हारी आँखों में बीघे-दो-बीघे जगह होती तो मेरे रहने के लिए वहाँ एक बँगला तुम बनवा देते ...' कविता बनावटी मुस्कुराहट होठों पर लाकर बोली।

'बड़ी वैसी हो भाभी ! हर बात में मजाक !....एक बात कहूँ, बुरा न मानना ...दिल का दर्द सुना रहा हूं तुम्हें....सुन कर ठुकरा न देना...रात-रात भर नींद नहीं आती....'

'डाक्टर दास के पास जाओ...मेरे पास नींद की कौन-सी दवा रखी है ?'

'मेरी दवा तो तुम्हारे ही पास है भाभी ! एक खुराक दे दो तो नींद आ जाय....सारा दर्द दूर हो जाय....' चंचल उठता हुआ बोला—

'एक खुराक नहीं, मैं दो-तीन खुराक दे दूँ, मगर दे सकोगे बारह हजार ?....' कविता ने गम्भीर स्वर में कहा। हाथ पीछे करके उसने आलमारी में रखी पिस्तौल उठा ली धीरे से।

बारह हजार की बात सुनते ही चंचल का चेहरा पीला पड़ गया। रुकता हुआ बोला—'क्या कहती हो भाभी ?...'

'घबराओ मत कुँवर ? डाक्टर दास ने तुम्हारे साथ दगा नहीं की है....यह सब भेद तो मुझे वारिस के जरिए मालूम हुआ है। मैं सब कुछ जानती हूँ चंचल !...पति को खोकर भी मैं खामोश हूँ, केवल उस देवी का ख्याल करके जिसने तुम जैसे राक्षस को जन्म दिया। तुम्हारी चालबाजी की बातें सुनकर रानी माँ आत्महत्या कर लेंगी....'

कहते-कहते कविता का स्वर कठोर हो चला था। काँपते हाथ में पीठ पीछे पिस्तौल दबी थी चुपचाप।

अपने लिए राक्षस का सम्बोधन सुनकर चंचल की भवें तन गईं। क्रूर हँसी हँसकर बोला वह—'तो तुम सब जानती हो भाभी !....और माँ से कहने का साहस तुममें है नहीं, यह भी अच्छा ही है मेरे लिए....मुझे कुछ छिपाना नहीं है तुमसे, इस समय मेरा रास्ता साफ है। मुझे पसन्द कर लो तो तुम भी रानी बनकर ऐश करोगी भाभी !....'

'मुझे ऐश नहीं करना है... भला चाहो तो चले जाओ यहाँ से....' कविता जोर से बोली।

'मैं जाने नहीं आया हूँ भाभी !....तुम्हें अपनी बनाने आया हूँ....' कहकर चंचल झपटा कविता की ओर।

'दूर खड़े हो जाओ चंचल !...ठीक नहीं होगा, मेरा बदन छुओगे तो....' चिल्लाई कविता।

'धीरे धीरे बोलो भाभी ! चीख सुनकर नौकर-चाकर इकट्ठे हो जायँगे, फिर वह बात जिसे केवल हम दोनों को जानना चाहिए, सभी की जबान पर होगी ...'

चंचल ने कविता का हाथ पकड़ना चाहा तभी चमककर एक काली-सी पिस्तौल बीच में आ तनी।

चौंककर चंचल दो कदम पीछे हट गया। फिर हँसता हुआ बोला—'पिस्तौल का मुझे डर नहीं....शौक से मेरी जान ले लो तुम...मगर मरते दम तक मेरी जबान यही कहेगी कि भाभी रात में गैरों से मिलती थीं, मैंने देख लिया तो मेरी जान ले लीं—फिर तो मरते आदमी की बात को कौन झूठ समझेगा.... माँ के सामने तुम कौन-सा मुख दिखाओगी ? वफादार वारिस तुम पर थूक देगा घृणा से...चलाओ न गोली ?.. पिस्तौल की नली नीचे झुकी जा रही है ! हाथ काँप रहा है तुम्हारा....'

और कविता के कम्पित हाथों से छूटकर जा गिरी पिस्तौल जमीन पर।

चिल्लाना चाहो तो चिल्लाओ... लोग आकर देखें कि एक

विधवा अपने देवर के साथ इतनी रात को बन्द कमरे में क्या कर रही है ? उनसे सब कुछ बता दूँगा भाभी ! तुमने हमको बुलाया था अपनी हसरत मिटाने के लिए, इसे सुनकर लोग बड़े खुश होंगे। माँ तो तुम्हें देवी ही समझेंगी....सर नीचा किये क्या सोच रही हो रानी ! करना हो जो जल्दी कर डालो, वर्ना मैं आगे बढ़ता हूँ....'

कविता ने अपना सर पकड़ लिया और बदहवास-सी होकर दीवाल से लग गई। शिकार को विवश देखकर शिकारी की आँखें चमक उठीं।

झुककर जमीन पर पड़ी हुई पिस्तौल उठा ली चंचल ने और ले जाकर आलमारी में रख दिया। फिर कविता के शरीर को अपने हाथों में बांधता हुआ बोला—'देखो रानी ! चंचल कभी हारता नहीं... शेर के पास कोई हथियार नहीं होता, केवल अपनी ताकत होती है ?...आओ पलंग पर बैठो....'

आज वह लुटी हुई नारी और लुटेगी। सब कुछ खोकर उसके शरीर पर जो थोड़ा-सा गोरा चाम बच रहा है, उस पर भी अब धब्बा लग जायगा कलङ्क का, बदनामी का, चरित्र-हीनता का।

कविता की आँखें बेहोश हो चलीं।

• •

'कभी-कभी तो तुम दिन में दस-बारह बार दिखाई पड़ोगे और कभी दस-दस दिन तक गायब रहोगे....कुछ पता ही नहीं लगता मुझे कि तुम कहाँ लुप्त हो जाते हो....' चंचल ने जमुना से कहा। इस समय वह अपने महल के एक कमरे में बैठा हुआ था और उसके सामने खड़ा था जमुना।

'क्या करूँ छोटे कुँवर !...' बैठता हुआ जमुना बोला।

'करोगे क्या ? दस दिन के बाद आज तुम्हारी काली सूरत दिखाई पड़ी है...ऐसा ही है तो तुम मेरा साथ छोड़ दो...'

'अब तो मौत ही साथ छुड़ायेगी मालिक !....आप सुनिये तो....बातैसी है कि मुझे बुखार आ गया था, ऐसा कि आज पूरे दस दिनों के बाद चारपाई छूटी है....मैं खुद परेशान था आप से मिलने को... इधर का समाचार कुछ बताइये। बहुत डोरे डाल रहे थे, पतङ्ग कटी या नहीं ?'

'कटते-कटते फिर उड़ गई जमुना ! क्या कहूँ अपनी किस्मत को ?' ठण्ढी साँस लेकर बोला चंचल।

'बड़ी ठण्ढी सांसें भर रहे हैं...बात क्या है ?' जमुना ने पूछा।

'क्या बताऊँ ! उस रात भाभी को फाँस चुका था, सिर्फ दस मिनट देर थी कि माँ पहुँच गईं।'

'रानी साहिबा ?....बाप रे बाप !....उतनो रात को वे वहाँ कैसे पहुँच गईं ?...'

'पता नहीं....चंचल बोला—'दरवाजा बन्द पाकर उन्होंने खटखटाया...मैंने खोला....माँ का चेहरा गम्भीर हो गया था.... मैं तो डर गया था। मगर माँ ने मुझसे कुछ नहीं कहा। भाभी से बोलीं—'ललित सो नहीं रहा है, बड़ा परेशान करता है बहू ...' इसके बाद मैं वहाँ से चला आया....'

'फिर ?....'

'दूसरे दिन मुझसे माँ ने पूछा कि मैं भाभी के कमरे में उतनी रात बीते क्यों गया था तो मैंने कह दिया भाभी ने बुलाया था....भाभी को माँ की नजरों से गिराना है न, इसलिए मैंने कहा।'

'रानी साहिबा सब कुछ जान तो नहीं गयीं ?...बन्द कमरे

के बाहर खड़ी-खड़ी सुनती रही हों सब कुछ ? और मौका देख-कर खटखटा दिया हो दरवाजा...'

शक तो मुझे भी है जमुना ! कि माँ मेरी चालों को बहुत-कुछ समझ गई हैं परन्तु उनकी आकृति देखकर मुझे विश्वास नहीं होता....जान लेने पर वे अब तक चुप न रहतीं....मगर भाभी तो सभी कुछ जानती हैं ...'

'तो क्या उनसे कुछ कम डर है ?'

'नहीं, माँ से मेरी शिकायत करने का उनमें साहस नहीं, इसका मुझे पक्का विश्वास है ! जो स्त्री पति की मौत पर भी अपनी जबान बन्द रख सकती है, वह छोटी-छोटी शिकायत लेकर माँ के सामने जायगी...'

'आगे इरादा ?...'

'मैंने चाल चल दी है' बोला चंचल—'भाभी से मुझे कोई आशा नहीं ! जोर जबरदस्ती से चाहें वे दो क्षण को आत्म-समर्पण कर दें मगर उन्हें हमेशा के लिए अपनी बनाना एक सपना है...ऐसी चाल फेंकी है जमुना कि एक ही वार में भाभी और ललित दोनों का सफाया ! थोड़ी-सी हिम्मत कर जाओ, तब देखो कि क्या गुल खिलता है...'

'अपनी चाल मुझे समझाइये....हिम्मत की कमी जमुना में नहीं....' उत्सुक होकर बोला जमुना....भयानक मुख पर हँसी लाकर।

जमुना के कान में न जाने क्या कहता रहा चंचल थोड़ी देर तक। जमुना भी बड़े गौर से सुनता रहा।

फिर बोला—'पक्की चाल है छोटे कुँवर ! इस बार तो जमुना जीत कर ही लौटेगा—'

'मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता....माँ को सन्देह हो जायगा। सारी जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है। वारिस साथ रहेगा। होशियार रहना—जीतकर लौटोगे तो भरपूर ईनाम के

लिए कोट के सभी जेब खाली किये आना...'
'आप विश्वास रखें छोटे कुँवर !....'
'तो तुम जाओ अब—मैं भी जरा माँ से मिल लूं—देखूँ उधर का क्या हाल है...'
जमुना चला गया। चंचल कपड़े बदल कर रानी साहिबा के महल की ओर बढ़ा।

अपने कमरे में रानी साहिबा पलंग पर लेटी थीं। ललित इधर-उधर दौड़कर खेल रहा था। तभी तेजो के साथ कविता वहाँ आ पड़ी। देखकर रानी साहिबा बोलीं—'आओ बहू! ललित को देखने आई हो या मेरा पाँव देखने?—पूछो मत बहू!...कल से ही गठिया तेज हो गई है। रात भर दर्द से परेशान रही...इस समय तो कुछ आराम है, दर्द उठता है तो हिलना-डुलना मुश्किल हो जाता है...बैठो कविता!'
कविता बैठ गई। रानी साहिबा के मुख की ओर उसने देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गई।

चेहरे पर गम्भीरता के पीछे छिपी हुई गहरी वेदना की स्पष्ट छाया झलक रही थी। लगता था, जैसे कोई गुप्त चिन्ता उन्हें दिन-रात सताया करती है। पीड़ा से वे घुलती जा रही हैं।
'माताजी! तबीयत तो आपकी ठीक रहती है न?....' पूछा कविता ने।
तो रानी साहिबा करुण स्वर में बोलीं—'बूढ़ी तबीयत का क्या पूछना बेटा?..साँस चलती चले, इतना ही बहुत है.. एक बात बता..चंचल इधर फिर तेरे पास गया था कभी?...'
'नहीं तो....' चौंककर कविता बोली—'क्यों?...'
'ऐसे ही पूछ बैठी...जानती हूँ कि मेरी बहू लक्ष्मी है। वह कोई ऐसा काम नहीं करेगी जिससे राजा साहब के खानदान में

घबरा लगे ..मगर चंचल को क्या कहूँ कविता ?—इतना बड़ा हो गया फिर भी समझ नहीं आई उसे। कोई गलती की हो उसने तो माफ करना बेटी ! इस बूढ़ी का ख्याल करके।'

'आप कहती क्या हैं माताजी ?...छोटे कुँवर से मुझे कोई शिकायत नहीं ...उन्होंने कभी कोई ऐसा काम नहीं किया, जिससे मुझे दुख पहुँचे...'

'मैं सब समझती हूँ कुँवरानी ! तू मुझे समझाने की कोशिश मत कर ...दुनिया देख-देख बूढ़ी हो चली, मगर नारी की कोख से सांप पैदा होते नहीं देखा...'

कविता चौंककर रानी साहिबा का मुख देखने लगी ?

तो क्या रानी साहिबा भी कुछ-कुछ जानती हैं ?

'वह तेरे हाथ में कैसा कागज है कविता ?...कोई चिट्ठी है क्या ?....'

'मैं इसीलिए तो आई थी, मगर भूलती जा रही थी....' कहकर कविता ने वह कागज रानी साहिबा के आगे रख दिया। वे उसे पढ़ने लगीं।

'तेरे पिता का पत्र है यह तो बहू ! तबीयत ज्यादा खराब है तेरे पिता को....पता नहीं कब चल बसें...तुझे बुलाया है, साथ ही ललित को भी....यह किसकी लिखी चिट्ठी है कविता ?'

'मुनीमजी ने लिखी होगी....'

'बूढ़े हो गये तेरे पिता ! कौन जाने इस बीमारी में क्या हो ?....कल ही से बोली बन्द है ...तुझे जाना ही चाहिए बेटी ?'

'मैंने तैयारी कर ली है माताजी ! बाहर कार खड़ी है... वारिस भी जा रहा है ..ललित को लेने आई हूँ....'

'ललित को यहीं छोड़ जा कविता ! अब तो इसके बिना जी ही नहीं लगता —गठिया आ गई, नहीं तो मैं खुद चलती तेरे साथ—' बोलीं रानी साहिबा !

'कहीं पिताजी को कुछ हो गया तो ललित को देखने को

लालसा अधूरी ही रह जायगी....मैं इसे कल ही भेज दूंगी माताजी ?'

'नहीं-नही, अकेले मत भेजना इसे नौकरों के साथ.... वहाँ होशियारी से रहना और इसे अपने साथ ही लेकर आना। दर्द कुछ कम हुआ तो मैं भी कल परसों तक आकर देख लूंगी....ओ ललित ! जा माँ के साथ....'

खेलता हुआ ललित रानी साहिबा के पास आकर बोला—'लानी माँ ! तुम अमको अपने मअल छे निकाल लई ओ !

'नहीं बेटा ! जाकर अपने नाना को देख आ, मैं भी कल आऊँगी वहाँ....'

'नाना मुझे लकली का धोला देंगे लानी माँ !'

'हाँ अब जा राजा बेटा !....'

कुँवरानी ने ललित को उठा लिया। तभी आ पहुँचा चंचल ! कविता मुँह फेर कर बाहर चली गई। चंचल की ओर देखा भी नहीं उसने।

मगर रानी साहिबा ने इस बात को बड़े गौर से देखा।

बाहर कार खड़ी थी, छोटी मगर तूफान-सी चलने वाली। ड्राइवर काफी हट्टा-कट्टा था और उसी की बगल में बन्दूक लिए बैठा था वारिस, तन्दुरुस्त बरगद जैसा।

कविता को देखकर ड्राइवर ने दरवाजा खोल दिया। वह ललित के साथ पिछली सीट पर जा बैठी।

ड्राइवर ने कार स्टार्ट की तो वारिस उससे बोला—'देखो भाई शङ्कर ! कार खूब तेज ले चलो...दुश्मन हमारे हजार हैं....खुदा क़सम जाने क्यों हाथ काँप रहा है....'

कार भाग चली। छोटा-सा शहर खत्म हो गया। सड़क हरे-भरे खेतों से गुजरने लगी। कभी-कभी दूर पर गाँवों की झोपड़ियों की दीवारें दिखाई पड़ जाती थीं।

कार की रफ्तार चालीस मील थी।

घण्टे भर के बाद ही सड़क के दोनों ओर छोटी-छोटी खुशनुमा पहाड़ियाँ दौड़ने लगीं। कोसों तक कहीं गाँव-गिराँव का नाम नहीं। बड़े-बड़े दैत्याकार पेड़ों के अतिरिक्त गुजरने वाले किसी आदमी की बू तक नहीं। वारिस चौकन्ना होकर चारों ओर देख रहा था। मञ्जिल का यही हिस्सा सबसे सुनसान और खतरनाक था—और वारिस के ऊपर इस समय दो कीमती जानों का भार था।

एकाएक वारिस चौंक पड़ा।

तेज स्वर में ड्राइवर से बोला—'भाई शङ्कर! खुदा कसम, कार की चाल कम दो....फौरन।...' वारिस के घबड़ाये स्वर ने कविता को चैतन्य कर दिया।

'क्या है वारिस?....' पूछा उसने।

'होशियार हो रहिये हजूर!....खुदा कसम, वारिस का कलेजा बेकार नहीं धड़कता...सामने देखिये....सौ हाथ की दूरी पर...किसी बदमाश ने हमारी कार को रोकने के लिए सड़क पर इस पार से उस पार तक एक मोटा रस्सा बाँध दिया है..'

ड्राइवर ने भी शायद देख लिया था। उसने कार की रफ्तार कम कर दी। मगर तेज जाने वाली कार रुकते-रुकते भी सड़क पर बँधे हुए रस्से से दस हाथ की दूरी तक पहुँच गई।

उसी समय वारिस चिल्लाया—'कार घुमाकर पीछे दौड़ा ले चलो—यहाँ एक मिनट भी न रुको....'

ड्राइवर ने कार घुमाई। तभी न जाने कहाँ से निकल कर सात-आठ आदमियों ने कार को चारों ओर से घेर लिया।

वारिस बन्दूक रखकर नीचे कूद पड़ा। सामने के दो आदमियों को दोनों हाथों से घूँसे जमाकर उसने गिरा दिया। चिल्लाकर बोला—'शङ्कर! तुम भी आओ जल्दी...इन बदमाशों से निपटना है...खून को पानी बनाकर बहा दो जवान!...'

वारिस चिल्ला भी रहा था और प्रबल वेग से उन बदमाशों

से लड़ भी रहा था। जो भी इस भीमकाय पहलवान के सामने पड़ता, वह जमीन सूँघने लगता था।

कार स्टार्ट छोड़कर लम्बा-चौड़ा शङ्कर भी कूद पड़ा। जमकर लड़ाई होने लगी।

'हजूर! आप पिस्तौल निकालकर इन शैतानों को दागिए....' वारिस गरज कर बोला—'खुदा कसम! वारिस की जान जब तक बाकी है, कोई मर्द का बच्चा आपको छू तक नहीं सकता....'

कुँवरानी इस अचानक आक्रमण से घबड़ा उठी थी। उसे स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि अपने बीमार पिता को देखने जाते समय उस पर यह विपत्ति आयेगी।

सभी आक्रमणकारी भिन्न-भिन्न पोशाकों से अपना मुँह और शरीर छिपाये हुए थे, जिससे उनको पहचानना कठिन था। वारिस की पुकार पर कुँवरानी सजग हुई।

उसने अपनी पिस्तौल उठाई, धायँ!....

चीख कर एक बदमाश लोट गया। वारिस के मुख से खुशी की एक चीख निकली—'एक-एक को ताक-ताक कर हुजूर!.... जवानी कसम, इन कुत्तों की खाल खींच लूँगा....'

बदमाशों का सरदार थोड़ी दूर पर खड़ा चुपचाप इस भयानक लड़ाई का दृश्य देख रहा था। कुँवरानी की गोली से अब तक दो बदमाश बेकार हो चुके थे।

सरदार ने धीरे पिस्तौल निकाली और कविता की ओर निशाना ठीक किया। तभी लड़ते-लड़ते वारिस की दृष्टि उधर पड़ी। चिल्लाया—'हजूर! सर नीचा कीजिये....गोली...'

चिल्लाता हुआ वारिस कूदकर सरदार के सर पर जा पहुँचा। गोली छूटने के पहले ही पिस्तौल जमीन पर जा गिरी। सरदार का मुँह एक घूँसे से लहूलुहान हो गया।

'ये लोग आपकी जान लेना चाहते हैं हुजूर?' वारिस पुनः

तड़पा—'श्राप सीट के नीचे छिप जाइये....ललित को भी....'

इस समय वारिस की बहादुरी देखते ही बनती थी। जान की बाजी लगाकर नमक अदा करनेवाला यह नौकर साक्षात् काल बन गया था। जिस्म की एक-एक सांस रहने तक वह कविता की जान और आन पर घेरा डाले रहेगा। किसकी मजाल कि उसके पास पहुँच सके।

उधर शङ्कर भी कम खतरनाक नहीं था।

मालिक के लिए जी जान से लड़नेवाले इन दो बहादुरों के आगे किराये पर लाये हुए गुण्डे शिथिल पड़ते जा रहे थे।

'शङ्कर तुम कार ठीक रखो, मैं आया....'

शङ्कर कार पर आ बैठा। मशीन पहले से ही चल रही थी। वारिस ने तीन बदमाशों को साथ ही पटका और कूद कर कार पर चढ़ गया।

कार में गति आई, और देखते-देखते वह काफी दूर निकल गई।

'अब सीट पर बैठ जाइये हुजूर!...' वारिस ने कहा।

कविता नीचे से उठकर सीट पर बैठ गई, ललित को भी उसने गोद में बिठा लिया।

'किधर चल रहे हो वारिस?' पूछा उसने। इतनी घबड़ा गई थी वह कि दिशा का ज्ञान भी भूल बैठी थी।

'महल को लौट रहा हूँ हुजूर!....' वारिस ने कहा—'खुदा कसम आगे जाने में बेहद खतरा है...यह छोटे कुँवर की कोई चाल थी सरकार!...मेरा दिल कह रहा है कि वह खत नकली था...आप के वालिद हुजूर अभी लाख बरस जिन्दा रहेंगे। सीधे महल पहुँच कर कार रुकेगी अब तो....और तेज शङ्कर!...यह बियाबान पीछे छूट जाय तो आहिस्ता चलना....'

कार की तेजी बढ़ी। नीचे भागती हुई जमीन एक भूरे परदे-सी नजर आने लगी!

'हमारा पीछा किया जा रहा है ..कार को आवाज....' वारिस ने पीछे घूम कर देखा—'कार ही तो है....बड़ी तेज आ रही है...वे ही बदमाश सवार हैं....शंकर ! और तेज....'

तभी पिछली कार से धायँ की आवाज आई और एक गोली वारिस के सर पर से भन्नाती हुई निकल गई।

'हुजूर पिस्तौल मुझे दीजिये ..आप सीट पर लेट जाइये... शङ्कर ! खुदा कसम वे लोग पास आते जा रहे हैं ...'

कविता ललित को लेकर सीट पर लेट गई। वारिस पिस्तौल ताने उठ खड़ा हुआ।

धायँ !....वारिस की गोली छूटी।

और पिछली मोटर पर एक जोरदार धड़ाका हुआ।

'वह मारा ! ...' वारिस खुशी से चीख पड़ा—'उनकी पहिया पंचर कर दी मैंने ..अब भाग चलो शङ्कर !....दो तीन कोस रह गया है शहर !...शुक्र है तेरा अल्लाह ! वारिस की इज्जत तूने रख ली...अब ठीक से बैठ जाइये हुजूर !....'

कविता पुनः उठ कर बैठ गई।

पन्द्रह मिनट बाद ही सड़क कुछ चौड़ी मिली, मगर धूल से भरी ...आते-जाते दो-एक मुसाफिर भी दीखने लगे।

अधेड़ उम्र का एक सौदागर टट्टू पर बहुत-सा सामान लादे पैदल ही चला आ रहा था। बेचारा तेज आती हुई कार का धक्का खाते-खाते बचा।

शङ्कर अब भी कार को तेज लिए जा रहा था।

'वह देखिये हजूर !...' वारिस बोला—'आगे सड़क के किनारे....कैसी अजीब पोशाकें हैं उनकी ?....खुदा कसम ? सांप की खाल पहने हैं ...एक छोकरी है, एक जवान ...दोनों इसी तरफ देख रहे हैं।

कहते-कहते वारिस रुक गया और गौर से उस ओर देखने लगा, जहाँ सौ गज आगे सड़क के किनारे एक युवती और एक

युवक खड़े हुए कार की ओर आश्चर्य के साथ देख रहे थे। दोनों के बदन पर विचित्र ढङ्ग की पोशाकें थीं।

एकाएक वारिस चौंककर बोला—'हजूर! उस जवान को आप देख रही हैं, जो उस लड़की के बगल में खड़ा है?.. खुदा कसम! वारिस की आँखों ने इतना बड़ा धोखा नहीं खाया था... वही हैं सरकार! बिल्कुल वही ..अपने बड़े कुँवर साहिब!... या अल्लाह! मेरी आँखों को क्या हो गया आज?...कहाँ अजगर का खौफनाक जबड़ा, कहाँ इस जङ्गली लड़की का साथ...'

कविता भी उसी ओर देख रही थी। तभी कार उस स्थान से होकर गुजरी, जहाँ वे दोनों खड़े थे?

वारिस के मुख से खुशी की एक चीख निकली।

कविता के मुख से सुनाई पड़ा गम्भीर स्वर—'शङ्कर! कार रोको...'

थोड़ी दूर आगे जाकर कार रुकी।

'पीछे लौटाओ...'कविता ने आज्ञा दी—'तुम वारिस अपने होश दुरुस्त कर रखो...ज्यादा चिल्लाओ मत....'

मगर सच बात तो यह थी कि उस विचित्र लड़की के साथ सड़क के किनारे खड़े युवक को एक नजर देखकर ही कविता का कलेजा धड़कने लगा था।

हे ईश्वर! आज यह क्या गुल खिलना चाहता है?

पीछे खिसटती हुई कार उस स्थान पर आ खड़ी हुई, जहाँ वे दोनों खड़े थे।

कविता और वारिस गौर से उस युवक को देखने लगे।

युवक भी इन्हीं की ओर देख रहा था, मगर इन्हें पहचानने का कोई भाव उसके चेहरे पर नहीं था।

अर्द्ध-पागल-सा वह इन्हें घूर रहा था।

कविता परेशान हो उठी! जिससे कभी मिलने की आशा न हो, उसे सामने देखकर कौन होश में रह सकेगा?

मगर कविता के जागरण एवं सपनों में, उसकी आँखों पर तिरने वाली यह प्यारी-प्यारी सूरत उसके पास होकर भी उसे पहचानती क्यों नहीं ?

'वारिस ! जाकर पूछो....' उसने आज्ञा दी।

वारिस भी अब तक सँभल चुका था। कार से उतर कर वह उधर को चल पड़ा। उसे आते देखकर उस युवती ने युवक को अपने पीछे कर लिया।

वारिस कुछ बातें करके कविता के पास लौट आया।

बोला—'इनका दिमाग फिर गया है...आप देखती नहीं, सूरत कैसी पागलों जैसी हो रही है ?....ये किसी को पहचान नहीं पा रहे हैं ..'

'हैं तो वही न ?....' कविता ने पूछा।

इस समय आवेग से उसका चेहरा लाल हो गया था !

'बिल्कुल वहीं हैं सरकार !... खुदा कसम, जरा भी फरक नहीं....नाक पर का छोटा-सा तिल आप देख लीजिये....'

'तो ले चलो इन्हें' कविता ने कहा—'वह लड़की रोके तो धक्का दे दो....'

वारिस घूम पड़ा ! पास जाकर उसने उस युवक का हाथ पकड़ा और उसे कार की ओर घसीट ले चला। युवक छटपटा रहा था। बड़ी कठिनाई से वारिस ने उसे कार के अन्दर ढकेला और स्वयं उसे पकड़ कर कविता के पास बैठ गया।

तभी वह युवती 'परदेसी-परदेसी' चिल्लाती हुई दौड़ी आई तो वारिस ने उसे ढकेल दिया।

कार भाग चली वेग से।

'मुझे छोड़ दो...मुझे जाने दो....मेरी मैना !' वह युवक चिल्ला रहा था और वारिस के हाथों से छूटने के लिए जोर मार रहा था।

वारिस के हाथों में कई जगह उसने अपने दांत लगा दिये थे।

'हजूर ! बड़े कुँवर साहिब एक दम पागल हो गये हैं'—वारिस बोला—'मुझे इनके हाथ-पेर बांधने और मुँह में कपड़ा ठूंसने की इजाजत दें....गुस्ताखी माफ हो सरकार ! इनको कब्जे में करना मुश्किल हो रहा है...'

कविता बेहोश-सी हो रही थी। उसने इशारों से अपनी आज्ञा व्यक्त की। कार खड़ी कर दी गई। शङ्कर और वारिस ने मिलकर उस युवक के हाथ-पैर बाँध दिये और मुँह में कपड़ा डाल आवाज बन्द कर दी।

कार पुनः चल पड़ी।

कविता की आँखों में आंसू बहने लगे—एक आँख से अचल को पा लेने की खुशी के, और दूसरी आँख से अचल के दिमाग खराब हो जाने के गम के।

'या खुदा यह सब कैसे हो गया ?....हुजूर कुँवर साहिब अजगर के पेट में जाकर कैसे बच गये ? .. इनका दिमाग कैसे खराब हो गया ?... * मेरे अल्लाह ! तू सबको बुलाकर फिर वापस भेज दिया करे ऐसे ही....अब क्या होगा हजूर ! कुँवर साहिब का दिमाग कैसे ठीक होगा ?....'

'सब ठीक हो जायगा वारिस !'—प्रगाढ़ चिन्ता में निमग्न कविता बोली।

'इन्हें पा लिया है सरकार ! मगर खुदा कसम इनके खो जाने का बेहद डर है...छोटे कुँवर को पता लग गया तो आफत मचा देंगे...'

'मैंने सोच लिया है वारिस !'—बोली कविता—'जब तक इनका दिमाग ठीक नहीं होता, मैं इन्हें अपने महल में छिपाकर रखूँगी। डाक्टर दास विश्वासी आदमी हैं। अपनी बीमारी के

---

* अचल अजगर के पेट से कैसे बचा, कई महीनों तक वह कहाँ था, उस पर क्या-क्या विपत्तियाँ आयीं, उसका दिमाग कैसे खराब हुआ, उसके साथ की लड़की कौन थी—आदि बातें 'परदेसी' में दी जा चुकी हैं।

बहाने उन्हें बुलाकर इनका इलाज कराऊँगी...देखूँ क्या फल होता है....'

शहर आ गया था। शाम हो चली थी। चहारदीवारी के अन्दर कार घुसी और कविता के महल के सामने आ रुकी।

'तुम इन्हें पीठ पर लादकर चुपके से मेरे कमरे में पहुँचाओ...' कविता ने वारिस से कहा—'कोई देखने न पाये.... मैं ललित को रानी माँ के पास छोड़कर अभी आती हूँ...तब तक तुम इनके पास रहना....'

उसने ललित को गोद में उठा लिया और रानी साहिबा के महल की ओर चल पड़ी।

रानी साहिबा लेटी हुईं चंचल से कुछ बातें कर रही थीं–कविता को देखकर चौंक पड़ीं—'बहू तू लौट आई ?....'

'बीच से ही वापस आना पड़ा माँ ! वह खबर झूठी थी....'

कविता ने ललित को रानी साहिबा के पास पलङ्ग पर बिठा दिया !

'झूठी खबर थी ? क्या कहती हो बहू...'

'रास्ते में सात-आठ बदमाशों ने हम पर हमला किया था....वारिस जान पर खेल गया...किसी तरह हम लोग बचकर निकल आये....'

'हूँ....' कहकर रानी साहिबा गम्भीर हो कुछ सोचने लगी।

चंचल तो कविता को देखते ही मुर्दा-सा बन गया था। सोच-विचार कर चली हुई उसकी यह चाल भी असफल रही।

'तू जा बहू।'—रानी साहिबा बोलीं—'मुझे कुछ न कुछ अब करना ही पड़ेगा...बदमाशों की बदमाशी बढ़ती ही जा रही है—मैं सुबह वारिस को बुला कर पूछूँगी...'

कविता को भी जल्दी थी। वह चल पड़ी अपने महल की ओर। थोड़ी देर बाद चंचल भी चला गया।

ललित को गोद में लिए रानी साहिबा कुछ सोचती रहीं। चेहरे की बूढ़ी नसें कभी-कभी फूल उठती थीं। वेदना की छाया

आँखों में आंसू बन दो-चार बूँदों में ढल जाती थी।

कोई महान चिन्ता थी रानी साहिबा को। कोई दुर्दमनीय कष्ट था, जो इस बुढ़ापे में उन्हें कष्ट दे रहा था, उन्हें बेचैन किये जा रहा था।

• •

दूसरे दिन शाम को—

चंचल अपने कमरे में बेचैनी से टहल रहा है। कल जब से उसने कविता और ललित को अपने जाल से बचकर निकल आते देखा है, क्रोध से जल रहा है।

उसे नींद नहीं आती, खाना नहीं अच्छा लगता।

जमुना भी उससे फिर नहीं मिला। मरा है अब तक या जीता, कुछ पता नहीं। उसने कल रात से आज शाम तक पीते-पीते दो बोतलें खत्म कर दी हैं। नशे से भरा हुआ दिमाग और उड़ता जा रहा है।

तभी महल के बाहर किसी कार के रुकने की हल्की-सी आवाज आई और थोड़ी ही देर बाद परेशानी की मुद्रा धारण किये हुए जमुना अन्दर आया।

उसे देखकर चंचल का क्रोध और भी उदीप्त हो उठा। लपक कर वह उसके पास आया। लाल-लाल आँखों से उसे घूरता हुआ बोला—'अब लौट रहे हो जीत कर तुम? कल शाम को अपनी सूरत दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ी तुम्हें?....मैं फिर कहता हूँ कि तुम हमारा साथ छोड़ दो, अपना रास्ता लो....'

'सुनिये....तो कुँवर!....' जमुना बोला—'बातैसी है कि मैं बड़ी परेशानी में पड़ गया था....सब कुछ बताता हूँ...कल आपके कथनानुसार सात गुण्डों को लेकर मैं उस छोटी-सी पहाड़ी के पास छिपा था। सड़क पर इस पार से उस पार तक

हमने रस्ता बाँध दिया था ...जैसे ही कुँवरानी की कार आई और रुकी, वैसे ही हम लोग टूट पड़े....वारिस और शङ्कर ने हमसे जमकर लड़ाई की। मैंने कुँवरानी और ललित पर पिस्तौल तानी मगर वारिस ने देख लिया....हमें परास्त कर वे भागे....कार पर हमने पीछा किया....हमारी पहिया पंचर कर दी...दूसरा पहिया लगाते-लगाते वे लोग काफी आगे भाग चुके थे फिर भी हमने पूरी तेजी से पीछा किया ...आखिर वे लोग नहीं ही मिले....'

'मिला क्या खाक ?....'

'खाक नहीं छोटे कुँवर !...एक लड़की ! किसी विचित्र गाँव की रहनेवाली, मगर बेहद सुन्दर....देखेंगे आप तो खुश हो जायँगे ...रास्ते में मिल गई। साँप का चमड़ा पहने हुए थी और एक भयानक आदमी उसका हाथ पकड़ कर घसीटे लिए जा रहा था। वह भी कोई सँपेरा मालूम पड़ता था। मैंने मोटर रोक कर लड़की को छुड़ाया...अपना नाम मैना बताती है छोटे कुँवर ! कहती है, वह एक परदेसी के साथ भाग कर शहर आई थी, जिसे कुछ लोग पकड़ कर शहर की ओर ले गये—और उसे घसीट कर ले जाने वाला उसी के गाँव का टिकोरा नामक एक सँपेरा था, जिसने उसके बाप की जान ली और उसका पीछा करता-करता यहाँ तक आया था ...पहले तो वह बहुत उछली-कूदी, मगर जब मैंने उसे यह विश्वास दिलाया कि शहर ले चलकर उसके परदेसी की खोज करूँगा तब चुपचाप साथ चली आई...'

'कहानियों पर मुझे विश्वास नहीं होता जमुना !....'

'कहानी नहीं कुँवर साहब ! सत्य घटना है ..वह लड़की मेरे साथ आई है ...कल रात में देर ज्यादा हो गई थी इसीलिए नहीं लाया आपके पास ...दिन में उसे लेकर आता तो लोग शंका करते, इसीलिए अब शाम को छिपा कर लाया

हूँ....पहले आप उसे देख तो लें....'

'ओ....' कुँवर ने कहा और कोच पर जा बैठा।

जमुना बाहर चला गया। थोड़ी देर में लौटा तो उसके पीछे सिमटी-सकुचाई सौन्दर्य की एक प्रतिमा भी थी।

चंचल एकटक उसे देखता रह गया। आसमान पर एक चाँद है केवल, तो जमीन पर सैकड़ों हैं, इसका विश्वास करना पड़ा चंचल को।

'देखो मैना !...' जमुना उस लड़की से बोला—'ये यहाँ के राजा हैं। इन्हें खुश कर दो, ये तुम्हारे परदेसी की खोज करा देंगे....'

'सरकार !' मैना ने लपक कर चंचल का पैर पकड़ लिया— मेरे परदेसी को बुला दो....तुम्हारे शहर के लोग उसे पकड़ लाये हैं...'

मैना की बोली ने तो चंचल पर और गजब ढाया। अपना पैर छुड़ा कर बोला—'तुम ठीक से बैठो मैना ! और मैं जो पूछता हूँ उसका जबाब दो...'

मैना कुछ दूर हटकर जमीनपर बैठ गई। बोली—'मैं सब कुछ बता दूँगी सरकार ! मेरा परदेसी मुझे मिल जाय !'

'तुम कौन हो !'

'मैं दूर गाँव की एक दुखिया हूँ सरकार ! सँपेरों के सरदार की बेटी....नाम मैना है .. टिकोरा मुझे बहुत सताता था....मेरे बापू की जान ले ली उसने और खुद सरदार बन बैठा। डरकर मैं अपने परदेसी के साथ भागी, मगर मेरा पीछा नहीं छोड़ा... उसी से इन बाबू ने मुझे बचाया था....'

'परदेसी को तुम प्यार करती हो ?....'

'हाँ सरकार....बहुत-बहुत....' कहते-कहते मैना के गाल लज्जा से लाल हो उठे।

'कौन था परदेसी ?....क्या नाम था....'

'मैं क्या जानूं सरकार....टिकोरा जङ्गल से एक अजगर पकड़ लाया था, उसी के पेट से वह निकला था, बेहोश....'

'अजगर के पेट से निकला था ? आदमी ?' चौंककर बोला चञ्चल। उसका चेहरा गम्भीर हो चला था।

'हां सरकार !...हम लोग अजगर का मांस खाते हैं...मेरे बापू ने अपनी दवा और मन्तर के जोर से उसे जिला दिया, मगर उसका माथा खराब हो गया ! वह अपना नाम-गांव सब कुछ भूल गया था....'

चञ्चल ने एक गहरी निगाह डाली जमुना पर।

जमुना भी गम्भीर था। धीरे से बोला—'शायद बड़े कुँवर ही रहे होंगे....'

'तुम घबड़ाओ मत मैना ! मैं तुम्हारे परदेसी की खोज करूँगा...तुम मेरा कहना मानोगी तो...'

'मानूँगी सरकार !.... आप जो कहें करने को तैयार हूं, मगर मेरा परदेसी....'

चञ्चल ने एक आंख दबाकर जमुना को इशारा किया। जमुना भयानक ढङ्ग से मुस्कुराता हुआ बाहर चला गया। बाहर से दरवाजा बन्द होने की आवाज सुनकर मैना चौंकी—'दरवाजा क्यों बन्द कर दिया ?....'

चञ्चल ने झुककर जमीन पर बैठी हुई मैना का हाथ पकड़ उसे खींच लिया और अपने पास बिठाता हुआ बोला—'अभी से घबड़ा गई तुम ?...परदेसी को पाना चाहो तो मेरे मन की कर दो....'

'मैं बहुत सताई हुई हूं बाबू !' मैना गिड़गिड़ा कर बोली—'मेरे पास अपना कुछ नहीं....सब कुछ उस परदेसी का है.... नहीं-नहीं...मैं नहीं....'

तभी दरवाजा खोलकर घबड़ाया हुआ जमुना अन्दर घुसा—'छोटे कुँवर, रानी साहिबा आ रही हैं....'

'इस लड़की को चटपट कहीं छिपा दो जमुना ! माँ के सामने इसका पड़ना ठीक नहीं....' चञ्चल परेशान स्वर में बोला।

जमुना ने मैना का हाथ पकड़ लिया और उसे घसीट कर ले चला, तभी —'उसे छोड़ दो जमुना !...' दरवाजे पर खड़ी रानी साहिबा का स्वर सुनाई पड़ा !

मैना का हाथ छोड़कर जमुना दूसरी राह से बाहर भागा। चञ्चल का सर नीचा हो गया। चेहरे पर मुर्दनी छा गई।

मैना आश्चर्य से उस बूढ़ी नारी की ओर देखने लगी, जिसे देखते ही दो-दो नरपिशाच पङ्गु बन गये थे।

रानी साहिबा भी गौर से उसकी ओर देख रही थीं। इन्सान को साँप की खाल पहने उन्होंने आज ही देखा था।

'तू कौन है बेटी ?...यहाँ क्यों आई है ?' रानी साहिबा ने पूछा।

'मेरा नाम मैना है मैया ! मेरा परदेसी खो गया है....'

'माँ, यह लड़की जमुना को मिल गई थी....मैं इससे अभी-अभी इसका परिचय पूछ रहा था कि तुम आ गईं—'चञ्चल बोला साहस करके।

'किसी परदेसी के साथ यह शहर तक आई है....बेचारी अनजान जगह में आकर बड़ी परेशान हो उठी है....मैं इसे आपके पास भेज रहा था, परन्तु यह जा ही नहीं रही थी तो जमुना इसे घसीटने लगा कि आप आ पहुँची....' चञ्चल बराबर अपनी सफाई दिए जा रहा था।

'यह मेरे पास रहेगी....' रानी साहिबा बोलीं—'चलो मैना ! तुम्हारा जब तक जी चाहे, मेरे साथ रहना ! परदेसी तुम्हारा मिल जाय, तो चली जाना...'

कहकर रानी साहिबा घूम पड़ीं। मैना भी उनके पीछे-पीछे कमरे से बाहर हो गई। चञ्चल हाथ मलने लगा। मैना उसे अँगूठा दिखा चली गई थी।

कविता को अचल मिला सही, मगर अन्धा-गूंगा-बहरा होकर। वह उसे देखता है मगर पहचानता नहीं। उससे कभी प्रेम की बातें नहीं करता। वह सुनता है मगर जवाब नहीं देता।

कविता जानती है कि अचल का मस्तिष्क विकृत हो गया है। वह पिछली सारी बातें भूल गया है। वर्तमान को पाकर अतीत की स्मृति उसे नहीं, तभी तो वह दिन-रात मैना-मैना रटा करता है।

पति का दूसरी स्त्री के पीछे पागल होना, पत्नी पर सबसे बड़ा प्रहार है। फिर भी कविता सब कुछ सहन कर रही है।

विक्षिप्त पति की वह बच्चे की तरह सेवा करती है, उसे दुलारती-पुचकारती है, परन्तु अचल की जबान पर एक मैना ही जीवित है। अन्य सभी लोग मर चुके हैं उसके लिए। कभी-कभी टिकोरा का नाम लेकर वह दांत पीसता है।

वह अवसर पाकर भाग जाना चाहता है। कविता तो दूसरों से उसकी छाया तक को बचाती है। अचल पहले ही असावधान था, अब तो पागल हो गया है। चञ्चल को पता लग जाय तो वह उसकी जान लेने के लिए जमीन-आसमान एक कर दे।

इसीलिए कविता उसे एक एकान्त कमरे में बन्द रखती है। अपनी बीमारी का बहाना करके किसी से मिलती-जुलती नहीं, दिन-रात अचल के पास बनी रहती है।

मगर अचल उसे देखते ही इस तरह से डर जाता है, जैसे किसी मासूम बच्चे के आगे कोई चुड़ैल आ पड़ी हो। वह उसकी कुछ सुनता नहीं। कभी-कभी उसके पैर पकड़कर मैना से मिला देने की करुण प्रार्थना करता है। कभी रोते-रोते जमीन पर लोट जाता है!

कविता बेचारी बहुत-बहुत परेशान है। अब तक अचल के

विषय में केवल चार ही व्यक्ति जान पाये हैं—कविता, वारिस, शङ्कर और डाक्टर दास ! मगर ऐसा ही हाल रहा तो कविता कितने दिनों तक उसे छिपाये रहेगी ?

डाक्टर दास बीमार कविता को देखने बहाने दिन में दो बार अचल को देखने आते है मगर अचल न तो ठीक से दवा पीता है, न अपनी जांच करने देता है। बेचारे वारिस को अपने पागल मालिक के साथ कभी-कभी बेरहमी का बर्ताव करना पड़ जाता है और उसकी आँखों से आंसू चू पड़ते हैं।

जबर्दस्ती उसे बहुत-सी दवायें खिलाई गयीं, इन्जेक्शन दिये गये, मगर लाभ कुछ नहीं हुआ।

शाम के समय डाक्टर दास कविता के कमरे में उपस्थित हैं। रानी साहिबा पलङ्ग के सामने जड़ाऊ कुर्सी पर बैठी हैं। कविता की बीमारी का हाल सुनकर वे उसे देखने आई हैं।

बेचारी कविता को झूठा बहाना बनाकर, बीमार बन पलङ्ग पर लेटना पड़ा है।

डाक्टर दास रानी साहिबा को दिखाने के लिए कभी कविता की नाड़ी पकड़ते कभी उसकी जीभ देखते हैं।

'बहू कब से बीमार पड़ी है, मगर एक दिन भी देखने न आ सकी...' रानी साहिबा ने कहा—'गठिया का रोग ही बड़ा विचित्र होता है डाक्टर ! चल-फिर नहीं पाती और क्या कहूँ.... पड़े-पड़े ललित से बातें किया करती हूँ या उस छोकरी मैना से उसके परदेसी की कहानी सुनती हूँ....'

मैना का नाम सुनकर डाक्टर चौंक पड़ा। यह नाम अक्सर अचल के मुख से सुनता आया है।

'डाक्टर !... अजगर के पेट में जाकर क्या आदमी जिन्दा बच सकता है ?....' रानी साहिबा ने कुछ सोचते हुए पूछा।

'सम्भव नहीं....' डाक्टर बोला—'फिर यदि चार पांच घण्टों से अधिक देर न हुई रहे तो कुछ उम्मीद की जा सकती

है...उस हालत में उसे जीवन देना एक्सपर्ट डाक्टर का ही काम है...बात यह है कि अजगर के पेट में जाकर इन्सान गर्मी से बेहोश हो जाता है, मगर उसकी जान निकलते-निकलते कुछ घण्टे लग जाते हैं ...सांप का काटा आदमी इक्कीस दिन तक जीवित रहता है रानी साहिबा ! ..'

'मन्त्रों पर क्या तुम विश्वास करते हो डाक्टर ?'

'सुना तो बहुत कुछ है, मगर विश्वास करने का कोई अवसर ही नहीं आया...'

'मैना कहती है कि उसका बापू बहुत से मन्त्र जानता था और अजगर के पेट से निकले हुए परदेसी को उसने जिन्दा कर दिया था, मगर परदेसी का दिमाग खराब हो गया....विश्वास तो नहीं होता डाक्टर ! इस कहानी पर .. कहीं मेरा अचल भी ऐसे ही बच गया हो, इस आशा को लेकर आजकल मैं मन्त्रों पर विश्वास करने लगी हूँ... अच्छा चलूँ, तुम ठीक से रहना बहू ! अपनी बीमारी का ख्याल रखना...जमाना बुरा है...'

उठकर रानी साहिबा चली गईं। कविता उठ बैठी। रानी साहिबा की गम्भीरता उत्तरोत्तर जटिल होती जा रही थी। कविता सुलझना चाहकर भी उलझती ही जाती थी।

वारिस की जबानी कविता को पता लग चुका था कि अचल के साथ वाली लड़की को चञ्चल के आदमी पकड लाये हैं और वह आजकल रानी साहिबा के महल में रह रही है।

मगर उसने यह आज ही जाना कि अचल को मैना के बाप ने अजगर के पेट से निकालकर जीवित किया था। अगर ऐसा है तो मैना के बहुत से उपकार उसके ऊपर हो चले हैं।

'क्या सोच रहे हैं डाक्टर साहब ?....'

'कुछ नहीं...रानी साहिबा ने अभी जिस लड़की का नाम लिया, क्या वही बड़े कुँवर के साथ थी ?...'

'हां ?...' कविता ने गम्भीर स्वर में कहा।

'मैं सोचता हूँ, बड़े कुँवर के ऊपर इतनी कीमती दवाओं का असर क्यों नहीं हो रहा है?.. इस वक्त ये इस मैना की याद में बेहद परेशान हैं। जब तक इन्हें उससे मिलाया नहीं जाता तब तक इनके दिमाग को सुधरने की फुर्सत नहीं मिलेगी... दवायें बेकार होती रहेंगी...'

'डाक्टर!....' कविता चौंककर बोली—'क्या यही रास्ता है....'

'सिर्फ यही.. मैं चलता हूँ, कल सवेरे आऊँगा। आप इस बात पर गौर करें। जब वह लड़की इतने पास है, तो कोई कारण नहीं कि हम उसे बड़े कुँवर से दूर रखकर इनका मर्ज और बढ़ावें....' कहकर डाक्टर उठ खड़े हुए।

उनके बाहर जाते ही कविता पलङ्ग पर लोट गई। आँखों से आँसू बह चले! विचारधारायें मस्तिष्क में तूफान-सी उठ खड़ी हुईं।

नारी का कलेजा इतना बड़ा नहीं कि वह अपने पति की गोद में अपने ही हाथों दूसरी नारी को बिठाये।

मगर कविता करेगी सब कुछ। मैना के कारण वह अपने पति को देख सकी है, उसका यह अहसान वह भूल नहीं सकती। सौत का नाम बुरा होता है....मगर पुरुष की छाया इतनी कम नहीं कि उसमें दो नारियाँ खड़ी न हो सकें।

कविता मैना को अपनी बहन मानेगी। खुश होकर अचल उसे जितना अधिकार देगा, उतने में ही वह सीमित रहेगी। दिमाग ठीक हो जाय उसका यही चाहती है कविता।

'वारिस! .' पुकारा उसने।

'आया हजूर!...' आ गया वारिस।

'देखो, तुम किसी नौकर को रानी माँ के महल में भेजकर उस लड़की को बुला लो!....रानी माँ को कहला दो कि गुलनार को बच्चा हुआ है और मेरी तबीयत खराब है, सो मेरे पास सेवा-टहल के लिए उसका होना जरूरी है...'

'खुदा कसम, मैं खुद जाता हूं....'

'नहीं, तुम्हें वह पहचानी है. देखकर वहीं लगेगी चिल्लाने... शङ्कर को भी मत भेजो.. कालीचन्द को भेज दो.... जाकर अभी लाये उसे....'

वारिस चला गया। कविता पलङ्ग पर बैठी-बैठी पुनः विचार-सागर में निमग्न हो गई।

आधे घण्टे बाद वारिस मैना के साथ लौटा, बोला—'यह तो काली चन्द के साथ आती ही नहीं थी हजूर! रानी माँ ने डांटा तो चली आई चुपचाप। दरवाजे पर मुझे देखा तो पैर पकड़ कर लिपट गई। अब आप ही इसका परदेसी इसे दीजिए....'

मैना की दृष्टि कविता पर पड़ी तो वह दौड़कर उसके पैरों से लिपट गई। रोने लगी। बोली—'सरकार! मेरा परदेसी आपके किसी काम का नहीं....उसे छोड़ दीजिये....वह पागल है। मर जायगा वह हजूर मेरे बिना...'

कविता ने उसका हाथ पकड़ कर उठाया और प्यार से उसे अपने पास बिठा लिया। कहने लगी—'मैना! मैं तुम्हारा परदेसी लौटा दूंगी, मगर एक शर्त पर....'

'मुझे उसकी एक झलक दिखा दो सरकार! फिर जान भी मांगो तो दे दूं....'

'तुम वादा करो कि अपने परदेसी के साथ हमेशा मेरे पास रहोगी....'

'मैं वादा करती हूं....'

'जब तक उसका दिमाग ठीक नहीं हो जाता, तब तक तुम किसी से भी उसका जिक्र न करोगी....उसे छिपाकर महल के अन्दर रखोगी....उसे कह-सुनकर दवा पिलाओगी....'

'मैं सब कुछ करूंगी, मगर तुम भी वादा करो कि उसका दिमाग ठीक होते ही तुम मुझसे उसको फिर नहीं छीनोगी....'

'मैं वादा करती हूँ...' कविता ने रुद्ध कण्ठ से कहा।

'आप बहुत दुखी हैं सरकार...मेरे परदेसी के लिए आप इतनी परेशान क्यों हैं....आपका कौन है वह ?'

'मेरे पति !....'

'वह ललित आपका बेटा है ?....'

'हाँ...'

मैना के चेहरे पर करुणा खेलने लगी। इतनी बड़ी रियासत का मालिक है उसका परदेसी ! उसके गुलाब जैसी पत्नी और कमल जैसा बेटा है। दिमाग ठीक होते ही मैना जैसी नाचीज के लिए उसकी आँखों में क्या जगह रह जाएगी ?

'क्या सोच रही हो मैना ?... मैंने वचन दिया है तुम्हें... मेरा विश्वास करो....मेरे पति पर पहले तुम्हारा अधिकार होगा उसके बाद मेरा ..'

'मुझे अधिकार नहीं चाहिए सरकार ! मुझे प्यार चाहिए ...' मैना रोने लगी—'मेरे परदेसी का दिमाग ठीक होता तो वह कभी मुझसे दिल न लगाता....मगर अब तो गलती हो ही गई....सब कुछ छीन लेना, मगर मुझे दुत्कारना मत नौकरानी की जगह भी मुझे दे दोगी तो परदेसी को देख-देखकर जिन्दगी काट लूँगी....और कुछ नहीं चाहिए मुझे....'

'तू कैसी बात करती है मैना ? मेरी बहन है तू...चल उनसे मिला दूँ....रानी माँ ने तुझे उनके बारे में कुछ नहीं बताया था क्या ?...'

'नहीं, वे सिर्फ मेरी कहानी सुनती थीं, अपनी बात कुछ नहीं बताती थीं....एक बार सिर्फ यही बताया था कि तुम्हारे पति का नाम अचल था, जिन्हें मरे कई महीने हुए....'

'मेरे साथ आ....'

कविता चल पड़ी। मैना भी पीछे हो ली।

आंगन में पहुंच कविता ने एक दरवाजा दिखाकर कहा –
'उसी में हैं वे....जा मिल आ....'

मैना आगे बढ़ी। दरवाजा बाहर से बन्द था। धीरे से खोला उसने।

भीतर अचल चीखा—'मुझे जाने दो....मेरी मैना रो रही होगी....'

'परदेसी !'—मैना भीतर घुसी।

अचल ने चौंककर देखा, फिर दौड़कर मैना को अपनी बाहों में कस लिया—'मेरी मैना ?....तुमसे छूटकर मैंने बहुत दुख सहे....अब कभी साथ नहीं छूटेगा....यहाँ के लोग बड़े खराब हैं...हम दोनों मौका पाते ही भाग चलेंगे...'

'नहीं हम यहीं रहेंगे अचल बाबू !' मैना करुण स्वर में बोली।

'अचल बाबू ?...यह कौन है मैना ?....'

'यह तुम्हारा नाम है, मैंने रखा है....'

'तुमने रखा है, तब तो ठीक है, मगर मुझे परदेसी नाम ज्यादा अच्छा लगता है, मुझे उसी नाम से पुकारा करो... तो यहाँ से नहीं चलोगी तुम ?....'

'नहीं...यहाँ के लोग बड़े अच्छे हैं।'

'तभी तो मुझे पकड़ लाये थे और इस कमरे में बन्द कर रखा था....मैना ! यहाँ मेरा दिल नहीं लग सकता ...एक वह है जिसे लोग कुँवरानी कहते हैं और जो मुझे पकड़ लाई थी.... बड़ी चालबाज है....कहती है, मैं उसका पति हूँ....'

'उन्हें बुरा मत कहो परदेसी ! उन्होंने ही मुझे तुमसे मिलाया है....'

'तब तो बड़ी अच्छी हैं....मगर मुझे जबरदस्ती पकड़ क्यों लाई थीं ..'

'उन्होंने भूल से तुम्हें अपना पति समझ लिया...'

'अच्छी भूल रही ! भूलना ही था तो भाई क्यों नहीं समझ लिया ?...'

'उनके पति कई महीनों से खो गये हैं परदेसी ! चलो, मिल लो उनसे....मांफी भी मांग लो....'

'कहां हैं ?'

'बाहर आँगन में खड़ी हैं...'

तब तक कविता भी आ पहुँची।

अचल ने उनके सामने पहुँच कर हाथ जोड़ भोलेपन से कहा—'मुझे माफ करें सरकार !...आप भूल से मुझे पकड़ लाईं और मैं भूल से आपको बुरा समझ बैठा...दोनों बराबर हो गये....क्यों मैना ..'

'हां ?....'

'तो अब हम लोगों को इजाजत दीजिये सरकार ! हम लोग बहुत दूर चले जायँ कि आप भूल से फिर कभी पकड़ न सकें'—अचल ने कहा।

'यह क्या कह रहे हो ?'—मैना बोली—'हम लोग तो यहीं रहेंगे न ?....'

'मगर....अच्छा ठीक है...यहां आराम भी तो है। कुंवरानी साहिबा की सेवा हम लोग किया करेंगे—मगर हजूर से कह दो कि अब दरवाजे की कुण्डी बाहर से बन्द न किया करें.... मैं भागूंगा नहीं....'

'आप भागेंगे जरूर....' इस बार कविता बोली।

'मैना ! कुँवरानी साहिबा मुझे आप कहती हैं, सुन लो... मेरा नाम परदेसी है हजूर, आप नहीं ...' अचल हँस कर बोला।

तभी हाथ में बोतल लिये आ पहुँचा वारिस।

कविता से बोला—'यह दवा डाक्टर साहब ने भेजी है हजूर ! अभी लेता आ रहा हूं....कुंवर साहिब को इसकी एक खुराक अभी पिला दीजिए...' कहकर वारिस चला गया।

कविता ने बोतल मैना को देकर कहा—'लो इन्हें पिला दो....'

मैना ने गिलास में दवा ढालकर अचल के आगे किया।

'मगर वह तो कुँवर साहब को पिलाने के लिए कह गया है....' बोला अचल !

'उसका मतलब तुम्हीं से था परदेसी ?...' मैना ने कहा।

'अजीब रिवाज है यहां का....जो भी आता है अलग-अलग नामों से मुझे पुकारता है....मेरे कितने नाम है मैना ?....'

'पहले दवा पी लो तो बताऊँ....'

मैना ने गिलास अचल के होठों से लगा दिया ! वह चुपचाप पी गया ! कविता ने सन्तोष की सांस ली।

जो अचल डराने-धमकाने और अनुनय-विनय के बाद भी बिना जबर्दस्ती किये एक घूँट नहीं पीता था, वही मैना के जरा-सा कहने पर पूरी खुराक एक सांस में पी गया।

'चलती हूँ....तुम दोनों यहीं रहोगे। कोई तकलीफ नहीं होने पायेगी....' कविता ने कहा।

वहां से आकर वह पलङ्ग पर लेट गई ! हँसे या रोये कुछ समझ नहीं पा रही थी।

धीरे-धीरे कई दिन बीत गये। मैना तथा कविता की सेवाओं से अचल की हालत सुधरने लगी। डाक्टर नित्य-प्रति देखने आते थे। यद्यपि उसकी यादाश्त लौटने के कुछ भी लक्षण दिखाई नहीं पड़ते थे, फिर भी उसका स्वास्थ्य काफी अच्छा हो चला था। अब वह दवा पीने में हिचकता नहीं। डाक्टर से जांच कराने में डरता नहीं। कविता से भी बोल लेता है अक्सर, मगर बात-बात में उसे हजूर-सरकार कहना नहीं भूलता।

• •

रानी साहिबा अपने कमरे में बेचैनी के साथ टहल रही हैं। बूढ़े पैर क्रोध के आवेश में कांप-कांप कर चल रहे हैं। चेहरा अतिशय गम्भीर है। हाथ की मुट्ठियाँ कस कर बंधी हैं।

दरवाजे पर कुछ खटका हुआ। कविता अन्दर आई। उसके पीछे-पीछे वारिस भी था। रानी साहिबा की गम्भीरता देख कर कविता का माथा ठनका। वारिस भी सन्न रह गया।

आज जरूर कोई घटना घटी है, जो रानी साहिबा को असह्य हो उठी है, तभी तो वे गठिया का दर्द भूलकर कमरे में टहल रही हैं।

'मुझे आपने बुलाया माताजी ?...' साहस कर कविता ने पूछा।

'हां !....और वारिस को भी, जिसके बाप ने राजा साहब के लिए अपनी जान दे दी थी....और जो तुम्हारा वफादार नौकर है। ठीक से खड़े हो जाओ तुम दोनों....अपने को कैद समझो...' रानी साहिबा के स्वर से क्रोध फूट रहा था।

कविता और वारिस चुपचाप खड़े रहे। किसी से बोलते नहीं बना कुछ।

'क्यों रे वारिस ! तूने मेरे साथ इतनी बड़ी दगाबाजी की, क्या तेरा बाप यही वफादारी तुझे सिखा गया था ?....'

'खुदा कसम, मैंने हजूर की शान में कोई गुस्ताखी नहीं की....अनजान में कोई बेअदबी हो गई तो माफी चाहता हूं रानी मां !'

'मैं सब जानती हूं....तेरी सब बदमाशी मुझे मालूम हो चुकी है....मैं तेरी एक-एक बोटी कटवाकर अलग कर दूंगी

छोकरे !....रोज-रोज डाक्टर को बुलाने दौड़ा जाता था...क्या सचमुच बहू की तबीयत खराब थी ?...'

कविता चौंक पड़ी। मगर वारिस उसी स्वर में बोला—'खुदा कसम ! बेहद खराब हजूर !'

'खुदा के बच्चे ! अपना नमक खिला-खिला कर तुझे इतना बड़ा किया, क्या इसीलिए कि तू मुझसे झूठ बोले, मुझे धोखा दे ? और यह कविता तो मुझे देखकर पलङ्ग पर ऐसी पड़ जाती थी जैसे महीनों की बीमार हो...मैं पूछती हूँ, तुझे क्या बीमारी थी बहू ?...'

'सर में दर्द रहता है माताजी !'

'मैं जानती हूँ, तेरे सर दर्द का कारण—' क्रोध से रानी साहिबा बोली—'चुपके-चुपके अपने महल में एक मर्द को छिपा रखना, अपनी बीमारी के बहाने उसकी दवा करना....मुझे तुम लोगों ने अन्धी समझ लिया था...कुल की बहू का अच्छा कर्तव्य निबाहा तूने कविता ?...कब की जान पहचान थी उससे ? बोलती क्यों नहीं ?...'

कविता क्या जबाब दे ?....हतबुद्धि-सी वह खड़ी रह गई। उसकी चुप्पी ने रानी साहिबा का क्रोध और भड़का दिया। वे गरजकर बोलीं—'मुँह में जबान है या नहीं ?....' जवाब क्यों नहीं देती....'

'मुझे क्षमा कीजिये माताजी ! मैं यह भेद अभी नहीं बता सकती।' कविता ने कांपते हुए कहा।

'तब कब बतायेगी ?' टहलती-टहलती रानी साहिबा पलङ्ग पर जा बैठीं।

'समय आने पर आप सब कुछ जान जायँगी माताजी....' बोली कविता।

'तू भी नहीं बताएगा वारिस ?'—इस बार रानी साहिबा का स्वर कुछ धीमा हो गया था।

'खुदा कसम ! मैं कुछ नहीं जानता !...'

'सब कुछ जानता है तू....तुम सब लोग मेरे साथ बगावत करना चाहते हो....एक-एक को फांसी पर लटका दूंगी.... कविता ! इधर आ तो ..' अन्तिम वाक्य कहते-कहते रानी साहिबा का स्वर कोमल हो गया था।

कविता चुपचाप उनके सामने जा खड़ी हुई।

उन्होंने उसका हाथ पकड़कर उसे अपने पास बिठा लिया और उसका सर अपनी छाती से लगाकर बोलीं, प्यार भरे स्वर में—'मुझ पर तेरा विश्वास नहीं है बहू ? ..तू अपना भेद मुझे बताना क्यों नहीं चाहती ?....'

रानी साहिबा के भाव-परिवर्तन से कविता और वारिस चकित हो उठे। उनके दिल की थाह पाना दोनों के लिए असम्भव था।

थोड़ी देर रुककर वे करुण स्वर में बोलीं—'बहू ! अचल की इतनी बड़ी दुश्मन तो मैं नहीं थी कि उसे देख कर डँस लेती—इस बूढ़ी से ऐसी क्या गलती हो गई कि उसके बेटे को तुम लोगों ने अब तक छिपा रखा ?....उसको मुझे दिखाती न, मगर बता तो देती कि मेरा बच्चा सही-सलामत अजगर के पेट से निकल आया है ?...बहू ! तूने मेरी छाती पर लात मार दिया।माँ का बेकस दिल तू नहीं देख सकी....इतनी बड़ी सजा तूने किस अपराध पर दी बहू ? यह वारिस छोटा था तो कितना भला था, मगर जवान होकर साँप बन गया....'

रानी साहिबा की आँखों से आंसू बह चले। बड़ी-बड़ी बूँदें गालों पर उतर कर चमचमा उठीं। उतनी ममता पाकर कविता का कलेजा पानी-पानी हो आंखों से निकल चला।

वारिस दौड़कर रानी साहिबा के पैरों पर गिर पड़ा—'या खुदा ! रानी माँ के आंसू पोंछ दे....हमसे बेहद गलती हुई माँ ! इस नादान वारिस को माफ कर दो....'

एकाएक रानी साहिबा के आँसू रुक गये। चेहरे की करुणा गम्भीरता में परिवर्तित हो गई—'उठो तुम लोग....बहू! तू चन्चल के पास जा....उसका दिमाग खराब हो गया है न!.... ठीक से दवा करना...ललित को भी अपने साथ लेती जा, बगल के कमरे में खेल रहा है। तू कहाँ चल दिया वारिस?...अभी रुका रह तू...'

वारिस रुक गया। कविता चली गई।

'वारिस! जब बदन का फोड़ा पक जाता है तो उसके लिए नश्तर जरूरी है न?...' रानी साहिबा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

'बेशक हजूर! कम्बख्त फोड़े खुदा कसम बगैर नश्तर के अच्छे ही नहीं होते....'

'तो वह नश्तर उठा ला....' एक ओर उँगली से दिखाया रानी साहिबा ने।

'मगर वह तो हण्टर है हजूर!' वारिस आश्चर्यभरी वाणी में बोला।

'उसे लेकर मेरे पीछे-पीछे आ....' कहकर रानी साहिबा उठीं और दरवाजे की ओर बढ़ीं।

हाथ में हण्टर लिए उनके पीछे चलता हुआ वारिस चकित था, आज क्या हो गया है रानी साहिबा को!

उनके पैर जब चन्चल के महल की ओर बढ़े तो वारिस चौकन्ना हुआ, फिर भी उनके पीछे-पीछे बढ़ता गया। दूर से ही देखा उसने, आज चन्चल के महल के चारों ओर बन्दूकधारी पहरेदार घूम रहे थे! दिन को तो ऐसा पहरा पड़ता नहीं....फिर?

रानी साहिबा को आते देखकर पहरेदार अदब के साथ खड़े हो गये। वारिस ने देखा....महल के सदर दरवाजे पर बड़ा-सा ताला लटक रहा था। रानी साहिबा ने ताला खोला अपने हाथ की चाभी से फिर वारिस को अन्दर करके बाहर से

ताला भर दिया और लौटने लगीं।

अपने को कैद देख वारिस चौंककर बोला—'मगर हजूर! कसूर....'

एकाएक रानी साहिबा लौट पड़ीं और ताला खोलती हुई बोलीं—'ओह! मेरा दिमाग खराब हो गया है वारिस....मुझे भी तो अन्दर आना था....'

ताला खोलकर रानी साहिबा भी भीतर प्रविष्ट हुईं और चञ्चल के कमरे की ओर बढ़ीं। वारिस समझ गया कि इस समय उनका मस्तिष्क किसी बात से इतना खराब हो गया है कि वे पागल-सी हो उठी हैं, तभी तो वे उसे बन्द करके लौटी जा रही थीं।

चञ्चल के कमरे में भी ताला लगा हुआ था। देखकर वारिस बहुत विस्मित हुआ। ताला खोलकर रानी साहिबा अन्दर गईं। पीछे-पीछे वारिस भी था, हाथ में हण्टर लिए।

चञ्चल पलंग पर बदहवास-सा लेटा था। रानी साहिबा को देखकर उठा, बोला—'तुमने मुझे कैद किया है माँ ?....'

'हाँ !....' वे बोलीं गम्भीर स्वर में, और जाकर अस्त-ब्यस्त-सी कुर्सी पर बैठ गईं। हांफने लगीं।

'मेरा कसूर ?...' चञ्चल ने पूछा।

'पके फोड़े में नश्तर लगाने आई हूँ चञ्चल। तेरा दखु तेरी जबान बोलेगी....वारिस! कैदी को पचास कोड़े लगा....'

'हजूर !....'

'खबरदार जो मुँह से कोई बात निकाली'—रानी साहिबा गरज कर बोलीं—'शुरू कर !...'

सड़ाक !....वारिस के हाथ का हण्टर चल पड़ा। अपने मालिक के दुश्मन के प्रति उसे तनिक भी दया नहीं थी।

सड़ाक !...चीख उठा चञ्चल। पहलवान हाथों का

वज्र बनकर गिर रहा था।

'और जोर से....' रानी साहिबा ने तड़पकर कहा।

सड़ाक !... सड़ाक !....सड़ाक !....

चञ्चल चीखने लगा—'माँ....मुझे माफ करो....मेरा कसूर बता दो माँ !...'

'वारिस का हण्टर तेरा कसूर बता तो रहा है....यह मत समझ कि तेरी एक भी शैतानी मुझसे छिपी है। मैं सब कुछ जानती हूँ, आज से नहीं बहुत पहले से ही। माँ की ममता बेटे का कसूर देखकर भी नहीं देखना चाहती थी। मेरे प्यार ने मेरा घर उजाड़ दिया ..तू दिन पर दिन बिगड़ता गया....अचल कुँवरानी और ललित ने तेरा क्या बिगाड़ा था !...बोल ?.... वारिस ! अगर हण्टर ढीला हुआ तो तेरी पीठ पर बरसेगा....'

'मुझे छोड़ दो माँ !...मैं माफी माँगता हूँ....' चञ्चल गिड़गिड़ाकर बोला ! वारिस का हण्टर जब-जब पड़ता था, वह दर्द से चीख उठता था।

'माफी माँगना हो तो अचल, कुँवरानी ललित और इस वारिस से माँग....बेहया ! तूने मेरी कोख गन्दी कर दी। यह भूल गया तू कि जो पैदा कर सकती है, वह मार भी सकती और जोर से वारिस ! इसके बदन की एक-एक टुकड़ी खाल अलग होकर गिर पड़े। मैंने चुपचाप समझाने की कोशिश की मगर तेरी चाल बढ़ती ही गई....यह सुनकर कि अचल अजगर के पेट से जिन्दा निकल आया और वह कुँवरानी के महल में पागल बना छिपा है, तूने फिर दूसरी चाल चली। डाक्टर को डरा-धमका कर कहा कि वह अचल को जहर का इञ्जेक्शन दे-दे....डाक्टर को तू इतना नीच समझता है ?....तेरे कारण अचल इतना कष्ट भोग रहा है परन्तु तेरे कसाई दिल को अब भी दया नहीं आई ?....अचल के लिए मैं दिन-रात तड़पती रहती थी, परन्तु मेरे आँसू पोंछने के बदले तू मेरे जिगर में घाव किये जा रहा था ?'

चीखता-चिल्लाता चञ्चल जमीन पर गिर पड़ा—'अब बस करो माँ! अब कभी गलती न होगी....'

'तू माँ के प्यार में पला, अब उसके क्रोध में तड़प-सिसक कर मर....इसे साँप की तरह धुन डाल वारिस! जिन्दा बचा तो सबको डँस लेगा....'

चञ्चल की चीख धीरे-धीरे कम होती गई। वारिस का हण्टर चलता रहा। बेहोश हो गया चञ्चल।

• •

अपने परदेसी को पाकर भी मैना खोई-खोई-सी रहती है। वह समझ गई है कि उसके प्रेम-वृक्ष में तृप्ति के फल नहीं लग सकते। परदेसी पराया-धन है, उस पर मैना का कोई अधिकार नहीं।

फिर भी मैना ने उसे प्यार किया है, नारी का प्यार इतना धुंधला नहीं होता कि उस पर आसानी से कोई और रङ्ग चढ़ जाय। प्यार तृप्ति का माध्यम नहीं हो सकता। प्यार असीम है और तृप्ति सीमित—दोनों की कोई तुलना नहीं।

अबोध मैना को प्यार ने सजग बना दिया है। वह त्याग की परिभाषा जान गई है। आँसुओं को अब वह सँजोकर रखती है, अनमोल मोती समझ कर।

बैठे-बैठे दिल नहीं लग रहा था, सो परदेसी का साथ छोड़ कर वह चहारदीवारी के अन्दर इधर-उधर घूम रही थी। कहाँ उसका छोटा-सा उजाड़ गाँव, जहाँ साँपों की फुत्कार कदम-कदम पर सुनाई पड़ती थी—और कहाँ इस चहारदीवारी के अन्दर बने हुए तीन-तीन महल और हर महल में सम्पदा का अतुल कोष। उसका परदेसी पराया न बन गया होता तो उसके

साथ यहाँ रहकर वह कितनी खुश होती !

मगर दिल के अन्दर पतझर लिए मैना को बाहर की हरियाली कैसे अच्छी लगे ? विचार-सागर में निमग्न मैना दूर निकल आई थी। कुछ आदमियों की बातचीत की आवाज उसके कानों में पड़ी। चौंककर सर उठाया उसने, देखा—वह चहारदीवारी के मुख्य फाटक के पास तक पहुँच गई थी।

एकाएक उसकी दृष्टि फाटक के बाहर खड़े दो भयानक आदमियों पर पड़ी। उसका सारा शरीर भय से सिहर उठा और वह लपक कर आड़ में हो गई। फिर चहारदीवारी से सटे-सटे फाटक के नजदीक बढ़ी, ताकि वह उनकी बातें सुन सके।

उन दोनों की दृष्टि अभी मैना पर नहीं पड़ी थी। वे अचल के महल की ओर इशारा करके कुछ बातें कर रहे थे।

उन दोनों की सूरतें एक-से-एक भयंकर थीं। एक था अजगर की खाल का वस्त्र पहने, हाथ में मणिवाला साँप पकड़े-छोटी पहाड़ी-सा दीर्घाकार टिकोरा, जिसकी भयानकता का डर मैना को हर साँस में समाया हुआ था और दूसरा था काले देव-सा लम्बा-चौड़ा, मैना को टिकोरा के हाथ से छुड़ा लाने वाला जमुना।

दो राक्षसों में इतनी दोस्ती देखकर मैना का शरीर काँपने लगा। हृदय की धड़कनों के तेज स्वर को दोनों हाथों से दबाये निस्तब्ध रह उनकी बातें सुनने लगी।

'मैना भी उसी महल में है ?....' टिकोरा का भयानक स्वर था।

'हाँ....और तुम्हारा दुश्मन परदेसी भी....कुछ करने की हिम्मत है ?....'

'टिकोरा डरता नहीं....इस साँप को देख रहे हो न ?.... इसके मुँह में मनी है, उगल दे तो रात उजली हो जाय...काट ले किसी को तो उल्टी साँस भी न ले सके...अन्तर-मन्तर दवा-

दारू सब बेकार....अभी ही इसे परदेसी पर फेंकता हूं, देखूं उसकी जान कौन बचाता है ?....जानते हो मन्तर से बांधकर मैं इस सांप को छोड़ दूँगा....यह जाकर परदेसी को खोज लेगा, और उसे डँसकर वापस आ जायगा—हा-हा-हा—'

टिकोरा की भीषण हँसी सुनकर छिपी हुई मैना का कलेजा दहल गया ।

'ठीक है'—जमुना कह रहा था—'काम फतह हो गया तो मैना को पा जाओगे और छोटे कुँवर भी तुम्हें काफी ईनाम देंगे ।'

'ईनाम की लालच मत दो मुझे....' इस बार टिकोरा का स्वर बेहद भयानक हो गया था—'मैं टिकोरा हूँ....और टिकोरा ने अब तक अपने दुश्मन को जिन्दा नहीं छोड़ा...तुमने मुझे मैना का पता तो बताया, मगर मैं तुम्हारी बन्दूक के कुन्दे की चोट अब तक नहीं भूला हूँ ।'

'क्या कहते हो तुम टिकोरा ?' उस दुर्दान्त सँपेरे की भाव-भंगी देखकर जमुना भी डर गया था ।

'अगर तुमने उस दिन मैना को मुझसे अलग न किया होता तो मैं अब तक अपने गांव पहुँच कर चैन करता होता, हाथ में सांप पकड़े भूखा-प्यासा मैना की खोज में शहर की खाक न छानता !'

टिकोरा मन ही मन कुछ बुदबुदाने लगा । साथ में निश्चल पड़े हुए साँप ने सजग होकर एक तीव्र फुत्कार छोड़ी ।

डरकर बोला जमुना—'टिकोरा !'

'टिकोरा ने दुश्मन को माफ करना नहीं सीखा....लो....'

विकराल काला सांप जमुना के गले से लिपट गया ।

और दूसरे ही क्षण जमुना का लम्बा-चौड़ा शरीर निश्चल होकर जमीन पर आ गिरा । टिकोरा ने झुककर साँप को पुनः हाथों में ले लिया और भीषण रूप से हँसा ।

छिपी हुई मैना के मुख से एक चीख निकलते-निकलते बची। वह दौड़ पड़ी अचल के महल की ओर!

अचल कमरे में बैठा था चुपचाप। मैना को बेतहाशा भागी आती हुई देखकर उठ खड़ा हुआ!

मैना हाँफ रही थी। आकर उसके सामने खड़ी हो गई—'टिकोरा....साँप...जमुना!....'

'क्या है मैना?...'

'टिकोरा आ पहुँचा है परदेसी!' घबड़ाये हुए स्वर में बोली वह—'उसके हाथ में बापू का मनीवाला साँप है...तुम्हारी खैर नहीं परदेसी! यहाँ से भागना पड़ेगा....उसने यह महल देख लिया है....साँप को मन्तर से बाँधकर तुम्हें काटने के लिए छोड़ेगा....कहता था...'

'तुम्हें भी देख लिया है उसने?....' अचल भी घबड़ा गया था।

'नहीं...मगर जमुना ने उसे सब कुछ बता दिया है....वह टिकोरा हरामी मेरे पीछे पागल हो गया है परदेसी...मुझे न पाकर वह सब कुछ कर डालेगा....मैं उसके पास जाऊँगी....मुझे जाना ही पड़ेगा....तुम्हारी जान की खातिर मैं अपनी कुर्बानी दे दूँगी परदेसी!...'

'नहीं मैना! तुम मुझे छोड़कर कहीं नहीं जा सकती...मैं अपनी जान दे दूँगा....' अचल ने मैना को अपनी बाहों में जकड़ लिया।

'अच्छा ठहरो, मैं कुँवरानी से मिलकर अभी आई...तुम चौकन्ने होकर बैठे रहो....कौन जाने वह हरामी साँप ही छोड़ दे...'

कहकर मैना कविता के कमरे की ओर बढ़ी।

डाक्टर दास कविता के सामने बैठे हुए अचल के विषय में में बातचीत कर रहे थे वारिस भी मौजूद था।

'क्या है मैना ? घबड़ाई हुई क्यों हो ?' कविता ने पूछा।

'गजब होना चाहता है....आप जल्दी कुछ इन्तजाम कीजिये नहीं तो कुँवर साहब की जान खतरे में पड़ जायगी....' मैना थोड़े में सब बातें कविता को समझा दी !

वारिस उठता हुआ बोला—'खुदा कसम ! मैं कुँवर साहिब को दिन-रात कन्धों पर उठाये खड़ा रहूँगा। साँप की मजाल नहीं कि बगैर मुझे काटे उन तक पहुँचे...पहुँचने के पहले ही मैं उसकी गर्दन तोड़ दूँगा....'

मैना की घबराहट ने सबको घबड़ा दिया था। कविता तेजी से उठी। डाक्टर दास भी उठ खड़े हुए। तभी बाहर से अचल की चीख सुनाई पड़ी—'टिकोरा...साँप...'

सब झटपट कमरे से बाहर निकले।

अचल चीखता हुआ तेजी से दौड़ा आ रहा था। और उसके पीछे-पीछे था एक विकराल काला साँप—आँधी की तरह फुफकारता हुआ।

स्वामिभक्त वारिस की भवें तन गईं। वह दौड़ा उस ओर पूरी तेजी के साथ। कविता, मैना और डाक्टर दास वह दृश्य देखकर चित्रलिखित से खड़े रह गये।

लोगों ने देखा वारिस के पहुँचने के पहले ही साँप अचल के पैरों से लिपट गया और....

मैना के मुख से जोरों की चीख निकली। कविता बदहवास-सी हो जमीन पर बैठ गई। डाक्टर दास उस ओर बढ़े जिधर अचल का निश्चल शरीर जमीन पर गिरा हुआ था और वारिस उसे हिला-डुला कर देख रहा था। साँप का कहीं पता न था।

वारिस और डाक्टर ने बेहोश अचल को उठाकर कमरे में पलङ्ग पर ला सुलाया। जहाँ साँप ने काटा था, वहाँ का मांस चीरकर निकाल दिया डाक्टर ने।

चारों ओर हाहाकार मच गया। वारिस छाती पीट रहा

था। कविता आँखों का उजड़ा संसार लिए खड़ी थी। मैना पलङ्ग के पास बैठकर, सांप के जितने मन्त्र उसे मालूम थे, सब आजमा रही थी।

थोड़ी देर में रानी साहिबा आ पहुँची। अचल की दशा देखकर बदहवास-सी कुर्सी पर गिर पड़ीं। बूढ़ी पलकों से जवान बूँदें ढुलक चलीं।

डाक्टर दास कार पर घर चले गये थे दवा लेने। दस मिनट बाद वे भी आ पहुँचे, इन्जेक्शन दिये जाने लगे।

अचल के दाँत बैठ गये थे। चेहरा काला पड़ गया था। मुँह से झाग बह रही थी। मैना के मन्त्र बेकार गये और डाक्टर की दवाएँ भी। मैना दूर जाकर रोने लगी। डाक्टर ने करुण गम्भीरता से सर हिलाया।

'वारिस! यह ताली ले....चंचल को यहीं ला खड़ा कर.... इधर अचल की जान निकलेगी, उधर चंचल की भी....'

लोगों ने देखा, रानी साहिबा के हाथों में एक पिस्तौल थी।

वारिस ताली लेकर चला गया। कमरे में पूर्ण सन्नाटा छा गया। अचल के जीवन से सभी निराश हो उठे।

'कुछ करो डाक्टर!...' रानी साहिबा की आवाज रो रही थी।

'कुछ कर पाता तो उठा न रखता ..' हाथ मलता हुआ बोला डाक्टर।

एकाएक मैना हिली। गम्भीर गति से चलती हुई पलङ्ग के पास खड़ी हुई। गौर से उसने उस स्थान को देखा, जहां सांप ने काटा था और डाक्टर ने मांस चीर कर घाव कर दिया था।

मैना की आँखों में एक चमक दिखाई दी, पुनः मुख पर करुणा छा गई। उसका मुख धीरे-धीरे नीचे झुका और उस जहरीले घाव से जा लगा!

लोग चौंक पड़े, मगर शान्त रहे।

सँपेरे की बेटी साँप का जहर चूस रही थी और लोग आश्चर्य में भरे देख रहे थे।

उसी समय चञ्चल को लिए वारिस आ पहुँचा। यहाँ की घटना वारिस ने उससे बता दी थी। आज उसके मुख पर पश्चात्ताप की छाया झलक रही थी। आँखों में आँसू छलक आये थे।

रानी साहिबा ने सर घुमा कर उसकी ओर देखा फिर हाथ की पिस्तौल ठीक की और तब उस ओर देखने लगीं, जिधर घाव से मुँह लगाये एक त्यागमयी प्रेमिका अपने प्रेमी का जहर चूस रही थी। मैना का शरीर ज्यों-ज्यों काला पड़ने लगा त्यों-त्यों अचल के बेहोश शरीर पर चमक आने लगी। मैना की आखिरी कोशिश बेकार नहीं गई थी।

सब ध्यान से उस ओर देख रहे थे। अब अचल का शरीर रह-रह कर काँप उठता था और मैना निश्चल होती जा रही थी। कविता आगे बढ़ आई थी और ध्यान से अचल की ओर देख रही थी।

एकाएक मैना का शरीर बेहोश होकर जमीन पर लुढक गया। वारिस ने लपक कर उसे सँभाला।

उसी समय अचल का शरीर जोरों से काँपा। उसने कराह कर करवट बदली। आँखें धीरे-धीरे खुल गईं!

कविता का दिल तेजी से धड़कने लगा, अचल की आंखों में पहले जैसा तेज देखकर! उनमें विक्षिप्त मस्तिष्क की छाया न थी। पुतलियां सतर्कता के साथ इधर-उधर देख रही थीं।

या ईश्वर! कविता की साधना क्या सफल होने जा रही है? क्या अचल का विकृत मस्तिष्क अब ठीक हो चला?

तभी अचल की पुतलियाँ थोड़ी देर के लिए उसके चेहरे पर आ रुकीं और मुख से शिथिल स्वर निकला—'कविता मुझे सहारा देकर उठा दो....'

कविता को जैसे दुनिया की सारी निधि मिल गई। वह दौड़ पड़ी। आँखों से बह चलते आँसुओं को सँभाला उसने और धीरे से अचल को उठाकर बिठा दिया।

'वह अजगर कहाँ गया कुँवरानी ! जिसने अभी-अभी मुझे पकड़ लिया था....और तुम इस जङ्गल में कैसे आ पहुँची ?.... अरे, मैं तो महल में हूँ...क्या बात है कविता ?....'

अचल को बरसों पीछे की घटना ताजी लग रही थी।

'सब कुछ सुनोगे बेटा ! ...कहानी बड़ी लम्बी है....' रानी साहिबा ने आगे बढ़कर उसके सर को अपने सीने से लगा लिया।

'माताजी ! मुझे माफ कर दो' बोला अचल—'मेरी असावधानी से मुझे एक अजगर ने पकड़ लिया था, लेकिन बच गया मैं....वारिस कहाँ है ? उसी ने मुझे उस पीपल के नीचे ला खड़ा किया था....'

वारिस मृतप्राय मैना को सँभाले हुए था और डाक्टर दास उसे इन्जेक्शन दे रहे थे। जिस नारी ने उसके मालिक की जान बचाई थी, उसके लिए शक्ति भर प्रयत्न करना उनका कर्तव्य था।

अचल की पुकार सुनते ही वारिस दौड़कर उसके पैरों पर जा गिरा–रो-रो कर बोला—'या खुदा ! जिसे तू जिन्दगी बख्शे, उसे मार सकने की ताकत किसी में नहीं....मेरा कसूर माफ कर दो हजूर ! अल्लाह कसम, मैंने बहुत बड़ी गलती की थी....'

'ओ चंचल ! वहाँ क्यों खड़ा है चुपचाप ?...' अचल ने दूर खड़े हुए चञ्चल को पुकारा—'माताजी ! आपने इसे कुछ कहा-सुना है क्या !

'मैं कैदी हूँ भैया !....' चञ्चल रुआँसा होकर बोला।

'भला-चङ्गा तो खड़ा है, हाथ-पैर भी खुले हैं....यह कैसी कैद है ? माताजी ! इसकी तो कोई गलती नहीं थी....मैं स्वयं ही उठकर अजगर के पास चला गया था....इसे माफ कर

दीजिए...इधर आ चञ्चल !'

चञ्चल दौड़कर अचल के पैरों से लिपट गया, बोला— 'मुझे माफ कर दो भैया ! मैंने बहुत अपराध किये हैं। मेरे कारण तुम्हें बहुत से कष्ट झेलने पड़े...अब कभी ऐसी गलती न होगी...'

अचल हैरान स्वर में बोला—'यह क्या बक रहा है माता-जी ? पागल हो गया है क्या ?...अरे, इसका तो सारा बदन सूजा हुआ है....'

तभी बाहर कुछ शोर-गुल सुनाई पड़ा। हाथ में विकराल सांप पकड़े, अजगर की खाल पहने एक भयानक व्यक्ति ने वहाँ प्रवेश किया।

वह था टिकोरा ! मैना के पीछे पागल वह निर्दयी सँपेरा !

जमीन पर पड़ी हुई मैना पर दृष्टि जाते ही वह दौड़कर वहाँ पहुँचा। मैना को गोद में उठाकर गम्भीर वाणी में बोला– 'मेरी मैना ! जिस बात से मैं डर रहा था, आखिर तूने वही किया...तूने सांप का जहर चूस लिया....'

मैना बेहोश थी। टिकोरा को जवाब न मिला।

वारिस उसकी ओर बढ़ा तो वह चिल्ला उठा –'खबर-दार ? मेरे पास कोई आयेगा तो यह सांप खींच मारूँगा...तुम लोग मेरे दुश्मन हो....मेरी मैना छिन गई मुझसे....मगर मैं टिकोरा हूँ...हार कर भी हारना मैं नहीं जानता...अपनी पूरी ताकत लगा दूँगा !....जय उस्ताद !...'

टिकोरा के भयानक होठ हिलने लगे। जलती आँखें एकटक मैना का मुरझाया मुख देखने लगीं।

'यह कौन है कविता ? बड़ा भयानक आदमी है...और वह लड़की कौन है। क्या हुआ है उसे ?....' अचल ने पूछा। मस्तिष्क ठीक हो जाने पर वह टिकोरा, मैना सबको भूल गया था।

परिस्थिति कविता की समझ में आ गई। उसने संक्षेप में सारी घटनाएं बता दीं। सुनकर अचल को बेहद आश्चर्य हुआ कि अजगर के निगलने की घटना पिछले साल की है और उसने पागलपन की अवस्था में उस लड़की से प्रेम किया था।

उधर टिकोरा के मन्त्र एक के बाद एक असफल होते जा रहे थे। अपनी आंखें खोलकर उस भयानक सँपेरे ने मैना को देखा। बोला—'तुम वापस नहीं लौट सकती मैना ? टिकोरा को हरा दिया तुमने....मैं हार कबूल करता हूं....जाना चाहो तो चली जाओ, मगर एक क्षण के लिए आंखें खोल कर दो बातें कर लो....'

टिकोरा की आंखें पुनः बन्द हो गईं। होंठ बुदबुदाने लगे। दस मिनट के बाद मैना का शरीर जरा-सा हिला। होठों से क्षीण आवाज निकली—'किसने बुलाया मुझे ?....'

'मैं हूं मैना ! तुम्हारा टिकोरा....आंखें खोलो....' टिकोरा की तेज आँखें तीव्र रूप से मैना की बन्द पलकों पर पड़ रही थीं !

कुछ देर बाद मैना की पलकें हिली और धीरे-धीरे खुल चलीं, जैसे कोई अदृश्य शक्ति बलपूर्वक उसकी आंखें खुलवा रही हो।

उसके मुख से पुनः वही बेहोशी भरा स्वर निकला—'क्या है टिकोरा ?....क्यों बुलाया मुझे ?'

'जा तो रही हो मैना !...' भयानक टिकोरा रो पड़ा—'मगर सुन लो, तुम्हारे पीछे टिकोरा की एक-एक सांस गाँव की पहाड़ियों पर भटका करेगी....जाते-जाते मुझे माफ करती जाओ मैना !...'

'माफ किया....परदेसो कहां है ?'

'देखोगी उसे....' उसके अवश शरीर को हाथों पर लिए हुए टिकोरा अचल के सामने आ खड़ा हुआ—'देख लो मैना ! अपने परदेसी को....'

मैना की विह्वल निगाहें परदेसी की ओर उठीं, फिर बन्द हो गईं। मुँह से उखड़ा हुआ स्वर फूटा—'परदेसी....तुमको.... मैंने...अपनी....जान....दी है....भूलना....नहीं...याद....करते.... रहना....मैं...चली....'

और मैना का सर एक ओर को लटक गया।

'परदेसी बाबू!' टिकोरा बोला—'आज तुम्हारे दरवाजे से हार लेकर जा रहा हूँ....मैना मेरी है, तुम इसे नहीं पा सकते.... खबरदार, कोई पास आयेगा तो यह साँप फेंक मारूँगा....हा-हा-हा!....'

भीषण अट्टहास करता हुआ टिकोरा मैना की लाश को हाथ पर रखे, कमरे से बाहर निकल गया।

धीमी गति से वह सदर फाटक की ओर बढ़ रहा था। लोग दूर से उस भयानक सँपेरे की गम्भीर चाल देख रहे थे। बहती हुई हवा मैना से टकरा कर सर झुकाये अगल हटी जा रही थी। त्याग की वह प्रतिमा अपनी पीड़ा का इतिहास लिए चुपचाप सो रही थी।

सड़क पर से किसी की दर्दनाक आवाज आ रही थी—

"मत करियो रे कोई परदेसी से प्रीत,
कोई बेदरदी से प्रीत...."



—बस—